घटती घटना

सत्य के साथ...जनहित में बात...

www.ghatatighatana.com अम्बिकापुर,वर्ष 22, अंक - 210- सोमवार 01 - जून 2026,पृष्ठ - 8 मूल्य 2 रूपये RNI Reg.No.- CHHHIN/2004/15050,डाक पंजीयन. क्रं. 13/Surguja DN/ 2026-2028

देश के तीसरे सीडीएस जनरल एनएस राजा सुब्रमणि ने कार्यभार संभाला

सशस्त्र बलों में बदलाव के लिए संगठनात्मक सुधार पर मुख्य फोकस होगा : एनएस राजा

नई दिल्ली,31 मई 2026। देश के तीसरे चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ (सीडीएस) के तौर पर जनरल एनएस राजा सुब्रमणि ने रविवार को कार्यभार संभाल लिया। उन्हें साउथ ब्लॉक लॉन्स में गार्ड ऑफ ऑनर दिया गया। नए सीडीएस ने नेशनल वॉर मेमोरियल पर पुष्पचक्र अर्पित किया। उन्होंने कहा कि सशस्त्र बलों में बदलाव के लिए संगठनात्मक सुधार पर मुख्य फोकस होगा। आत्मनिर्भरता हमारी राष्ट्रीय सुरक्षा केंद्रीय स्तंभ है। हम अपने सशस्त्र बलों के लिए स्वदेशी हथियारों का विकास करके उन्हें सेवा में तेजी से शामिल करेंगे। सीडीएस जनरल एनएस राजा सुब्रमणि ने कहा...चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ का चार्ज संभालकर मैं सम्मानित महसूस कर रहा हूं। आर्म्डफोर्सेज पर दिखाए गए भरोसे के लिए हम देश के आभारी हैं। सोच और काम में इनोवेशन हमारी काबिलियत को बढ़ाएगा। मिलिट्री, इंडस्ट्री, एकेडेमिया, स्टार्टअप्स और रिसर्च इकोसिस्टम के बीच ज्यादा सहयोग मॉडर्नाइजेशन के लिए मुख्य वजह होगा। हमारे सशस्त्र बलों ने हमारे देश के हितों की रक्षा करने में लगातार व्यावसायिकता और परिचालन फैसले लेने की क्षमता दिखाई है। हम अपने देश की संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता की रक्षा करने के लिए प्रतिबद्ध हैं।''उन्होंने पूर्व सीडीएस जनरल बिपिन रावत और जनरल अनिल चौहान का इस सफर में उनके शानदार नेतृत्व और योगदान के लिए दिल से शुक्रिया अदा करते हुए कहा, ''हम अपने सैनिकों, नाविकों और एयर वॉरियर्स के साहस और व्यावसायिकता को मानते हैं। उनकी ट्रेनिंग और भलाई हमारी सबसे पहली प्राथमिकता होगी। हम उम्मीद करते हैं कि हम अपने उन बहादुरों को श्रद्धांजलि देंगे, जिनकी बहादुरी, बलिदान और देश के प्रति समर्पण हमें प्रेरणा देता रहता है। हम अपने वेटरन्स और वीर नारियों की भलाई के लिए प्रतिबद्ध हैं। उन्होंने भारत के नागरिकों को भरोसा दिलाया कि सशस्त्र बल समर्पण, साहस, सम्मान और व्यावसायिकता के साथ देश की सेवा करते रहेंगे।'' केंद्र सरकार ने 1 जनवरी, 2020 को तीनों सेनाओं के बीच बेहतर तालमेल बनाने के लिए चीफ ऑफ आर्मी स्टाफ (सीडीएस) का पद सृजित किया था। इसके बाद जनरल बिपिन रावत भारत के पहले सीडीएस बने। उनका कार्यकाल 1 जनवरी, 2020 से 8 दिसंबर, 2021 तक रहा था। केरल के कन्नूर में 8 दिसंबर को एक दुर्भाग्यपूर्ण विमान हादसे में जनरल बिपिन रावत का निधन हो गया । इसके बाद 9 दिसंबर, 2021 से 29 सितंबर 2022 तक यह पद रिक्त रहा। फिर जनरल अनिल चौहान (सेवानिवृत्त) को दूसरे सीडीएस के रूप में 30 सितंबर, 2022 को नियुक्त किया गया। उनका कार्यकाल 30 मई को समाप्त हो गया, जिसके बाद अब तीसरे सीडीएस के रूप में लेफ्टिनेंट जनरल एनएस राजा सुब्रमणि (सेवानिवृत्त) को यह अहम जिम्मेदारी दी गई है। अब उनके हाथों में तीनों सेनाओं की कमान होगी।

देश के 27 वें नौसेना प्रमुख एडमिरल

कृष्णा स्वामीनाथन ने कार्यभार संभाला

ऑपरेशनल तैयारी और लड़ाई में असरदार होने का सबसे ऊंचा स्तर बनाने का आह्वान

नई दिल्ली,31 मई 2026। देश के 27वें नौसेना प्रमुख के तौर पर एडमिरल कृष्णा स्वामीनाथन ने रविवार को कार्यभार संभाल लिया। उन्होंने कहा कि वे अपनी जिन्दगी का हर दिन नौसेना को बेहतर, मजबूत,तेज और ज्यादा असरदार बनाने में लगाएंगे, ताकि यह राष्ट्रीय सुरक्षा, राष्ट्रीय विकास के हितों की सेवा कर सके। उनकी सबसे बड़ी प्राथमिकता होगी कि भारतीय नौसेना ऑपरेशनल तैयारी और लड़ाई में असरदार होने का सबसे ऊंचा लेवल बनाए रखे, ताकि वह देश की सुरक्षा और आर्थिक हितों की रक्षा कर सके। उन्होंने नेशनल वॉर मेमोरियल पर पुष्पांजलि अर्पित की और उन्हें साउथ ब्लॉक लॉन्स में गार्ड ऑफ ऑनर दिया गया। एडमिरल कृष्णा स्वामीनाथन ने कहा कि भारतीय नौसेना संयुक्तता, आत्मनिर्भरता और स्वदेशीकरण के लिए पूरी तरह से प्रतिबद्ध है, जिस पर मेरा मुख्य फोकस होगा। भारतीय नौसेना को दुनिया में सबसे बेहतरीन प्रोफेशनल माना जाता है इसलिए सभी कर्मचारियों की भलाई, व्यावसायिक प्रदर्शन और व्यक्तिगत विकास मेरे लिए सबसे ज्यादा महत्व रखेंगे।' उन्होंने निवर्तमान नौसेना प्रमुख एडमिरल दिनेश त्रिपाठी के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि देश के लिए उनकी बहुत सराहनीय और शानदार सर्विस रही है और वे बहुत ही प्रभावी सीएनएस रहे हैं। उन्होंने अपने नेतृत्व में हर मोड़ पर नौसेना को अपने गाइडेंस और विजन का फायदा दिया है। एडमिरल कृष्णा स्वामीनाथन ने भावुक होकर कहा कि मैं आज 27 वें चीफ ऑफ नेवल स्टाफ के तौर पर बहुत विनम्रता, जिम्मेदारी, गर्व और आभार के साथ कमान संभाल रहा हूं। मैं नौसेना और देश की सेवा करने का यह मौका पाकर बहुत आभारी हूं। भारतीय नौसेना देश के हितों की रक्षा के लिए सतर्क रहती है और एक ऐसे क्षेत्रीय सुरक्षा माहौल में बहुत सक्रिय रूप से तैनात है, जो अभी भी चुनौतीपूर्ण, जटिल, अप्रत्याशित और अनिश्चित बना हुआ है। भारतीय नौसेना अपनी क्षमता बढ़ाने और स्वदेशीकरण के रास्ते पर अच्छी तरह से आगे बढ़ रही है। मेरी कोशिश होगी कि नौसेना की ग्रोथ की रफ्तार को बनाए रखा जाए और उभरती हुई तकनीक को शामिल करके हमारी ऑपरेशनल क्षमताओं को बेहतर बनाया जाए।' सेवानिवृत्त हुए चीफ ऑफ द नेवल स्टाफ एडमिरल दिनेश के त्रिपाठी ने इस मौके पर कहा कि पिछले कुछ सालों में जब भी देश ने पुकारा तो नौसेना ने उसे पूरा किया।

टीएमसी सांसद अभिषेक बनर्जी पर हमले में 5 गिरफ्तार...ममता बोलीं... हेलमेट नहीं होता तो जान चली जाती

कोलकाता,31 मई 2026। पश्चिम बंगाल में टीएमसी सांसद अभिषेक बनर्जी पर हुए हमले में पुलिस ने 5 आरोपियों को गिरफ्तार किया है। ये गिरफ्तारी वीडियो फुटेज के आधार पर रातभर चली छापेमारी के बाद हुई। ममता बनर्जी ने हमले को साजिश बताते हुए कहा कि अगर अभिषेक ने हेलमेट नहीं पहना होता तो उनकी जान जा सकती थी। उन्होंने आरोप लगाया कि अस्पताल में भर्ती अभिषेक को जल्द डिस्चार्ज कराने के लिए भाजपा नेताओं और पुलिस ने दबाव बनाया। अभिषेक पर शनिवार को दक्षिण सोनारपुर में हमला हुआ था, जहां वे चुनाव बाद हिंसा के पीड़ित कार्यकर्ताओं से मिलने गए थे। हमले के बाद अभिषेक को पहले अपोलो अस्पताल ले जाया गया। ममता भी उनसे मिलने पहुंचीं थी। अपोलो में डॉक्टरों ने अभिषेक को घर पर आराम की सलाह दी। बाद में उन्हें बेले व्यू अस्पताल ले जाया गया। अभिषेक से मिलने के बाद ममता बनर्जी ने शनिवार रात प्रेस कॉन्फ्रेंस की। भाजपा नेताओं और दक्षिण कोलकाता के डीसीपी की ओर से डॉक्टरों और अस्पताल प्रबंधन को धमकी भरे फोन आ रहे थे।

बकरीद के दिन कुर्बानी के समय सूर्या की हत्या करने का मुख्य आरोपित असद मुठभेड़ में ढेर

गाजियाबाद,31 मई 2026। उत्तर प्रदेश के गाजियाबाद में खोड़ा कॉलोनी इलाके में बकरीद के दिन एक छात्र की हत्या के मामले में फरार मुख्य आरोपित को पुलिस ने रविवार सुबह एक मुठभेड़ में मार गिराया। हत्या के मामले में इस आरोपित पर गाजियाबाद पुलिस ने 50 हजार रुपये का इनाम घोषित किया गया था। इस मुठभेड़ के दौरान एक पुलिस कॉन्स्टेबल भी गोली लगने से घायल हुआ है। जिसे अस्पताल में भर्ती कराया गया है। पुलिस उपायुक्त धवल जायसवाल ने आज बताया कि 28 मई को असद और और उसके साथियों ने 11वीं कक्षा के छात्र सूर्या चौहान (17 वर्ष) की चाकू मारकर हत्या कर दी थी। मृतक के परिवार की शिकायत के आधार पर पुलिस ने खोड़ा थाने में हत्या सहित संबंधित धाराओं में पांच लोगों के खिलाफ मामला दर्ज किया है। पुलिस ने इस मामले में शनिवार को तीन आरोपितों को गिरफ्तार कर लिया था, जबकि मुख्य आरोपित असद फरार चल रहा था। उन्होंने बताया कि पुलिस ने उस पर 50 हजार रुपये का इनाम घोषित किया था। पुलिस को आज सुबह सूचना मिली कि असद खोड़ा पुलिस थाना क्षेत्र में अपने कुछ दोस्तों से मिलने जा रहा है और उनसे कुछ पैसे लेकर भागने की योजना बना रहा है। इस सूचना के आधार पर पुलिस ने जगह-जगह बैरियर लगाकर पूरे इलाके में सघन तलाश शुरू कर दी। इसी बीच असद और उसका एक दोस्त बाइक पर आते हुए दिखाई दिए। पुलिसकर्मियों ने जब उन्हें रोकने का प्रयास किया तो उन्होंने रुकने के बजाय पुलिसकर्मियों पर गोली चला दी। उसकी गोली एक कांस्टेबल को लगी। इसके बाद पुलिस ने भी आत्मरक्षा में जवाबी फायरिंग की। पुलिस की एक गोली असद को लगी और वह घायल हो गया। पुलिस ने असद को पकड़ कर अस्पताल ले गई और वहां उपचार के दौरान उसकी मौत हो गई।

अभिषेक बनर्जी के बाद अब टीएमसी सांसद कल्याण बनर्जी पर हमला...सिर फूटा

नई दिल्ली,31 मई 2026। पश्चिम बंगाल के हुगली जिले में तृणमूल कांग्रेस सांसद कल्याण बनर्जी पर कथित हमले का मामला सामने आया है। वह टीएमसी कार्यकर्ताओं की रिहाई की मांग को लेकर चंडीतला पुलिस स्टेशन में ज्ञापन देने पहुंचे थे। इसी दौरान कुछ लोगों ने उनका विरोध करते हुए काले झंडे दिखाए और उनके खिलाफ नारेबाजी की। हंगामे के बीच उनके सिर में चोट लगने का दावा किया गया है। घटना के बाद कल्याण बनर्जी अपने समर्थकों के साथ धरने पर बैठ गए। प्रदर्शनकारियों ने उनके खिलाफ 'चोर-चोर' के नारे लगाए। सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और स्थिति को नियंत्रित किया। मामले की जांच की जा रही है। इससे पहले टीएमसी महासचिव और सांसद अभिषेक बनर्जी भी हमले का शिकार हुए थे। वह दक्षिण 24 परगना के सोनारपुर में चुनाव बाद हिंसा के पीड़ितों से मिलने पहुंचे थे। वहां उनके साथ धक्का-मुक्की हुई, कपड़े फाड़े गए और उन पर अंडे फेंके गए। पुलिस ने इस मामले में पांच लोगों को गिरफ्तार किया है। टीएमसी प्रमुख ममता बनर्जी ने दोनों घटनाओं को गंभीर बताते हुए भाजपा पर आरोप लगाए हैं।

प्रधानमंत्री मोदी ने 'मन की बात' के 134वें एपिसोड की शुरुआत खेल उपलब्धियों से की

प्रधानमंत्री ने की भारतीय एथलीटों,सांस्कृतिक धरोहर और पर्यावरण संरक्षण की सराहना...

नई दिल्ली,31 मई 2026। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने रविवार को 'मन की बात' कार्यक्रम में खेल क्षेत्र में युवाओं के शानदार प्रदर्शन, प्राचीन सांस्कृतिक संपदा की वापसी, ग्रीष्मकालीन आम की विविधता, पारंपरिक देसी पेय पदार्थों, युवाओं में खगोल विज्ञान के प्रति बढ़ते उत्साह, सैनिक कल्याण में नागरिकों के योगदान, नदियों की सफाई और वन्यजीव संरक्षण जैसे अनेक प्रेरक विषयों पर विस्तार से चर्चा की। प्रधानमंत्री मोदी ने इन मुद्दों के माध्यम से राष्ट्र निर्माण, सांस्कृतिक गौरव और सामूहिक प्रयासों की भावना को भी सराहा। प्रधानमंत्री मोदी ने लोकप्रिय मासिक रेडियो कार्यक्रम 'मन की बात' के 134वें एपिसोड की शुरुआत खेल उपलब्धियों से की। प्रधानमंत्री मोदी ने झारखंड की राजधानी रांची में हाल ही में आयोजित नेशनल सीनियर एथलेटिक्स फेडरेशन प्रतियोगिता का जिक्र किया। प्रधानमंत्री ने कहा कि इस प्रतियोगिता में देशभर से करीब 800 एथलीटों ने भाग लिया और चार अलग-अलग स्पर्धाओं में नए राष्ट्रीय रिकॉर्ड स्थापित किए। प्रधानमंत्री ने गुरिंदरवीर सिंह, विशाल टीके, तेजस्विन शंकर, देव मीणा और कुलदीप कुमार जैसे खिलाड़ियों के उत्कृष्ट प्रदर्शन की विशेष सराहना की। प्रधानमंत्री ने कहा कि 100 मीटर दौड़ की स्पर्धा में महज दो दिनों के भीतर पुरुष वर्ग में यह राष्ट्रीय रिकॉर्ड तीन बार टूटा, जो एक अभूतपूर्व उपलब्धि है। गुरिंदरवीर सिंह और अनिमेष कुजूर ने यह रिकॉर्ड तोड़ा। उन्होंने कहा कि पूरे देश में इस प्रदर्शन की चर्चा हो रही है और ऐसी सफलताएं न केवल खिलाड़ियों को बल्कि आने वाली पीढ़ी को भी खेल के प्रति प्रेरित कर रही हैं। उनकी मेहनत और समर्पण भारत के खेल भविष्य को उज्ज्वल बना रहा है। कार्यक्रम के दौरान प्रधानमंत्री ने दोनों एथलीटों से बातचीत भी की। प्रधानमंत्री ने कार्यक्रम में अपनी हालिया यूरोपीय यात्रा का जिक्र करते हुए कहा कि नीदरलैंड्स में एक विशेष समारोह में चोल काल की प्राचीन ताम्र पट्टिकाएं भारत को वापस लौटाई गईं। इस ऐतिहासिक कार्यक्रम में नीदरलैंड्स के प्रधानमंत्री भी मौजूद थे। इनमें 21 बड़ी और तीन छोटी ताम्र पट्टिकाएं शामिल हैं, जो मुख्य रूप से राजा राजेंद्र चोल प्रथम द्वारा अपने पिता राजराजा चोल के एक वचन को पूरा करने से संबंधित हैं। इन पट्टिकाओं में आनइमंगलम गांव को बौद्ध विहार को दिए गए दान का उल्लेख है। प्रधानमंत्री ने कहा कि इन ताम्र पट्टिकाओं से चोल वंश की विशाल समुद्री शक्ति, दक्षिण-पूर्व एशिया के विभिन्न देशों के साथ उनके मजबूत व्यापारिक एवं सांस्कृतिक संबंध तथा साम्राज्य की समृद्ध विरासत की जानकारी मिलती है। इस घटना से देशभर में गर्व की लहर दौड़ गई है और खासकर तमिल समुदाय में विशेष उत्साह देखा जा रहा है। देश-विदेश से लगातार संदेश आ रहे हैं, जो भारत की सांस्कृतिक धरोहर के प्रति लोगों की गहरी लगाव को दर्शाते हैं। प्रधानमंत्री ने आम को हर भारतीय घर की पहचान बताते हुए विभिन्न राज्यों की प्रसिद्ध आम किस्मों का विस्तृत जिक्र किया। उन्होंने महाराष्ट्र और कोंकण के हापुस व अलफांसो, गुजरात के केसर, उत्तर प्रदेश के दशहरी और काशी के लंगड़ा, बिहार के जर्दालू, चौसा और मालदा, दक्षिण भारत के बंगनपल्ली, तोतापुरी, नीलम, मलगोवा, बंगाल के हिमसागर तथा ओडिशा-आंध्र प्रदेश के सुवर्णरेखा का उल्लेख किया।

उन्होंने कहा कि जगह-जगह आम का स्वाद, रंग और खुशबू बदल जाती है, लेकिन यह हमेशा गर्मियों की खुशियां लेकर आता है। आम उत्पादक किसान भाई-बहनें न केवल देश की कृषि अर्थव्यवस्था को मजबूत बना रहे हैं बल्कि वैश्विक बाजार तक भारतीय आम की पहुंच बढ़ा रहे हैं। प्रधानमंत्री मोदी ने किसानों को प्रोत्साहित किया कि वे इसी उत्साह के साथ आगे बढ़ें। प्रधानमंत्री ने गर्मी की बढ़ती तीव्रता में देशवासियों से सावधानी बरतने की अपील की। उन्होंने कहा कि तेज धूप और लू में लोग ज्यादा पानी पिएं, धूप से बचाव करें और स्वास्थ्य विभाग द्वारा जारी गाइडलाइंस का पालन करें। प्रधानमंत्री मोदी ने उत्तर भारत में आम पन्ना, पंजाब-हरियाणा में ठंडी लस्सी, राजस्थान-गुजरात में छाछ, बिहार-झारखंड में सत्तू का शरबत, कोंकण-गोवा में कोकम शरबत और सोल कढ़ी तथा दक्षिण भारत में पानकम, नीर मोर, सम्बारम और ओडिशा में बेल पना जैसे पेयों का भी जिक्र करते हुए इन पेयों को 'एक भारत-श्रेष्ठ भारत' की भावना का जीवंत उदाहरण बताया।

समाचार और विचार में स्पष्ट अंतर जरूरी : उपराष्ट्रपति

केरल,31 मई 2026। उपराष्ट्रपति सीपी राधाकृष्णन ने केरल में दीपिका मलयालम दैनिक के स्थापना दिवस कार्यक्रम में पत्रकारिता में समाचार और विचार के बीच स्पष्ट अंतर बनाए रखने की आवश्यकता को बताते हुए कहा कि संपादकीय विचार व्यक्त करने का स्थान है, जबकि समाचारों को तथ्यपरक और निष्पक्ष रहना चाहिए। उपराष्ट्रपति ने रविवार को केरल के कोट्टायम में दीपिका मलयालम दैनिक के 140वें स्थापना दिवस समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में भाग लिया और इस अवसर पर दीपिका एक्सीलेंस अवॉर्ड्स प्रदान किए। उपराष्ट्रपति ने दीपिका के 140 वर्षों के सफर को समर्पण, साहस, विश्वसनीयता और जनसेवा की उल्लेखनीय विरासत बताया। उन्होंने कहा कि 19वीं सदी में सीमित संसाधनों के बावजूद एक समाचार पत्र की शुरुआत अत्यंत चुनौतीपूर्ण और साहसिक कार्य था। उन्होंने कहा कि पत्रकारिता का धर्म है अच्छे कार्यों की सराहना करना और गलत कार्यों की निष्पक्ष आलोचना करना। रचनात्मक पत्रकारिता समाज को प्रेरित करती है और राष्ट्र निर्माण को मजबूती प्रदान करती है। उन्होंने कहा कि समाचार पत्रों की जिम्मेदारी केवल घटनाओं की रिपोर्टिंग तक सीमित नहीं है।

पश्चिम बंगाल में आज होगा मंत्रिमंडल विस्तार,35 नए मंत्री लेंगे शपथ...

कोलकाता,31 मई 2026। पश्चिम बंगाल में भारतीय जनता पार्टी सरकार के पूर्ण मंत्रिमंडल का गठन सोमवार को होने जा रहा है। मुख्यमंत्री शुभेंदु अधिकारी ने रविवार को इसकी घोषणा करते हुए बताया कि मंत्रिमंडल विस्तार के तहत 35 नए मंत्री शपथ ग्रहण करेंगे। मुख्यमंत्री ने सोशल मीडिया प्लेटफार्म एक्स पर जारी संदेश में कहा कि पश्चिम बंगाल की जनता के जनादेश से बनी सरकार का पूर्ण मंत्रिमंडल सोमवार को आकार लेगा। उन्होंने बताया कि सुबह 11 बजे लोक भवन में आयोजित समारोह में 35 मंत्री पद एवं गोपनीयता की शपथ लेंगे। राज्यपाल आरएन रवि उन्हें शपथ दिलाएंगे। गौरतलब है कि, चार मई को हुए सत्ता परिवर्तन के बाद पहली बार राज्य में भाजपा की सरकार बनी थी। इसके बाद 9 मई को ब्रिगेड परेड ग्राउंड में आयोजित समारोह में मुख्यमंत्री शुभेंदु अधिकारी ने पद की शपथ ली थी। उनके साथ पांच अन्य मंत्रियों दिलीप घोष, अग्निमित्रा पॉल, अशोक कीर्तनिया, निसिथ प्रमाणिक, क्षुदीराम टुडू ने भी शपथ ग्रहण किया था। तभी से मंत्रिमंडल विस्तार को लेकर राजनीतिक और प्रशासनिक हलकों में चर्चा जारी थी। सूत्रों के अनुसार, हाल ही में मुख्यमंत्री शुभेंदु अधिकारी और भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष शमिक भट्टाचार्य ने नई दिल्ली में पार्टी के शीर्ष नेतृत्व के साथ अलग-अलग बैठकें की थीं। इसके बाद मंत्रिमंडल विस्तार की अटकलें तेज हो गई थीं। अब जून के पहले दिन इस प्रक्रिया को अंतिम रूप दिया जा रहा है। वर्तमान में मुख्यमंत्री सहित राज्य मंत्रिमंडल में छह सदस्य हैं। सोमवार को 35 नए मंत्रियों के शामिल होने के बाद मंत्रिमंडल की कुल संख्या 41 हो जाएगी।

मूल्यांकन प्रणाली पर चिंताओं के बीच साइबर सुरक्षा टीमें ऑनमार्क पोर्टल को कर रहीं मजबूत : सीबीएसई

नई दिल्ली,31 मई 2026। सेंट्रल बोर्ड ऑफ सेकेंडरी एजुकेशन ने रविवार को कहा कि वह एग्जाम सर्विस के लिए इस्तेमाल होने वाले ऑनमार्क पोर्टल में कमियों पर नजर रख रहा है और उन्हें ठीक कर रहा है। सरकारी एजेंसियों और आईआईटी के साइबर सिक्योरिटी एक्सपर्ट अब सिस्टम को मजबूत कर रहे हैं। सीबीएसई का यह बयान 12वीं कक्षा के मूल्यांकन के लिए नए लागू किए गए ऑनस्क्रीन मार्किंग सिस्टम की बढ़ती जांच के बीच आया है, जिसकी तकनीकी दिक्कतों और असेसमेंट प्रोसेस से जुड़ी चिंताओं की रिपोर्ट के बाद आलोचना हुई है। खबर है कि बड़ी संख्या में छात्रों ने अपने स्कोर में अचानक बदलाव देखने के बाद अपनी मूल्यांकन की हुई।

भारत-ऑस्ट्रेलिया के रक्षा मंत्री 1 जून को नई दिल्ली में करेंगे 'डिफेंस मिनिस्टर्स डायलॉग'

नई दिल्ली,31 मई 2026। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह 01 जून को नई दिल्ली में अपने समकक्ष और ऑस्ट्रेलिया के उप प्रधानमंत्री रिचर्ड मार्लेस के साथ इंडिया-ऑस्ट्रेलिया डिफेंस मिनिस्टर्स डायलॉग की सह-अध्यक्षता करेंगे। इस डायलॉग में द्विपक्षीय रक्षा सहयोग में हुई प्रगति का आकलन किया जाएगा और आपसे सहयोग के नए रास्ते खोजे जाएंगे। चर्चा में रक्षा और सुरक्षा सहयोग को मजबूत करने, सैन्य अंतर संचालनीयता बढ़ाने, उद्योग सहयोग और आपसी फायदे के क्षेत्रीय और वैश्विक सुरक्षा विकास पर ध्यान केंद्रित किया जायेगा। इस बैठक से द्विपक्षीय रक्षा संबंधों और मजबूत होने, सामरिक भरोसा और सहयोग बढ़ने, हिंद-प्रशांत क्षेत्र में स्थिरता और सुरक्षा को बढ़ावा देने के नए क्षेत्र की पहचान होने की उम्मीद है। रिचर्ड मार्लेस का यह दौरा अक्टूबर, 2025 में ऑस्ट्रेलिया में हुई पहली डायलॉग के बाद हो रहा है और यह इंडिया-ऑस्ट्रेलिया व्यापक रणनीतिक साझेदारी में बढ़ती रफ्तार को दिखाता है। ऑस्ट्रेलिया, भारत के खुले, सबको साथ लेकर चलने वाले और खुशहाल इंडो-पैसिफिक के विजन में एक अहम साझेदार है। यह दौरा भारत-ऑस्ट्रेलिया डिफेंस पार्टनरशिप की बढ़ती गहराई और मजबूती को दिखाता है।

मप्र के शहडोल में तीन बेटियों के साथ मां ने खाया कीटनाशक,चारों की मौत

शहडोल,31 मई 2026। मध्य प्रदेश के शहडोल जिले के पपौंध थाना क्षेत्र के हिरवाह गांव में रविवार को एक महिला और उसकी तीन मासूम बेटियों की कीटनाशक सेवन के बाद मौत हो गई। घटना के बाद पूरे गांव में शोक और सन्नाटा पसरा हुआ है। पुलिस मामले की हर पहलू से जांच कर रही है। मृतकों की पहचान अनिता सिंह (32), रितिका (7), कृष्णकुमारी (4) और अर्पिता (2) के रूप में हुई है। बताया जा रहा है कि घटना के समय घर में मां और तीनों बेटियां ही मौजूद थीं। अनिता का पति, जो पेशे से ड्राइवर है, रोजगार के सिलसिले में बाहर गया हुआ था। रविवार सुबह महिला ने अपनी तीन बेटियों को कीटनाशक खिला दिया, फिर खुद भी निगल लिया। इससे चारों की तबीयत बिगड़ गई। बड़ी बेटी ने घर से बाहर आकर पड़ोसियों को पुकारा और सारी बात बताई।

चार राज्यों में एसआईआर शुरू...3.68 करोड़ से अधिक मतदाता होंगे शामिल

नई दिल्ली,31 मई 2026। चुनाव आयोग ने ओडिशा, मिजोरम, सिक्किम और मणिपुर में विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) के तीसरे चरण के तहत मतदाताओं का सर्वेक्षण और सत्यापन प्रक्रिया शुरू कर दी है। इस चरण में 3.68 करोड़ से अधिक मतदाताओं का सत्यापन किया जाएगा। आयोग ने कहा कि पात्र लोगों को मतदाता सूची में शामिल करने और अपात्र व्यक्तियों को बाहर रखने के उद्देश्य से यह प्रक्रिया शुरू की गई है। चुनाव आयोग ने बताया कि संविधान के अनुच्छेद 324 और जनप्रतिनिधित्व अधिनियम, 1950 की धारा 21 के तहत 14 मई 2026 को 16 राज्यों और तीन केंद्र शासित प्रदेशों में विशेष गहन पुनरीक्षण का आदेश जारी किया गया था। इसके तहत ओडिशा, मिजोरम, सिक्किम और मणिपुर में 30 मई से मतदाताओं का सर्वेक्षण और सत्यापन चरण शुरू हो गया है। जिन मतदाताओं के प्रगणना फॉर्म 28 जून तक निर्वाचक पंजीकरण अधिकारी (ईआरओ) को प्राप्त हो जाएंगे, उनके नाम प्रारूप मतदाता सूची में शामिल किए जाएंगे। आयोग के अनुसार, बूथ स्तर अधिकारी (बीएलओ) घर-घर जाकर मौजूदा मतदाताओं को प्रगणना फॉर्म उपलब्ध कराएंगे। मतदाता भरे हुए फॉर्म बीएलओ के माध्यम से अथवा ऑनलाइन जमा कर सकेंगे। जो मतदाता निर्धारित समय तक फॉर्म जमा नहीं कर पाएंगे, वे दावे और आपत्तियों की अवधि के दौरान घोषणा पत्र के साथ फॉर्म-6 भरकर आवेदन कर सकेंगे। नए मतदाताओं के पंजीकरण को आसान बनाने के लिए बीएलओ अपने साथ फॉर्म-6 और घोषणा पत्र भी रखेंगे। आयोग ने मान्यता प्राप्त राजनीतिक दलों के बूथ स्तर एजेंटों (बीएलए) को भी अधिक सक्रिय भूमिका देते हुए प्रतिदिन 50 तक फॉर्म एकत्र कर बीएलओ को सौंपने की अनुमति दी है।

संपादकीय

नासूर बना गतिरोध

अमेरिका और ईरान में कोई समझौता होने की संभावनाओं के बीच जिस तरह दोनों किसी सहमति पर भी पहुंचते नहीं दिख रहे हैं,उससे किसी के लिए भी कहना कठिन है कि बातचीत सही दिशा में चल रही है और पश्चिम एशिया संकट शीघ्र समाप्त होने वाला है। पिछले लगभग एक माह से कभी अमेरिका वार्ता के सही दिशा में जारी रहने की घोषणाएं करता है तो कभी ईरान अपने रुख में नरमी दिखाता है,लेकिन परिणाम शून्य है।

बीच-बीच में अमेरिका और ईरान,दोनों एक-दूसरे को धमकी भी देते रहते हैं। साफ है कि दोनों का एक-दूसरे के प्रति गहरा अविश्वास है और कथित तौर पर मध्यस्थता कर रहा पाकिस्तान संदेशों का आदान-प्रदान करने के अतिरिक्त और कुछ करने की स्थिति में नहीं।

इसका कोई खास मतलब नहीं कि दोनों देशों में युद्धविराम कायम है, क्योंकि वह होर्मुज समुद्री मार्ग बाधित ही है,जिससे विश्व के पांचवें हिस्से की ऊर्जा आपूर्ति होती है। यह आपूर्ति करीब-करीब ठप्प होने के कारण ऊर्जा संकट गहरा गया है और उसका बुरा असर अमेरिका समेत सभी देशों की अर्थव्यवस्था पर पड़ रहा है।

अब ट्रंप के उन दावों पर भरोसा करना कठिन हो रहा है कि ईरान समझौते के लिए तैयार है। वैसे समझौता न हो पाने के लिए केवल अमेरिका को ही जिम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता,क्योंकि ईरान भी इस जिद पर अड़ा है कि वह होर्मुज पर अपना आधिपत्य नहीं छोड़ेगा और अपने संवर्धित यूरेनियम को लेकर कोई समझौता नहीं करेगा।

इसका अर्थ है कि वह परमाणु हथियार बनाने के इरादे का परित्याग नहीं करना चाहता। इसे कोई भी नहीं चाहेगा कि ईरान परमाणु हथियार बनाने की क्षमता हासिल करे। उसे न केवल परमाणु हथियार हासिल करने के इरादे को छोड़ना होगा, बल्कि होर्मुज पर नियंत्रण रखने की जिद भी छोड़नी होगी। होर्मुज एक स्वतंत्र समुद्री मार्ग है और ईरान को यह अधिकार नहीं दिया जा सकता कि वह उसे अपनी निजी जागीर समझ ले अथवा वहां से गुजरने वाले जहाजों से टैक्स वसूले।

यह अंतरराष्ट्रीय नियम-कानूनों की अवहेलना करने वाली जिद है। ईरान यह दिखा रहा है कि पश्चिम एशिया संकट जारी रहने से उसकी सेहत पर कोई असर नहीं पड़ रहा है,पर सच यह है कि वह आर्थिक तबाही के मुहाने पर है। ऐसे में उसे अपनी जिद छोड़नी चाहिए। बदले में अमेरिका को भी उसे यह भरोसा दिलाना होगा कि उस पर फिर हमला नहीं होगा। दोनों देशों को यह समझना होगा कि उनके बीच का गतिरोध विश्व अर्थव्यवस्था के लिए नासूर बन गया है। बहुत हो चुका।

अब यह गतिरोध टूटना चाहिए,क्योंकि पश्चिम एशिया संकट विश्व के करोड़ों लोगों को प्रभावित कर रहा है। लोगों की रोजी-रोटी पर ही संकट नहीं है,वे गरीबी के दुष्चक्र से भी घिरते जा रहे हैं।

अकड़ किस बात की साहब ?

प्रकाशकः दैनिक घटती-घटना

प्रोफेसर शामलाल कौशल
रोहतक,हरियाणा

अकड़ किस बात की साहब?
क्या आप भगवान हैं?
क्या आप सर्वशक्तिमान है?
क्या आप मेरे अन्नदाता हैं ?
क्या आप मेरे भाग्य विधाता है?
क्या आप वर्तमान, भूत और
भविष्य के अति बलवान ज्ञाता है?
नहीं ,नहीं। तो फिर साहब
यह अहंकार और
अकड़ किस बात की?

मेरी साधारण सी
अकल तो कहती है कि
आप भी मेरी तरह
साधारण इंसान है।
बेशक आप अकड़ रहे हैं,
आप भी तो
इस जग के कुछ पल के मेहमान हैं।
फूलों की तरह यह जवानी कुछ पल
के बाद मुरझा जाने वाली है।
बेशुमार कमाई हुई दौलत कुछ
समय के बाद किसी और की हो
जाने वाली है।
जितने भी यहां रिश्तेदार ,
मित्र और संबंधी है
वृक्ष के पत्तों की तरह
कभी ना कभी
तुम्हारा साथ छोड़ जाने वाले हैं।
फिर अकड़ किस
बात की साहब?
अहंकार का फिजूल का उतार कर
मुखौटा जो आपको होना चाहिए
वही तो इस दुनिया
को दिखाना चाहिए।

गाय का दूध है धरती का अमृत

आत्माराम यादव 'पीव'
नर्मदापुरम,मध्यप्रदेश

प्रकाशकः दैनिक घटती-घटना

महर्षि चरक के अनमोल वचनों के अनुसार गाय का दूध इस धरती का अमृत है जिससे बनने वाले दही,मक्खन,घी तथा छाछ (मट्ठा)-ये सभी मन,बुद्धि को सात्त्विक बनाकर हमारी विवेक शक्ति, ओज, ऊर्जा, कान्ति की वृद्धि करते है जिसका प्रत्यक्ष भगवान श्रीकृष्ण अवतार के समय प्रत्येक घर गोपालन होता था ओर कृष्ण ने बचपन में गायों को विशेष महत्व दिया जिससे उनका नाम गोपाल भी हुआ। इस समय को छोड़ दिया जाये तो बीते हर युग में भारत के हर घर में गाय का होना ओर गाय का दूध पीना सभी की दिनचर्या का अंग रहा है। इस देश में गाय के दूध की नदिया बहती थी अर्थात हर घर में गाय के दूध का प्रचुर भंडार हुआ करता था जिसे पीकर हमारे पूर्वजों ने इस देश को विश्वगुरुः एवं सोने की चिड़िया कहलाने वाला देश बनाया था लेकिन जब से भैंस का दूध आया तभी से हृदयरोग, वातरोग,शुगर ने यहाँ के लोगों की बुद्धि और पाचन क्रिया का नाश कर देश वासियों को परमुखापेक्षी बना दिया। इसलिये गाय के दूध का कोई विकल्प आज तक नहीं है ओर गाय के दूध की इन्ही विशेषताओं के कारण गाय का दूध अमृत का स्थान पाये हुये है। जिसे यक्ष गीता में उल्लेखित उदाहरण से भी समझा जा सकता है जहां एक समय यक्ष ने युधिष्ठिर से अनेक प्रश्नो के क्रम में एक प्रश्न किया-कि ममृतम् अमृत क्या है? युधिष्ठिर ने उत्तर दिया गवामृतम् गाय का दुग्ध ही अमृत है,धर्मराज युधिष्ठर का यह कथ्य गाय के दूध को अमृत सिद्ध करता है ओर वेद गाय माता कि स्तुति कर यूं ही हमसे आव्हान नहीं करते कि

-माता रुद्राणां दुहिता वसूनां
स्वलादित्यानाममुतस्य नाभिः।
प्रयोघं चिकितुवे जगाय मा
गामनागामदिर्ति वसिष्ठ ।।

अर्थात-गौ रुद्रों की माता, बसुओं की पुत्री,अदिति पुत्रों की बहिन और घृतरूप अमृत का खजाना है;प्रत्येक विचारशील पुरुष को चाहिए कि निरपराध एवं अवध्य गाय का न तो वध करे ओर न ही किसी को करने दे। जिसका पालन मुगल शासक अकबर ने कर मुगल सल्तनत में गायों के कत्लखाने बंद करा कर गोवध पर सजा दे रखी थी जिसे आज हमारी सरकार आंखे बंद कर गाय के कत्लखाने पर रोक लगाने में असफल साबित हुई है किन्तु गाय के दूध का कर्ज चुका नही सकी है।

गाय का दूध अमृत है इसके अनेक प्रसंग है एक अन्य उदाहरण भी मिलता है जब मुगल बादशाह अकबर ने अपने खास नवरत्न बीरबल से पूछा कि बीरबल दूध किसका अच्छा होता है? बीरबल ने बगैर देर लगाये तुरंत जवाब दिया, जहाँपनाह ! दूध तो भैंस का अच्छा होता है। इस उत्तर पर अकबर को आश्चर्य हुआ और वे बोले- बीरबल ! ये क्या कह रहे हो,रोज तो तुम गाय की तारीफ करते नहीं थकते थे,पर जब आज हमने दरबार में दूध के विषय में पूछा तो तुम भैंस के दूध की तारीफ कर रहे हो? बीरबल ने कहा- जहांपनाह! पर आपने पूछा कि दूध किस जानवर का अच्छा होता है,तो मैंने भैंस का नाम लिया, यदि आपने अमृत पूछा होता तो मैं गोमाता का नाम लेता,गोमाता तो दूध नहीं,अमृत देती हैं। आयुर्वेद के प्रसिद्ध ग्रन्थ भावप्रकाश के अनुसार-गोदुग्ध रस एवं विपाक में मधुर,शीतल, स्निग्ध, गुरु और वृद्धावस्था के समस्त रोगोंका शामक है। गाय का दूध पौष्टिक तत्त्वों का भण्डार है,इसमें जल 87, वसा 4, प्रोटीन 4,शर्करा 5 तथा अन्य तत्त्व 1 से 2 प्रतिशत तक पाये जाते हैं। गायके दूध में 8 प्रकार के प्रोटीन,11 प्रकार के विटामिन्स,12 प्रकार के पिगमेंट्स तथा 3 प्रकार की दुग्ध गैसें पायी जाती हैं। गायके दुधमे कैरोटीन नामक पदार्थ भैंस के दूध से दस गुना अधिक होता है। केवल गाय के दूध में ही विटामिन ए होता है, जो किसी अन्य पशु के दूध में नहीं होता है। भैंस का दूध गरम करने पर उसके सर्वाधिक पोषक तत्व मर जाते हैं,जबकि गाय के दूध को गरम करने पर भी पोषक तत्त्व वैसे ही विद्यमान रहते हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार माँ के दूध के पश्चात्गाय का दूध ही मानव के लिये सबसे ज्यादा उपयोगी है। गोदुग्ध में विद्यमान सेरिब्रोसाइस मस्तिष्क और स्मरण शक्तिके विकासमें सहायक होता है। स्ट्रानटाइन अणु विकारों का प्रतिरोध होता है और एम0डी0जी0आई0 प्रोटीन के कारण रक्त कोशिकाओं में कैंसर प्रवेश नहीं कर सकता तथा गाय के दूध से कोलेस्ट्रॉल नहीं बनता है।

अथर्ववेद के प्रथम काण्ड के 22 वें सूक्त में लिखा है कि लाल रंग की गाय के दूध दही,घी,मक्खन आदि से हृदय एवं पाण्डुरोग नष्ट होते हैं वही पर चरक संहिता में गाय के दूध के दस गुणों का वर्णन इस प्रकार किया गया है-

स्वादु शीतं मृदु स्निग्धं बहलं
श्लक्ष्णपिच्छिलम्। गुरु मन्दं प्रसन्नं
च गव्यं दशगुणं पयः ॥
(सूत्रस्थान 27। 218)

अर्थात् गाय का दूध स्वादिष्ट,शीतल, कोमल,चिकना,गाढ़ा,सौम्य,लसदार, भारी और बाह्य प्रभाव को विलम्ब से ग्रहण करनेवाला तथा मन को प्रसन्न करने वाला होता है। इसी तरह सुश्रुत संहिता में गाय के दूध के दही को स्निग्ध,विपाक में मधुर,पाचक, बलवर्धक,वातनाशक,शुद्ध एवं रुचिकारक कहा गया है-

स्निग्धं विपाके मधुरं दीपनं
बलवर्धनम् । वातापहं पवित्रं च
दधि गव्यं रुचिप्रदम् ।।
(सु0सं0 45।67)

गायके पाँच पदार्थों-पंचगव्य (दूध, दही,घृत,मूत्र तथा गोबर)-में अनेक बीमारियों के इलाज के गुण विद्यमान हैं। गाय से प्राप्त पदार्थों से ही पंचगव्य बनता है और पंचामृतमें भी इसका उपयोग होता है। गाय का दूध,दही, घी, मक्खन एवं छाछ (मट्ठा) अमृत का भण्डार है। इसी कारण कृतज्ञता-वश भारतवर्ष में गोमाता की घर-घर पूजा होती है।

गोमाता में ही ऐसी दिव्यता है कि जिसकी रीढ़ की हड्डी में सूर्यकेतु नाड़ी होती है,इसके सिवा दुनिया के किसी भी प्राणी में ऐसा नहीं है। इसी नाड़ी के क्रियाशील होने पर वह पीले रंग का एक पदार्थ छोड़ती है,जिसे स्वर्ण क्षार कहते हैं। इसके कारण देशी गाय का दूध, मक्खन,घी स्वर्ण कान्तियुक्त होता है। इस दूध को पीने से शरीर पूर्ण रूपसे रोगमुक्त हो जाता है। गाय का दूध तो धरती का अमृत है,इसलिये प्रत्येक मनुष्य को कम-से-कम 275 ग्राम दूध प्रतिदिन अवश्य पीना चाहिये। गोदुग्ध में यदि एक चम्मच गाय का घी मिलाकर पियें तो शरीर पुष्ट एवं बलवान् होता है। गाय का दूध गर्म करके पीने से कफ का नाश होता है तथा उसी दूध को ठण्डा करके मिश्री के साथ पीने से पित्तविकार का नाश होता है ओर शरीर की जलन शान्त करके अन्न पाचन में सहायक बनता है। गोमाता अत्यन्त सात्त्विक तथा ममतामयी होती हैं, इसीलिये गाय का दूध सात्त्विक होता है। गाय का दूध पतला होने से जल्दी हजम हो जाता है, इससे रस-रक्तादि धातुओं एवं स्मरणशक्ति की वृद्धि होती है। अच्छे विचारों एवं अच्छे कार्यों की ओर बुद्धि की प्रवृत्ति होती है। भोज्य पदार्थ या अन्न की अपेक्षा दूध जल्दी हजम होता है। दूध आप हर 2-2 घंटे बाद 4-6 बार थोड़ा-थोड़ा ले सकते हैं,दूध उतना ही लें जितना हजम हो जाय।

आयुर्वेद के अनुसार गाय के दूध के पथ्य से जिन रोगों में लाभ होता है वे है-जीर्ण ज्वर, अग्निमांद्य, तिल्लीवृद्धि, यकृतरोग,जलोदर,रक्तविकार,गंडमाला, अपस्मार,उन्माद,भ्रम,चक्कर,मूर्छा, उपदंश,विष और उससे उत्पन्न सभी प्रकार के दर्द,लकवा,लूलापन,शिर और नेत्र रोग,मस्तक शूल,मूत्राशय के रोग, पाण्डु रोग पीलिया,रक्तपित्त,प्यास,क्षय, हृदय रोग,छाती का दर्द,विषरोग, दवाओंकी उष्णता,अम्लपित्त, पेट शूल, उल्टियां,जुलाब, पेट फूलना,संग्रहणी, दस्त के विकार, मन के विकार आदि अनेक रोग केवल दूध के पथ्य से ठीक हो जाते हैं। गोमाता के दूध के इन्हीं गुणों के कारण ही सऊदी अरब में 7 लाख गायों उच्च तकनीकी से पालन कर फार्म चल रहे है जिसमें अलशफीजी नाम से अर्थात मेहरबान (कृपालु)-गाय के गुणों के हिसाब से रखा गया है। इस फार्ममें 90 हजार गायें हैं,जिनमें 30 हजार भारतीय नस्ल की हैं। इन्हीं भारतीय नस्ल की गायों का दूध रियाद स्थित शाही महल में जाता है। दूसरी नस्ल की गायों का दूध शाही परिवार पसंद नहीं करता है। यहाँ पर कोई गाय कत्ल नहीं की जाती।

हमारे देश की देशी गायों के रंग के अनुसार दूध के गुण भी बदल जाते हैं, ये कितनी बड़ी विशेषता है। काली गाय का दूध वातनाशक होता है तथा लाल रंग की गाय का दूध पित्तनाशक होता है, श्वेत गाय का दूध कफनाशक होता है। दोपहर में पिया जानेवाला गाय का दूध बलवर्धक,कफ-पित्तनाशक होता है तथा रात में पिया जाने वाला दूध दुर्बलता और बुढ़ापा दूर करने वाला होता है। आयुर्वेद के अनुसार सफेद गाय के दूध को यकृत की बीमारी में, बादामी रंगकी गाय के दूध को वातरोग में,काली गाय के दूध को श्वास तथा फेफड़ों के रोग में अत्यन्त गुणकारी बताया गया है। सुश्रुत संहिता में गाय के घी के सम्बन्ध में लिखा है कि गाय का घी विपाक में मधुर,शीतवीर्य, वात-पित्त और बिम्ब का नाश करनेवाला,आँखों की ज्योति एवं शरीरकी सामर्थ्य को बढ़ानेवाला है और गुणों में अति श्रेष्ठ है-विपाके मधुरं शीतं वातपित्तविषापहम् । चक्षुष्यमग्रयं बल्यं च गव्ययं सर्पिर्गुणोत्तरम्॥ गोघृत आँखों के लिये विशेष फायदेमन्द होता है। श्यामा गाय के घी से गठिया, कुष्ठरोग, जले-कटे घाव के दाग,नेत्रविकार, जलन,मुँह का फटना आदि पर आश्चर्यजनक लाभ होता है। गायका घी ऐन्टीसेप्टिक होता है। गाय के घी तथा दूध में कैंसरीय तत्त्वों से लड़ने की क्षमता होती है। जो शक्ति गोघृत में मिलती है, वह अण्डे या मांसाहारसे नहीं मिलती है।

वैज्ञानिकोंकी मान्यता है कि 10 ग्राम घी जलाने से 1 टन से अधिक ऑक्सीजन पैदा होती है तथा वायुमण्डल में एटामिक रेडिएशनका प्रभाव कम हो जाता है। इसीलिये देवी-देवताओं की प्रसन्नता के लिये उनकी पूजा में गाय के घी-दूध का ही प्रयोग होता दूध से घी बनता है,उसी तरह जमाये हुए दहीमें चौथाई भाग पानी मिलाकर मथानी से मथकर मक्खन निकालकर मट्ठा (छाछ) बनता है। यह मट्ठा पचनेमें अत्यन्त हलका,मल-मूत्र साफ करनेवाला, पाचक तथा अन्य द्रव्यों को पचाने वाला,अतिसार, संग्रहणी,वायु, पीलिया,पेट शूल, मूत्रकृच्छ,हैजा,मूत्राघात,अश्मरी,उदर रोगों में अमृत के समान गुणकारी होता है। यदि आपको वातविकार है तो मट्ठा सेंधा नमक मिलाकर लें,यदि पित्तविकार है तो मट्ठा- शक्कर मिलाकर लें तथा जिनको कफविकार है, वे सोंठ, सेंधा नमक,कालीमिर्च और पीपल मिलाकर लें,यदि आप मूत्रकृच्छ की समस्या से ग्रसित हैं तो आप मट्ठा-गुड़ मिलाकर लें,पाण्डुरोग में चित्रकचूर्ण मिलाकर लें। इस तरह से गोमाता के दूध, घी, मट्ठा तीनों ही महान् गुणकारी तथा रोगोंका नाश करनेवाले हैं।

गाय के दूध के इसी अमृतमयी गुणों के कारण ही हमारे ऋषि-मुनि, राजा-महाराजा गो माता को अपने पास बड़े आदरपूर्वक रखते थे और उनकी पूजा किया करते थे। राम,कृष्ण, वसिष्ठ, जमदग्नि-जैसे महात्मा गोमाता को प्राणों से बढ़कर रखते थे और उनसे मनोवांछित फल प्राप्त किया करते थे। आज फिरसे यदि हम पुराने गौरवको पाना चाहते हैं तो हमें गोमाता की शरण में जाना ही पड़ेगा। यदि ऐसा न करेंगे तो हम अपने खोये हुए गौरव को वापस कभी नहीं पा सकते। आप सभी से आग्रह है की अगर रख सकते हों तो एक गाय जरूर रखें, यदि आप नहीं रख सकते तो गाय का दूध, घी और मट्ठा जरूर अपने भोजन में शामिल करें, यदि ऐसा भी नहीं कर सकते तो आप गायों के प्रति सहानुभूति रखें,उन्हें कोई प्रताड़ित कर रहा हो तो उनकी रक्षा करें। गोपालक भगवान कृष्ण की गौ माता के साथ वाली तस्वीर अपने घर में लगाने में जैसे आप अपने लिए सात्विक वातावरण पसंद करते हो वैसे ही मान सम्मान अपनी गोमाता के प्रति रखे ओर जिस प्रकार आज उनकी दुर्गति हो रही है उसे तत्काल रोककर मानवता का परिचय दे तभी गोमाता का वर्चस्व बना रहेगा,स्मरण रहे गाय होगी तो आप होंगे,बिना गाय आपका अस्तित्व समाप्त हो जाएगा।

माता पिता आपके लिए एक अच्छे मार्गदर्शक है...

प्रकाशकः दैनिक घटती-घटना

संजय गोस्वामी
पटना,बिहार

बच्चे के भावनात्मक,सामाजिक और संज्ञानात्मक विकास को आकार देने में माता-पिता दोनों की उपस्थिति और भागीदारी की अहम भूमिका होती है। जहाँ हर माता-पिता पालन-पोषण के सफ़र में अपनी अनोखी खूबियाँ लाते हैं,वहीं उनका मिला-जुला प्रभाव एक संतुलित और पोषण भरा माहौल बनाने में मदद करता है। पिता और माँ की भूमिकाएँ अलग-अलग हो सकती हैं, लेकिन बच्चे के जीवन में दोनों ही समान रूप से ज़रूरी हैं। फ़ैमिली थेरेपी और साइकोथेरेपी माता-पिता को यह समझने में मदद कर सकती हैं कि वे मिलकर प्रभावी ढंग से कैसे काम करें,जिससे यह सुनिश्चित हो सके कि उनका बच्चा एक सुरक्षित और सहायक माहौल में पले-बढ़े। बच्चे के जीवन में माँ की अहम भूमिका होती है

1. भावनात्मक सुरक्षा और पोषण माँएँ अक्सर आराम और भावनात्मक सहारे का मुख्य स्रोत होती हैं। उनकी पोषण भरी उपस्थिति सुरक्षा की भावना को बढ़ावा देती है,जिससे बच्चों में मज़बूत भावनात्मक बुद्धिमत्ता और आत्म-सम्मान विकसित करने में मदद मिलती है।

2. शुरुआती विकास और जुड़ाव बचपन से ही,माँ का अपने बच्चे के साथ जुड़ाव उनके सामाजिक और भावनात्मक विकास में अहम भूमिका निभाता है। सुरक्षित जुड़ाव से बाद के सालों में ज़्यादा आत्मविश्वास,आज़ादी और मज़बूती आती है।

3. सहानुभूति और बातचीत सिखाना माँएँ भावनात्मक जागरूकता और प्रभावी बातचीत का उदाहरण पेश

करके बच्चों में सहानुभूति,करुणा और मज़बूत आपसी कौशल विकसित करने में मदद करती हैं। यह मार्गदर्शन बच्चे की स्वस्थ रिश्ते बनाने की क्षमता को आकार देने में अहम भूमिका निभाता है।

4. मूल्यों और नैतिक मार्गदर्शन को मन में बिठाना बच्चों को दयालुता, जिम्मेदारी और सम्मान जैसे मुख्य मूल्य सिखाने में माँ का प्रभाव बहुत अहम होता है। ये सीख उनके नैतिक और सैद्धांतिक दिशा-निर्देशों की नींव बनाती हैं। बच्चे के जीवन में पिता की भूमिका

1. स्थिरता और सहारा देना पिता बच्चे के जीवन में स्थिरता की भावना पैदा करने में अहम भूमिका निभाते हैं। उनकी भागीदारी बच्चे के आत्मविश्वास और चुनौतियों का प्रभावी ढंग से सामना करने की क्षमता में योगदान देती है।

2. आज़ादी और समस्या-समाधान को बढ़ावा देना पिता अक्सर अपने बच्चों को चीज़ें खोजने,जोखिम उठाने और समस्या-समाधान के कौशल विकसित करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। यह सहारा आज़ादी और मज़बूती को बढ़ावा देता है,जिससे बच्चों को आत्मविश्वास के साथ मुश्किलों का सामना करने में मदद मिलती है।

3. सीमाएँ तय करना और अनुशासन सिखाना हालाँकि अनुशासन में माता-पिता दोनों का योगदान होता है,लेकिन पिता को अक्सर स्पष्ट उम्मीदें तय करने और बच्चों को व्यवस्था और आत्म-अनुशासन के महत्व को सिखाने से जोड़ा जाता है। ये सीख बच्चों को ज़िम्मेदारी और सम्मान के महत्व को समझने में मदद करती हैं।

4. स्वस्थ रिश्तों के लिए एक आदर्श बनना बच्चे अपने माता-पिता को देखकर सीखते हैं। एक पिता का अपने बच्चे की माँ के साथ रिश्ता, और साथ ही दूसरों के साथ उनका बर्ताव,इस बात का एक उदाहरण पेश करता है कि एक स्वस्थ और सम्मानजनक रिश्ता कैसा होना चाहिए। पेरेंटिंग की भूमिकाओं के बीच संतुलन बनाना पेरेंटिंग एक साझा ज़िम्मेदारी है, और पिता व माँ दोनों ही अपने बच्चे की भलाई में अलग-अलग,लेकिन एक-दूसरे के पूरक तरीकों से योगदान देते हैं। एक संतुलित और मददगार माहौल बनाने के लिए, माता-पिता ये कर सकते हैंः-पेरेंटिंग से जुड़ी उम्मीदों और जिम्मेदारियों के बारे में खुलकर बातचीत करें अनुशासन और मूल्यों के मामले में एक जैसा नज़रिया बनाए रखने में एक-दूसरे का साथ दें भौतिक चीज़ों या इनामों के बजाय,बच्चे के साथ बिताए जाने वाले अच्छे समय को ज़्यादा अहमियत दें

-अगर कोई मनमुटाव या झगड़ा होता है,तो अपनी साझेदारी और पेरेंटिंग की रणनीतियों को मज़बूत बनाने के लिए फ़ैमिली थेरेपी (पारिवारिक परामर्श) की मदद लें पेरेंटिंग में सक्रिय भागीदारी का असर जिन बच्चों को अपने माता-पिता दोनों की तरफ़ से संतुलित भागीदारी मिलती है,उनमें ये आत्मविश्वास विकसित होती हैः जो एक किसी कार्य को करने के लिए जूनून पैदा करती है और हमेशा सफलता की ओर ले जाती है और माता पिता हमेशा अपने बच्चे को अपना कष्ट कर उसकी पढ़ाई लिखाई में मदद करते हैं। हमेशा बच्चे को अनुशासन के प्रति जागरूक नागरिक बनाते हैं और जिससे समाज में यश मिले मज़बूत आत्म-सम्मान और आत्मविश्वास आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है। अपनी भावनाओं को स्वस्थ तरीके से नियंत्रित करने की क्षमता होती है। सकारात्मक सामाजिक कौशल और अच्छे रिश्ते बनते हैं व सुरक्षा की भावना और मुश्किलों का सामना करने की हिम्मत भी माता पिता के आदर्शो से मिलती है।

अतः माता पिता आपके लिए एक अच्छे मार्गदर्शक है जो कभी बच्चे के बारे में बुरा नहीं सोच सकते हैं लेकिन आज का युग बदला बदला नजर आता है शादी के बाद लोग माता पिता को उस बुजुर्ग उम्र में साथ रखना नहीं चाहते। ये गलत है जिससे आपके बच्चे भी बाद में यही सीखेंगे।

गर्मी में प्यास,बारिश में सैलाबः विकास के मॉडल पर बड़ा सवाल

21वीं सदी की क्रूर विडंबना:- गर्मी में जल-मृत्यु, बारिश में जल-तांडव
जल संकट और जल प्रलय का दोहरा चक्र –अब कब तक चलेगी यह विडंबना?

प्रो. आरके जैन अरिजीत
बड़वानी,मध्यप्रदेश

21वीं सदी का भारत एक कड़वी विडंबना के दौर से गुजर रहा है। एक ओर देश अंतरिक्ष में नई ऊंचाइयां छू रहा है, तो दूसरी ओर करोड़ों लोग पानी की एक-एक बूंद के लिए जूझ रहे हैं। वर्ष 2026 की भीषण गर्मी ने विकास की चमक के पीछे छिपी हकीकत उजागर कर दी है। कई क्षेत्रों में तापमान 48 डिग्री सेल्सियस पार कर चुका है। बाड़मेर जैसे इलाकों में गांव एक हैंडपंप के सहारे हैं, महिलाएं मीलों दूर से पानी ला रही हैं और शहरों में दूषित जलापूर्ति को लेकर आक्रोश है। लेकिन कुछ ही सप्ताह बाद मानसून आते ही यही देश जल संकट से निकलकर जल प्रलय में घिर जाता है। सड़कें नदियां बन जाती हैं और जनजीवन थम जाता है। आखिर यह कैसा विकास है, जहां गर्मी में प्यास और बारिश में सैलाब नियति बन चुके हैं? यह संकट प्रकृति नहीं, बल्कि विकास और जल प्रबंधन की उपेक्षा का परिणाम है। केंद्रीय जल आयोग के अनुसार अप्रैल 2026 में देश के 166 प्रमुख जलाशयों में जल भंडारण क्षमता का लगभग 39 प्रतिशत ही बचा था,जो मई में और घट गया। कई बड़े जलाशय आधी क्षमता से नीचे पहुंच गए। पिछले वर्षों में वर्षा के असमान वितरण,बढ़ती गर्मी और कमजोर जल प्रबंधन ने संकट को गहरा किया है। वहीं 2026 में एल-नीनो के प्रभाव से सामान्य से कम मानसून की आशंका है। दूसरी ओर भूजल का बेलगाम दोहन हालात और बिगाड़ रहा है। दिल्ली, बेंगलुरु और चेन्नई जैसे शहर जल संकट के साथ भूमि धंसाव जैसे खतरों का भी सामना कर रहे हैं। स्पष्ट है, यह केवल आज की नहीं,भविष्य की भी गंभीर चुनौती है। इस संकट की जड़ अंधाधुंध शहरीकरण है,जिसने प्रकृति और पानी का संतुलन तोड़ दिया है। कभी तालाब,झीलें और आर्द्रभूमियां वर्षा जल संजोती थीं,लेकिन आज उनकी जगह कंक्रीट के जंगल उग आए हैं। नतीजा यह है कि बारिश का पानी जमीन में उतरने के बजाय सड़कों और नालों में बह जाता है, जबकि गर्मियों में भूजल खाली पड़ जाता है। मानो हम बरसात में पानी को ठुकराते हैं और फिर गर्मी में उसकी तलाश में भटकते हैं। दुर्भाग्य से विकास की परिभाषा ऊंची इमारतों और चौड़ी सड़कों तक सिमट गई है, जबकि जल संरक्षण हाशिये पर है। यही सोच आज जल संकट और जलभराव–दोनों की सबसे बड़ी वजह है।

भारत में जल संकट का कारण केवल पानी की कमी नहीं, बल्कि उसके उपयोग और प्रबंधन की खामियां भी हैं। कृषि और शहर मिलकर देश के 80 प्रतिशत से अधिक भूजल का दोहन कर रहे हैं, फर भी जल व्यवस्था चरमराई हुई है। शहरों में लाखों लीटर पानी पाइपलाइन लीकेज में बह जाता है,जबकि कई बस्तियां बूंद-बूंद को तरसती हैं। दूसरी ओर सीमित जल

वाले क्षेत्रों में भी अत्यधिक पानी मांगने वाली फसलें उगाई जा रही हैं। नतीजा यह है कि गर्मियों में जलाशय सूख जाते हैं और बरसात में वही पानी अनियंत्रित होकर तबाही मचाता है। स्पष्ट है, यह संकट संसाधनों के अभाव से अधिक गलत प्रबंधन और विकृत प्राथमिकताओं का परिणाम है।

गर्मी की प्यास और बारिश की तबाही का सबसे भारी बोझ समाज के कमजोर वर्गों पर पड़ रहा है। गांवों में पेयजल संकट स्वास्थ्य, खेती और पशुधन–तीनों पर चोट कर रहा है। सूखती फसलें किसानों की आय घटा रही हैं और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को कमजोर बना रही हैं। वहीं शहरों में जलभराव और बाढ़ यातायात, कारोबार और जनजीवन को ठप कर देते हैं, साथ ही बीमारियों का खतरा बढ़ा देते हैं। गरीब परिवारों के घर डूबते हैं, रोज़गार प्रभावित होता है और जीवन स्तर गिरता है। सबसे बड़ी विडंबना यह है कि जल संकट और जल प्रलय की सबसे बड़ी कीमत वही लोग चुका रहे हैं, जिनकी इन समस्याओं को पैदा करने में सबसे कम भूमिका है।

यह संकट अब केवल पर्यावरण या समाज तक सीमित नहीं रहा,बल्कि राष्ट्रीय सुरक्षा और आर्थिक स्थिरता की चुनौती बन चुका है। पानी सीधे खाद्य सुरक्षा, कृषि, उद्योग,जनस्वास्थ्य और सामाजिक संतुलन से जुड़ा है। यदि जल स्रोत लगातार कमजोर होते रहे, तो भविष्य में जल विवाद बढ़ेंगे,कृषि उत्पादन घटेगा और शहरों की जीवन क्षमता पर भी संकट गहराएगा। जो राष्ट्र अपने नागरिकों के लिए पानी जैसी मूलभूत आवश्यकता सुनिश्चित नहीं कर सकता,उसका विकास भी लंबे समय तक टिक नहीं सकता। इसलिए पानी को महज़ एक संसाधन नहीं,बल्कि राष्ट्र निर्माण और विकास की आधारशिला मानने का समय आ गया है।

मिल गए नैन भोले

कार्तिकेय कुमार त्रिपाठी राम
इन्दौर,मध्यप्रदेश

भोले से मिल गए मेरे नैन,
मिल गया हमको कितना चैन,
नहीं मिलते जब भोले तो,
ये मन हो जाता है बेचैन।
भोले से मिल ...
बिना भोले हमारा तो,
गुजारा भी नहीं होता,
जो भोले पास होते हैं,
नजारा खास होता है।
भोले से मिल ...
नजर जब पड़ती भोले की,
सुखद अहसास होता है,
नजर कोई नहीं आता,
जब भोले का साथ होता है।
भोले से मिल ...
चरण पड़ते जब भोले के,
पावन तब वास होता है,
महक जाता है आंगन भी,
भोले का राग होता है।
भोले से मिल ...
आओ भक्ति का पाठ पढ़ें,
नित भोले का ध्यान धरें,
मन गंगा की धार बहे,
कुछ ऐसा काम करें।
भोले से मिल ....

सूचना
समाचार पत्र में छपे समाचार एवं लेखों पर सम्पादक की सहमति आवश्यक नहीं है। हमारा ध्येय तथ्यों के आधार पर सटिक खबरें प्रकाशित करना है न कि किसी की भावनाओं को ठेस पहुंचाना। सभी विवादों का निपटारा अम्बिकापुर न्यायालय के अधीन होगा।
-सम्पादक

अस्पतालों की दवा मोनोपोली पर उठे गंभीर सवाल : क्या मरीजों को अपनी पसंद की मेडिकल दुकान से दवा खरीदने का अधिकार नहीं?

सरगुजा औषधि विक्रेता संघ ने IMA को सौंपा ज्ञापन,कहा...सिंगल काउंटर व्यवस्था से मरीजों की स्वतंत्रता प्रभावित,जनहित में तत्काल हस्तक्षेप जरूरी

-न्यूज डेस्क-

अम्बिकापुर,31 मई 2026 (घटती-घटना)। जिले के कुछ निजी अस्पतालों, नर्सिंग होम्स और उनसे संबद्ध फार्मेसियों में कथित रूप से संचालित 'सिंगल काउंटर' दवा व्यवस्था को लेकर सरगुजा औषधि विक्रेता संघ ने गंभीर चिंता जताई है। संघ ने इस व्यवस्था को न केवल दवा व्यापार में एकाधिकार की प्रवृत्ति को बढ़ावा देने वाला बताया है, बल्कि इसे मरीजों के अधिकारों, स्वास्थ्य सेवाओं की पारदर्शिता और जनहित से जुड़ा संवेदनशील विषय भी बताया है। इसी मुद्दे को लेकर संघ ने इंडियन मेडिकल एसोसिएशन सरगुजा इकाई को विस्तृत पत्र सौंपते हुए तत्काल हस्तक्षेप की मांग की है। संघ के अध्यक्ष अमित अग्रवाल (मिंटू), सचिव अजय पाठक (बंटी) और कोषाध्यक्ष प्रकाश श्रीवास्तव द्वारा हस्ताक्षरित पत्र में कहा गया है कि जिले के कुछ अस्पतालों एवं उनसे संबद्ध मेडिकल स्टोर्स में ऐसी परिस्थितियां निर्मित हो रही हैं, जहां मरीजों को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से किसी एक विशेष फार्मेसी से ही दवा खरीदने के लिए प्रेरित अथवा बाध्य किया जा रहा है। इससे न केवल अन्य लाइसेंसधारी दवा विक्रेताओं के लिए असमान स्थिति उत्पन्न हो रही है, बल्कि मरीजों की स्वतंत्र पसंद और सुविधा भी प्रभावित हो रही है।

मरीज के अधिकार और सुविधा का सवाल सबसे बड़ा

औषधि विक्रेता संघ का कहना है कि चिकित्सा व्यवस्था का मूल उद्देश्य मरीज को बेहतर उपचार और सुविधाजनक स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराना है। लेकिन यदि किसी मरीज को डॉक्टर द्वारा लिखी गई दवाएं केवल अस्पताल परिसर में संचालित किसी एक फार्मेसी से ही उपलब्ध हों, तो उसके सामने विकल्प समाप्त हो जाते हैं। वह न तो दवा की कीमत की तुलना कर सकता है और न ही अपनी सुविधा के अनुसार किसी अन्य मेडिकल स्टोर से दवा खरीद सकता है। संघ का मानना है कि मरीज को यह अधिकार होना चाहिए कि वह अपने डॉक्टर द्वारा लिखी गई दवा किसी भी वैध एवं लाइसेंसधारी मेडिकल स्टोर से खरीद सके। यदि यह अधिकार व्यवहारिक रूप से सीमित हो जाता है, तो यह मरीजों के हितों पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकता है।

जीवनरक्षक दवाओं की उपलब्धता को लेकर भी चिंता

पत्र में यह भी उल्लेख किया गया है कि कुछ मामलों में आवश्यक एवं जीवनरक्षक दवाओं की उपलब्धता सीमित काउंटरों तक सिमटने की शिकायतें सामने आई हैं। संघ का कहना है कि यदि किसी आपातकालीन परिस्थिति में संबंधित फार्मेसी में दवा उपलब्ध न हो, स्टॉक समाप्त हो जाए या किसी अन्य कारण से मरीज को तत्काल दवा न मिल सके, तो इससे गंभीर स्वास्थ्य जोखिम उत्पन्न हो सकता है। संघ का तर्क है कि जीवनरक्षक एवं अत्यावश्यक दवाएं जितने अधिक लाइसेंसधारी मेडिकल स्टोर्स पर उपलब्ध होंगी, मरीजों को उतनी ही राहत मिलेगी और आपातकालीन परिस्थितियों में उपचार में देरी की संभावना कम होगी।

दवा बाजार में बढ़ रही असमानता की आशंका

सरगुजा औषधि विक्रेता संघ ने अपने पत्र में कहा है कि कुछ दवा कंपनियों के उत्पादों की उपलब्धता सीमित चैनलों तक सिमटने से जिले के अनेक लाइसेंसधारी दवा विक्रेता उन दवाओं को अपने यहां उपलब्ध नहीं करा पा रहे हैं। इससे बाजार में स्वस्थ प्रतिस्पर्धा प्रभावित होती है और छोटे एवं मध्यम स्तर के मेडिकल स्टोर आर्थिक रूप से कमजोर पड़ सकते हैं। संघ का कहना है कि यदि कोई दवा चिकित्सकों द्वारा नियमित रूप से लिखी जा रही है, तो उसकी आपूर्ति और उपलब्धता सभी अधिकृत दवा विक्रेताओं के लिए समान रूप से सुनिश्चित की जानी चाहिए। इससे मरीजों को बेहतर विकल्प मिलेंगे और दवा वितरण व्यवस्था अधिक पारदर्शी बनेगी।

नैतिकता, पारदर्शिता और चिकित्सा व्यवस्था की विश्वसनीयता का मुद्दा

पत्र में कहा गया है कि चिकित्सा सेवा और औषधि व्यवसाय दोनों ही सेवा-प्रधान और समाज से सीधे जुड़े हुए क्षेत्र हैं। इसलिए इन क्षेत्रों में पारदर्शिता,निष्पक्षता और नैतिकता का विशेष महत्व है। यदि किसी भी स्तर पर दवा विक्रय में एकाधिकार जैसी स्थिति बनती है, तो इससे चिकित्सा व्यवस्था की निष्पक्षता और विश्वसनीयता पर सवाल उठ सकते हैं। संघ ने यह भी कहा है कि स्वास्थ्य सेवाओं को केवल व्यावसायिक दृष्टिकोण से नहीं देखा जाना चाहिए, बल्कि मरीजों की सुविधा और जनहित को सर्वोच्च प्राथमिकता मिलनी चाहिए।

आईएमए से की गई तीन प्रमुख मांगें...

सरगुजा औषधि विक्रेता संघ ने इंडियन मेडिकल एसोसिएशन सरगुजा इकाई से मांग की है कि वह अपने सदस्य चिकित्सकों,अस्पतालों और नर्सिंग होम संचालकों को स्पष्ट दिशा-निर्देश जारी करे कि किसी भी परिस्थिति में मरीजों को किसी एक विशेष फार्मेसी से दवा लेने के लिए बाध्य न किया जाए। संघ ने यह भी मांग की है कि अस्पतालों में लिखी जाने वाली दवाओं की सार्वजनिक उपलब्धता सुनिश्चित कराई जाए, मोनोपोली के रूप में उपलब्ध दवाओं के लिए स्थानीय स्तर पर स्टॉकिस्ट नियुक्त किए जाएं तथा सभी लाइसेंसधारी मेडिकल स्टोर्स को उचित मार्जिन, एक्सपायरी एवं ब्रेकेज सेटलमेंट जैसी सुविधाओं के साथ समान अवसर उपलब्ध कराए जाएं।

कार्रवाई नहीं हुई तो ड्रग कंट्रोल विभाग और प्रशासन तक पहुंचेगा मामला

संघ के अध्यक्ष अमित अग्रवाल, सचिव अजय पाठक और कोषाध्यक्ष प्रकाश श्रीवास्तव ने स्पष्ट किया है कि यदि इस विषय पर शीघ्र प्रभावी पहल नहीं की जाती, तो संघ इस मुद्दे को ड्रग कंट्रोल विभाग, जिला प्रशासन तथा अन्य सक्षम वैधानिक प्राधिकरणों के समक्ष उठाने के लिए बाध्य होगा। संघ का कहना है कि यह केवल दवा व्यापार से जुड़ा विवाद नहीं है, बल्कि मरीजों के अधिकार,दवाओं की सुगम उपलब्धता,स्वास्थ्य सेवाओं की पारदर्शिता और जनहित से जुड़ा हुआ विषय है। ऐसे में इस मामले में ढ्रक्र स्वास्थ्य विभाग और प्रशासन की भूमिका महत्वपूर्ण मानी जा रही है। अब देखना होगा कि मरीजों के हित से जुड़े इस मुद्दे पर संबंधित संस्थाएं क्या कदम उठाती हैं और स्वास्थ्य सेवाओं में पारदर्शिता तथा विकल्प की स्वतंत्रता सुनिश्चित करने के लिए किस प्रकार की पहल की जाती है।

आईएमए से मांगे गए तीन प्रमुख कदम

संघ ने आईएमए सरगुजा से आग्रह किया है कि-

- सदस्य चिकित्सकों एवं अस्पताल प्रबंधन को स्पष्ट दिशा-निर्देश जारी किए जाएं कि मरीजों को किसी विशेष फार्मेसी से दवा लेने के लिए बाध्य न किया जाए।
- अस्पतालों में लिखी जाने वाली दवाओं की सार्वजनिक उपलब्धता सुनिश्चित कराई जाए।
- मोनोपोली वाली दवाओं के लिए स्थानीय स्तर पर स्टॉकिस्ट नियुक्त कर सभी लाइसेंसधारी दवा विक्रेताओं तक उनकी पहुंच सुनिश्चित की जाए।

राजीव गांधी स्वशासी महाविद्यालय में प्रवेश प्रक्रिया शुरू,1 जून से स्नातक प्रथम सेमेस्टर के लिए आवेदन

-संवाददाता-

अम्बिकापुर,31 मई 2026 (घटती-घटना)। सरगुजा संभाग के सबसे बड़े एवं एकमात्र स्वशासी संस्थान राजीव गांधी शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,अंबिकापुर में शैक्षणिक सत्र 2026-27 के लिए प्रवेश प्रक्रिया प्रारंभ कर दी गई है। वर्तमान में सभी संकायों के स्नातक प्रथम सेमेस्टर में प्रवेश हेतु आवेदन लिए जा रहे हैं। महाविद्यालय प्रशासन ने विद्यार्थियों एवं अभिभावकों से समय-सीमा के भीतर प्रवेश संबंधी समस्त औपचारिकताएं पूर्ण करने की अपील की है। महाविद्यालय प्रशासन के अनुसार कला, विज्ञान, वाणिज्य, कंप्यूटर एवं विधि सहित विभिन्न विषयों में अध्ययन की सुविधा उपलब्ध है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के अनुरूप विद्या र्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, अनुसंधान,नवाचार और कौशल विकास के अवसर प्रदान किए जा रहे हैं। संस्थान में आधुनिक प्रयोगशालाएं,समृद्ध पुस्तकालय,

स्मार्ट कक्षाएं,खेल सुविधाएं तथा डिजिटल शिक्षण संसाधन उपलब्ध हैं। महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. अनिल कुमार सिन्हा ने विद्यार्थियों से समय पर आवेदन करने का आग्रह करते हुए कहा कि संस्थान का उद्देश्य विद्यार्थियों को उत्कृष्ट शैक्षणिक वातावरण उपलब्ध कराना तथा उन्हें रोजगारोन्मुख एवं समाजोपयोगी शिक्षा प्रदान करना है। उन्होंने कहा कि प्रवेश संबंधी दिशा-निर्देशों का पालन करते हुए विद्यार्थी समय रहते आवेदन प्रक्रिया पूरी करें। प्रशासन ने स्पष्ट किया है कि फिलहाल स्नातक प्रथम सेमेस्टर की प्रवेश प्रक्रिया प्रारंभ की गई है। स्वशासी कक्षाओं के परीक्षा परिणाम घोषित होने के बाद क्रमशः अन्य कक्षाओं एवं स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों के प्रवेश संबंधी दिशा-निर्देश भी जारी किए जाएंगे। महाविद्यालय ने विद्यार्थियों और अभिभावकों से अपील की है कि वे प्रवेश, मेरिट सूची, दस्तावेज सत्यापन एवं शुल्क जमा करने संबंधी जानकारी केवल महाविद्यालय की आधिकारिक वेबसाइट और सूचना पट्ट से ही प्राप्त करें तथा किसी भी भ्रामक सूचना पर विश्वास न करें।

छत्तीसगढ़ के उभरते सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में मोहम्मद जीशान खान सम्मानित

-संवाददाता-

अम्बिकापुर,31 मई 2026 (घटती-घटना)। सामाजिक क्षेत्र में लगातार सक्रिय रहकर जनहित के मुद्दों को उठाने वाले युवा सामाजिक कार्यकर्ता मोहम्मद जीशान खान को 'साउथ एशिया जनसरोकार सम्मान 2026' से सम्मानित किया गया। यह सम्मान उन्हें अंबिकापुर स्थित राजमोहनी देवी भवन में आयोजित एक गरिमामय समारोह में प्रदान किया गया। कार्यक्रम का आयोजन जन सरोकार ट्रस्ट द्वारा किया गया, जिसमें समाज सेवा, शिक्षा, मानवाधिकार, महिला सशक्तिकरण एवं जनकल्याण के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान देने वाले व्यक्तियों को सम्मानित किया गया। समारोह में विभिन्न राज्यों से आए सामाजिक कार्यकर्ताओं, बुद्धिजीवियों एवं जनप्रतिनिधियों की उपस्थिति रही। इस अवसर पर मोहम्मद जीशान खान को 'छत्तीसगढ़ के उभरते हुए सामाजिक कार्यकर्ता' के रूप में सम्मानित करते हुए प्रशस्ति पत्र एवं स्मृति चिन्ह भेंट किया गया। मोहम्मद जीशान खान लंबे समय से आम जनता की समस्याओं को प्रशासन

तक पहुंचाने, सामाजिक जागरूकता फैलाने तथा जरूरतमंद लोगों की सहायता के लिए सक्रिय भूमिका निभाते रहे हैं। क्षेत्र में शिक्षा, स्वास्थ्य, युवाओं के मार्गदर्शन तथा सामाजिक समरसता को बढ़ावा देने के लिए उनके द्वारा किए गए कार्यों की सराहना की गई। जनहित के विभिन्न मुद्दों पर उनकी सक्रियता और समाज के प्रति समर्पण को देखते हुए उन्हें इस प्रतिष्ठित सम्मान के लिए चयनित किया गया। सम्मान प्राप्त करने के बाद मोहम्मद जीशान खान ने कहा कि यह सम्मान केवल उनका नहीं बल्कि उन सभी लोगों का है जो समाज में सकारात्मक बदलाव लाने के लिए निरंतर कार्य कर रहे हैं। उन्होंने जन सरोकार ट्रस्ट का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि यह सम्मान उन्हें समाज सेवा के क्षेत्र में और अधिक जिम्मेदारी एवं समर्पण के साथ कार्य करने की प्रेरणा देगा। कार्यक्रम में वक्ताओं ने कहा कि समाज को ऐसे युवाओं की आवश्यकता है जो व्यक्तिगत स्वार्थ से ऊपर उठकर जनहित के लिए कार्य करें।

मोहम्मद जीशान खान ने अपने कार्यों के माध्यम से यह साबित किया है कि युवा शक्ति यदि सही दिशा में प्रयास करे तो समाज में सकारात्मक परिवर्तन संभव है। उनके सम्मानित होने पर क्षेत्र के सामाजिक संगठनों, पत्रकारों, जनप्रतिनिधियों, मित्रों एवं शुभचिंतकों ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए उन्हें बधाई दी है। लोगों ने उम्मीद जताई कि वे आगे भी समाज के कमजोर एवं जरूरतमंद वर्गों की आवाज बनकर जनसेवा के कार्यों को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाएंगे। यह सम्मान न केवल मोहम्मद जीशान खान की सामाजिक प्रतिबद्धता का प्रमाण है, बल्कि छत्तीसगढ़ में युवाओं द्वारा किए जा रहे सकारात्मक सामाजिक कार्यों की भी पहचान है। इससे अन्य युवाओं को भी समाज सेवा के क्षेत्र में आगे आने और जनहित के लिए कार्य करने की प्रेरणा मिलेगी।

पदोन्नत अधिकारियों का हुआ स्टार अलंकरण

वन विभाग के समारोह में डीएफओ ने दी शुभकामनाएं,बढ़ी जिम्मेदारियों के निर्वहन पर दिया जोर

-संवाददाता-

उदयपुर,31 मई 2026 (घटती-घटना)। वन परिक्षेत्र उदयपुर में पदस्थ विनोद सिंह के वनपाल से उप वन क्षेत्रपाल तथा बुधसाय राजवाड़े के वनरक्षक से वनपाल पद पर पदोन्नत होने के उपलक्ष्य में रविवार को रामगढ़ स्थित चेतना शिविर में स्टार अलंकरण समारोह आयोजित किया गया। समारोह में वन मंडलाधिकारी सरगुजा अभिषेक जोगावत एवं वन परिक्षेत्र अधिकारी उदयपुर फेंकू चौबे ने पदोन्नत अधिकारियों को स्टार अलंकरण कर सम्मानित किया तथा शुभकामनाएं दीं। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि पदोन्नति केवल सम्मान ही नहीं, बल्कि बढ़ी हुई जिम्मेदारियों का भी प्रतीक है। अधिकारियों को अपने दायित्वों का बेहतर निर्वहन करते हुए विभाग की कार्यक्षमता को और मजबूत बनाना चाहिए। सादगीपूर्ण माहौल में आयोजित कार्यक्रम में वन कर्मचारी संघ के जिला अध्यक्ष राजेश बराडे, ब्लॉक अध्यक्ष बसंत राजवाड़े, सेवानिवृत्त वरिष्ठ लिपिक गंगा राम शर्मा, वन परिक्षेत्र अधिकारी रामनिवास दहायत तथा परिक्षेत्र सहायक लखनपुर विश्वास दास वैष्णव सहित बड़ी संख्या में अधिकारी एवं कर्मचारी मौजूद रहे।

सड़क हादसे में बाइक सवार युवक की मौत

-संवाददाता-

अम्बिकापुर,31 मई 2026 (घटती-घटना)। करंजवार जंगल में 30 मई की रात को बाइक व स्कूटी में भीड़ंत हो गई। हादसे में बाइक सवार युवक गंभीर रूप से जख्मी हो गया था। इलाज के दौरान मेडिकल कॉलेज अस्पताल में उसकी मौत हो गई। वह गंगा दशहरा देखकर वापस घर लौट रहा था। जानारी के अनुसार अमलेश पिता जगदीश गोड़ उम्र 20 वर्ष ग्राम सरनापारा प्रतापपुर का रहने वाला था। वह 30 मई को बाइक क्रमांक सीजी 15 ईके 5461 से दोस्त विकास के साथ गंगा देशहरा देखने ग्राम सरहरी गया था। वहां से अमलेश अकेले वापस घर लौट रहा था।

विश्व दुग्ध दिवस आज : नियमित रूप से दूध का सेवन स्वास्थ्य के लिए लाभकारी

पशुपालकों की भूमिका और दुग्ध उत्पादन के महत्व पर जोर...

-संवाददाता-

अम्बिकापुर,31 मई 2026 (घटती-घटना)। विश्व दुग्ध दिवस हर वर्ष 1 जून को मनाया जाता है। इसकी शुरुआत वर्ष 2001 में संयुक्त राष्ट्र की खाद्य एवं कृषि संगठन (एफएओ) द्वारा की गई थी। इस दिवस का उद्देश्य दूध के पोषण संबंधी महत्व, डेयरी उद्योग के योगदान और पशुपालकों की भूमिका के प्रति लोगों को जागरूक करना है। अतिरिक्त उपसंचालक पशुपालन विभाग डॉ. सी.के. मिश्रा ने बताया कि दूध एक आदर्श एवं संपूर्ण खाद्य

पदार्थ है, जिसमें शरीर के लिए आवश्यक प्रोटीन, कैल्शियम, विटामिन, खनिज लवण और ऊर्जा प्रचुर मात्रा में पाई जाती है। नियमित रूप से दूध का सेवन बच्चों, युवाओं, गर्भवती महिलाओं और बुजुर्गों के स्वास्थ्य के लिए लाभकारी है। इससे हड्डियां मजबूत होती हैं और शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता भी बढ़ती है। उन्होंने बताया कि भारत विश्व का सबसे बड़ा दुग्ध उत्पादक देश है। देश की अर्थव्यवस्था में डेयरी क्षेत्र का महत्वपूर्ण योगदान है। लाखों किसान और पशुपालक दुग्ध उत्पादन के माध्यम से अपनी आजीविका चला रहे हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में डेयरी व्यवसाय रोजगार सृजन के साथ किसानों की आय बढ़ाने में भी अहम भूमिका निभा रहा है। डॉ. मिश्रा ने बताया कि छत्तीसगढ़ सरकार दुग्ध उत्पादन बढ़ाने के लिए कई नवाचार कर रही है। इनमें सेक्स सॉर्टेड सीमेन से कृत्रिम गर्भाधान की तकनीक विशेष रूप से प्रभावी साबित हो रही है। इस तकनीक के माध्यम से लगभग 90 प्रतिशत तक बछियों का जन्म होता है, जिससे भविष्य में दुग्ध उत्पादन बढ़ाने में मदद मिलती है। उन्होंने कहा कि सरगुजा जिले में इस तकनीक को सबसे पहले अपनाया गया था और अब इसे पूरे प्रदेश में लागू किया जा चुका है। इससे पशुपालकों की आय में वृद्धि होने के साथ दुग्ध उत्पादन को भी बढ़ावा मिला है। डॉ. मिश्रा ने पशुपालकों से पशुओं की नियमित देखभाल, संतुलित आहार, समय पर टीकाकरण और स्वच्छ दुग्ध उत्पादन पद्धतियों को अपनाने की अपील की। उन्होंने कहा कि दूध केवल पोषण का स्रोत ही नहीं, बल्कि किसान समृद्धि और आर्थिक विकास का भी महत्वपूर्ण आधार है। उन्होंने कहा कि विश्व दुग्ध दिवस स्वस्थ समाज, बेहतर पोषण, किसान कल्याण और सतत विकास के प्रति हमारी प्रतिबद्धता का प्रतीक है। दूध के महत्व को समझते हुए इसके स्वच्छ उत्पादन और संतुलित उपयोग को बढ़ावा देना समय की आवश्यकता है।

डॉ.प्रयागनाथ राजवाडे को भावभीनी विदाई

स्वास्थ्य सेवाओं में योगदान को सराहा,कर्मचारियों ने किया सम्मान.....

-संवाददाता-

अम्बिकापुर,31 मई 2026 (घटती-घटना)। सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र दरिमा के पूर्व खंड चिकित्सा अधिकारी (बीएमओ) डॉ. प्रयागनाथ राजवाडे के सेवानिवृत्ति उपरांत सम्मान एवं विदाई समारोह का आयोजन प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र भफौली में किया गया। समारोह में स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों,कर्मचारियों और स्वास्थ्य कर्मचारी संघ के पदाधिकारियों ने उन्हें भावभीनी विदाई दी। कार्यक्रम में छत्तीसगढ़ प्रदेश स्वास्थ्य कर्मचारी संघ के प्रांताध्यक्ष अनिल पाण्डेय, जिलाध्यक्ष धनेश प्रताप सिंह, ऋषिकेश कुशवाहा,किरण सोनी,सी.के. सिन्हा,डॉ. जनेश्वर सिंह, सविता शर्मा, उषा गुप्ता,अंजनी दीक्षित, अमलेन्द्र सिन्हा,सदन सिंह और बालकृष्ण पैकरा सहित बड़ी संख्या में अधिकारी एवं कर्मचारी

उपस्थित रहे। वक्ताओं ने कहा कि डॉ. राजवाडे ने अपने लगभग 19 वर्षों के कार्यकाल में स्वास्थ्य सेवाओं को मजबूत बनाने, ग्रामीण क्षेत्रों तक चिकित्सा सुविधाएं पहुंचाने और स्वास्थ्य संस्थानों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनके नेतृत्व में कई स्वास्थ्य योजनाओं का प्रभावी क्रियान्वयन हुआ, जिससे क्षेत्र के लोगों को बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं मिलीं। समारोह में उनके सरल, सौम्य और कर्मठ व्यक्तित्व की सराहना करते हुए कहा गया कि उन्होंने हमेशा मरीजों और कर्मचारियों के हितों को प्राथमिकता दी। उनकी सेवाओं और कार्यशैली को लंबे समय तक याद रखा जाएगा। इस अवसर पर डॉ. राजवाडे का शॉल, श्रीफल, पुष्पहार और स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मान किया गया। सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से कर्मचारियों ने उनके प्रति सम्मान और शुभकामनाएं व्यक्त कीं। अपने संबोधन में डॉ. प्रयागनाथ राजवाडे ने अधिकारियों,कर्मचारियों और क्षेत्रवासियों का आभार जताते हुए कहा कि सेवाकाल के दौरान उन्हें सभी का सहयोग और स्नेह मिला, जिसे वे सदैव स्मरण रखेंगे। कार्यक्रम का संचालन हेमंत सिंह मरावी ने किया, जबकि आभार प्रदर्शन अनिल पाण्डेय ने किया। समारोह का समापन डॉ. राजवाडे के स्वस्थ, सुखमय एवं दीर्घायु जीवन की कामना के साथ हुआ।

भकुरा में 'मन की बात' का 134वां एपिसोड सुना गया,स्वास्थ्य शिविर व जन-चौपाल का आयोजन

-संवाददाता-

अम्बिकापुर,31 मई 2026 (घटती-घटना)। जिला पंचायत क्षेत्र क्रमांक-01 अंतर्गत ग्राम पंचायत भकुरा के पंचायत भवन में रविवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के लोकप्रिय रेडियो कार्यक्रम 'मन की बात' के 134वें एपिसोड का सामूहिक श्रवण किया गया। कार्यक्रम में जिला पंचायत सदस्य दिव्या सिंह सिसोदिया मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुईं। बड़ी संख्या में ग्रामीणों ने कार्यक्रम में भाग लेकर प्रधानमंत्री के विचारों को सुना। इस अवसर पर ग्रामीणों के लिए निःशुल्क चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया,

जिसमें स्वास्थ्यकर्मियों द्वारा स्वास्थ्य परीक्षण कर आवश्यक परामर्श एवं उपचार प्रदान किया गया। शिविर में बड़ी संख्या में ग्रामीणों ने स्वास्थ्य सेवाओं का लाभ उठाया। कार्यक्रम के दौरान आयोजित जन-चौपाल में ग्रामीणों ने पेयजल, सड़क, बिजली, स्वास्थ्य सहित विभिन्न स्थानीय समस्याओं को जनप्रतिनिधियों के समक्ष रखा। जिला पंचायत सदस्य दिव्या सिंह सिसोदिया ने ग्रामीणों की समस्याओं को गंभीरता से सुनते हुए उनके निराकरण के लिए आवश्यक पहल करने का आश्वासन दिया।

CMYK

'प्रथम' का पोस्टमार्टम...संभाग में पहले अटल आरोग्य लैब किस जिले का माने,कोरिया या एमसीबी?

उद्घाटन एक दिन में दो,लेकिन 'संभाग का पहला' बनने की होड़ ने सरकारी शब्दावली को ही आईसीयू में पहुंचा दिया

- 'प्रथम' का ऐसा प्रेशर की कोरिया में पहले फीता कटा,एमसीबी बन गया संभाग का पहला लैब!
- अटल आरोग्य लैब का उद्घाटन या शब्दों का ऑपरेशन? 'प्रथम' पर मचा राजनीतिक पोस्टमार्टम
- एक दिन,दो उद्घाटन और दो-दो 'प्रथम'—स्वास्थ्य विभाग का गणित हुआ वायरल
- पहले कोरिया,फिर एमसीबी...आखिर संभाग का असली पहला अटल आरोग्य लैब कौन?
- बैनर में लिखे एक शब्द ने बिगाड़ दिया पूरा सरकारी हिसाब,'प्रथम' पर छिड़ी बहस
- फीता पहले कोरिया में कटा,लेकिन 'पहला' एमसीबी कैसे बन गया?
- अटल आरोग्य लैब से ज्यादा चर्चा 'प्रथम' शब्द की,जनता ने कर दिया भाषाई एक्स-रे
- संभाग का पहला लैब कौन सा? उद्घाटन से ज्यादा पोस्टर बना चर्चा का विषय
- सरकारी बैनर का कमाल,एक ही दिन में संभाग को मिल गए दो-दो 'पहले' लैब
- लैब शुरू होने से पहले शब्दों की जांच शुरू,'प्रथम' पर स्वास्थ्य विभाग घिरा

-संवाददाता-
कोरिया/एमसीबी,31 मई 2026
(घटती-घटना)।

सरकारी कार्यक्रमों में कई बार फीता छोटा पड़ जाता है,माला कम पड़ जाती है,कुर्सियां टूट जाती हैं,लेकिन इस बार मामला कुछ अलग था, यहां न फीते की कमी हुई, न मंच की, न भाषणों की, यहां तो पूरा विवाद सिर्फ एक शब्द पर खड़ा हो गया–'प्रथम'। और यह 'प्रथम' ऐसा निकला कि उसने स्वास्थ्य विभाग के उद्घाटन समारोह को सीधे भाषाई पोस्टमार्टम में बदल दिया, मामला अटल आरोग्य लैब के उद्घाटन का था,स्वास्थ्य मंत्री श्याम बिहारी जायसवाल एक ही दिन में दो जिलों में कोरिया और एमसीबी में अटल आरोग्य लैब का उद्घाटन करने पहुंचे, कार्यक्रम पूरे उत्साह और सरकारी गरिमा के साथ संपन्न हुए,लेकिन जनता और आलोचक वह प्रजाति है जो मंच पर लगे पर्दे से ज्यादा उसकी स्पेलिंग पर नजर रखती है, बस फिर क्या था, नजर बैनर पर गई और पूरा प्रथम कांड शुरू हो गया।

पहले फीता कोरिया में कटा, लेकिन 'प्रथम' एमसीबी बन गया!

जानकारी के मुताबिक स्वास्थ्य मंत्री ने सबसे पहले कोरिया जिले में अटल आरोग्य लैब का उद्घाटन किया, वहां कार्यक्रम हुआ, फीता कटा, भाषण हुए, तालियां बजीं और सब सामान्य तरीके से आगे बढ़ गया,लेकिन असली खेल तब शुरू हुआ जब मंत्री जी एमसीबी जिले पहुंचे, एमसीबी जिले के कार्यक्रम में मंच पर लगे बैनर में बड़े गर्व से लिखा गया...'संभाग के प्रथम अटल आरोग्य लैब का उद्घाटन ',बस...यही शब्द आलोचकों की आंख में ऐसा चुभा जैसे सरकारी फाइल में लाल पेन की टिप्पणी, फिर क्या था, सोशल मीडिया से लेकर चाय दुकानों तक चर्चा शुरू हो गई कि आखिर 'प्रथम' कौन? कोरिया या एमसीबी? लोगों ने तुरंत गणित लगाया, अगर उद्घाटन पहले कोरिया में हुआ, तो संभाग का पहला लैब तो वही हुआ, फिर एमसीबी में 'प्रथम' कैसे लिख दिया गया? और अगर एमसीबी ही प्रथम है, तो फिर कोरिया में क्या हुआ, ट्रायल रन?

जनता की नजर एक्स-रे मशीन से भी तेज...

सरकारी विभाग कई बार यह मानकर चलते हैं कि जनता केवल भाषण सुनती है, लेकिन आज की जनता पोस्टर पढ़ती है, फोटो जूम करती है, तारीख मिलाती है और फिर शब्दों का डीएनए टेस्ट भी कर देती है, यही कारण है कि इस छोटे से शब्द ने पूरे कार्यक्रम का फोकस बदल दिया, लोग कहने लगे कि स्वास्थ्य विभाग की मशीनें शुरू होने से पहले ही विभागीय शब्दावली का सीटी स्कैन शुरू हो गया, कुछ लोगों ने मजाकिया अंदाज में कहा कि अब संभाग में 'प्रथम' भी दो-दो हो गए हैं, जैसे सरकारी योजनाओं में कभी-कभी एक ही सड़क तीन बार बन जाती है, वैसे ही यहां एक ही दिन में दो 'पहले' पैदा हो गए।

कोरिया वालों ने बचा लिया खुद को...

दिलचस्प बात यह रही कि कोरिया जिले के कार्यक्रम में 'संभाग का प्रथम' जैसे शब्दों का उपयोग नहीं किया गया, वहां सिर्फ उद्घाटन और सौगात की बात हुई, यानी कोरिया वालों ने शब्दों के दलदल में पैर रखने से बचा लिया, लेकिन एमसीबी जिले के बैनर डिजाइनरों ने शायद उत्साह में ऐसा तीर चला दिया जो सीधे सोशल मीडिया के अदालत में पहुंच गया, अब सवाल यह उठ रहा है कि आखिर यह शब्द किसने लिखा? किस आधार पर लिखा? और क्या किसी ने यह देखने की जरूरत नहीं समझी कि मंत्री जी उसी दिन पहले एक और जिले में यही लैब उद्घाटित कर चुके हैं? सरकारी कार्यक्रमों में अक्सर भाषणों से ज्यादा बैनर बोल जाते हैं, यहां भी वही हुआ, मंत्री जी शायद अपने भाषण और कार्यक्रमों में व्यस्त रहे होंगे, लेकिन मंच के पीछे लगे एक शब्द ने पूरा ध्यान खींच लिया।

'प्रथम' का सरकारी गणित–अब सवाल यह है कि प्रथम आखिर तय कैसे होताहै? जहां पहले उद्घाटन हो या जहां ज्यादा बड़ा पोस्टर लगा हो? अगर समय के हिसाब से देखा जाए तो कोरिया जिले का उद्घाटन पहले हुआ, यानी तकनीकी रूप से पहला अटल आरोग्य लैब वही माना जाएगा,लेकिन अगर एमसीबी के बैनर को सही माना जाए, तो फिर कोरिया वाले कार्यक्रम को क्या कहा जाए?'पूर्वाभ्यास '? कुछ लोगों ने तो व्यंग्य में कहना शुरू कर दिया कि सरकारी विभागों में प्रथम का भी अपना अलग विभाग होना चाहिए जहां यह तय किया जाए कि कौन सा उद्घाटन असली पहला है और कौन सा भावनात्मक पहला।

मंत्री की गलती नहीं,लेकिन सवाल विभाग पर....

यह कहना उचित नहीं होगा कि इसमें स्वास्थ्य मंत्री की कोई व्यक्तिगत गलती है, मंच पर मंत्री जी को हर बैनर का शब्द-दर-शब्द निरीक्षण करने का समय नहीं होता, उनका काम योजनाओं की घोषणा और उद्घाटन करना होता है,लेकिन विभागीय अधिकारियों और आयोजन टीम की जिम्मेदारी जरूर बनती है कि मंच पर लिखे शब्द तथ्यात्मक रूप से सही हों, क्योंकि आज के दौर में छोटी सी त्रुटि भी बड़े राजनीतिक व्यंग्य का कारण बन जाती है, और फिर जनता भी अब सिर्फ कार्यक्रम नहीं देखती, बल्कि 'प्रूफ रीडिंग' भी करती है।

असली सवाल लैब चलेगी भी या नहीं?

हालांकि इस पूरे 'प्रथम विवाद' के बीच एक बड़ा सवाल कहीं पीछे छूट गया—क्या ये लैब पूरी क्षमता से काम करेंगी? जनता के लिए सबसे महत्वपूर्ण यह नहीं है कि पहला उद्घाटन कहां हुआ, असली मुद्दा यह है कि मशीनें चालू रहें, जांच समय पर हो, रिपोर्ट मिले और मरीजों को लाभ पहुंचे, क्योंकि सरकारी स्वास्थ्य योजनाओं का इतिहास यह भी रहा है कि उद्घाटन के समय मशीनें चमकती हैं, लेकिन कुछ महीनों बाद उन पर धूल की मोटी परत जम जाती है, कई जगह टेक्नीशियन नहीं होते, कहीं बिजली नहीं रहती, कहीं सर्वर डाउन रहता है, ऐसे में जनता कह रही है कि 'प्रथम' की लड़ाई बाद में कर लीजिए, पहले यह सुनिश्चित कर लीजिए कि लैब 'स्थायी' भी रहे।

विभागीय उत्साह या शब्दों की बीमारी?–अब यह भी जरूरी नहीं कि इसमें कोई बड़ी साजिश हो, संभव है कि यह केवल विभागीय जल्दबाजी या शब्दों की समझ की कमी का मामला हो,कई बार सरकारी कार्यक्रमों में बैनर ऐसे तैयार होते हैं जैसे रात में परीक्षा से पहले छात्र प्रोजेक्ट बनाता है...जल्दी में,बिना दोबारा पढ़े, लेकिन जनता अब इतनी सतर्क हो चुकी है कि वह छोटी गलती को भी बड़ा मुद्दा बना देती है,खासकर तब जब मामला सरकारी दावे और 'पहले' होने की प्रतिष्ठा का हो, क्योंकि सरकारी राजनीति में'पहला'शब्द बहुत महत्वपूर्ण होता है, पहला अस्पताल, पहला मेडिकल कॉलेज,पहली सड़क,पहला एयरपोर्ट इन शब्दों से राजनीतिक क्रेडिट जुड़ा होता है। ऐसे में जब दो जिले एक ही दिन 'पहले' बन जाएं तो भ्रम होना तय है।

संभाग में एक दिन में दो सौगात, लेकिन शब्दों ने बिगाड़ दिया गणित

फिलहाल स्थिति यही है कि संभाग को एक ही दिन में दो अटल आरोग्य लैब की सौगात मिली है, यह निश्चित रूप से स्वास्थ्य सुविधाओं के विस्तार की दिशा में सकारात्मक कदम माना जाएगा,लेकिन सरकारी शब्दों के चयन ने ऐसा भ्रम पैदा कर दिया कि अब लोग लैब से ज्यादा 'प्रथम' का एक्स-रे कर रहे हैं, क्योंकि जनता की नजर अब इतनी तेज हो चुकी है कि वह सिर्फ फीता कटते नहीं देखती, बल्कि बैनर की भाषा, तारीख और क्रम का भी पोस्टमार्टम कर देती है, और इस पूरे मामले ने एक बात फिर साबित कर दी...सरकारी कार्यक्रमों में कभी-कभी सबसे बड़ा विवाद मशीनों से नहीं,शब्दों से पैदा होता है।

सोशल मीडिया यूनिवर्सिटी का नया शोध विषय

जैसे ही यह मामला सामने आया,सोशल मीडिया की अनौपचारिक यूनिवर्सिटी सक्रिय हो गई,कुछ लोग स्क्रीनशॉट लेकर तुलना करने लगे, किसी ने टाइमिंग निकाली,किसी ने फोटो का क्रम देखा, तो किसी ने यह तक कह दिया कि अब संभाग में डबल प्रथम योजना चल रही है, एक यूजर ने मजाक में लिखा यह अटल आरोग्य लैब नहीं, क्वांटम लैब है, एक ही समय में दो जगह पहला हो सकता है,दूसरे ने लिखा स्वास्थ्य विभाग जांच मशीन से पहले शब्दों की जांच करना सीख ले, तीसरे ने कहा अब उद्घाटन का भी ओटीपी आएगा क्या? ताकि पता चल सके असली पहला कौन है!

संत गहिरा गुरु विश्वविद्यालय में पी.जी. डिप्लोमा इन प्रोटेक्शन ऑफ चाइल्ड राइट्स पाठ्यक्रम प्रारंभ

-संवाददाता-
अम्बिकापुर,31 मई 2026
(घटती-घटना)।

संत गहिरा गुरु विश्वविद्यालय, सरगुजा, अम्बिकापुर द्वारा विधि विभाग के अंतर्गत एक वर्षीय (दो सेमेस्टर) पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा इन प्रोटेक्शन ऑफ चाइल्ड राइट्स पाठ्यक्रम शैक्षणिक सत्र 2026-27 से प्रारंभ किया जा रहा है। विश्वविद्यालय प्रशासन के अनुसार यह पाठ्यक्रम बाल अधिकारों के संरक्षण, संवर्धन एवं उनसे संबंधित विधिक प्रावधानों के अध्ययन के उद्देश्य से तैयार किया गया है। पाठ्यक्रम का प्रस्तावित अध्यादेश एवं पाठ्यक्रम संरचना विश्वविद्यालय की विधि विषयक अध्ययन मंडल द्वारा अनुमोदित किए जाने के पश्चात विद्या परिषद एवं कार्य परिषद से स्वीकृत हो चुके हैं। पाठ्यक्रम के प्रथम सेमेस्टर में प्रवेश हेतु कुल 30 सीटें निर्धारित की गई हैं। इच्छुक अभ्यर्थी विश्वविद्यालय के पोर्टल पर ऑनलाइन

पंजीयन एवं आवेदन कर सकते हैं। ऑनलाइन पंजीयन एवं आवेदन की प्रक्रिया 29 मई 2026 से प्रारंभ कर दी गई है। विश्वविद्यालय प्रशासन ने बताया कि वर्तमान समय में बाल अधिकारों की सुरक्षा एवं संरक्षण से संबंधित विषयों का महत्व लगातार बढ़ रहा है। ऐसे में यह डिप्लोमा पाठ्यक्रम विद्यार्थियों, सामाजिक कार्यकर्ताओं, शिक्षकों, विधि व्यवसाय से जुड़े व्यक्तियों तथा बाल संरक्षण के क्षेत्र में कार्यरत अभ्यर्थियों के लिए विशेष रूप से उपयोगी सिद्ध होगा। प्रवेश एवं अन्य विस्तृत जानकारी के लिए अभ्यर्थी विश्वविद्यालय की आधिकारिक वेबसाइट का अवलोकन कर सकते हैं।

अंतर्राष्ट्रीय धूम्रपान निषेध दिवस पर युवाओं को नशामुक्त जीवन का दिया गया संदेश

-संवाददाता-
अम्बिकापुर,31 मई 2026
(घटती-घटना)।

अंतर्राष्ट्रीय धूम्रपान निषेध दिवस के अवसर पर समाज कल्याण विभाग, जिला सरगुजा द्वारा पी.जी. कॉलेज अम्बिकापुर में जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि महापौर श्रीमती मंजूषा भगत रहीं। कार्यक्रम की प्रस्तावना उप संचालक समाज कल्याण श्री व्ही.के. उके द्वारा प्रस्तुत की गई। इस अवसर पर महापौर श्रीमती भगत ने अपने उद्बोधन में कहा कि तंबाकू सेवन न केवल स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है, बल्कि यह पारिवारिक सुख-शांति एवं

सामाजिक जीवन को भी प्रभावित करता है। उन्होंने कहा कि तंबाकू विभिन्न गंभीर बीमारियों का प्रमुख कारण है तथा व्यक्ति की प्रगति में बाधक बनता है। बेहतर और स्वस्थ समाज के निर्माण के लिए तंबाकू एवं अन्य नशीले पदार्थों के सेवन से दूर रहना आवश्यक है। कार्यक्रम में गायत्री परिवार, प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय, नवा बिहान तथा राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) के प्रतिनिधियों ने भी अपने विचार व्यक्त करते हुए तंबाकू सेवन से होने वाले दुष्परिणामों की जानकारी दी और युवाओं को नशामुक्त जीवन अपनाने के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम के दौरान महापौर द्वारा नशामुक्त भारत अभियान के अंतर्गत उपस्थित विद्यार्थियों एवं नागरिकों को नशा न करने की शपथ दिलाई गई। इस अवसर पर जनप्रतिनिधिगण, महाविद्यालय के विद्यार्थी तथा समाज कल्याण विभाग के अधिकारी-कर्मचारी उपस्थित रहे।

तेज रफ्तार हाइवा की टक्कर से युवक की मौत,मां गंभीर घायल

-संवाददाता-
सीतापुर,31 मई 2026 (घटती-घटना)।

अंबिकापुर-रायगढ़ नेशनल हाईवे क्रमांक-43 पर शनिवार शाम हुए दर्दनाक सड़क हादसे में एक 19 वर्षीय युवक की मौत हो गई, जबकि उसकी मां गंभीर रूप से घायल हो गई। घायल महिला का इलाज मेडिकल कॉलेज अस्पताल अंबिकापुर में जारी है। जानकारी के अनुसार, सीतापुर थाना क्षेत्र के ग्राम महेशपुर निवासी आशीष तिर्की (19) अपनी मां के साथ किसी कार्य से सीतापुर आया था। शनिवार शाम करीब 5:30 बजे वह बाइक क्रमांक सीजी 15 डीपी 1731 से अपनी मां को लेकर वापस गांव लौट रहा था। सीतापुर से लगे ग्राम बमलाया के पास पहुंचते ही अंबिकापुर की ओर से तेज गति से आ रहे हाइवा वाहन क्रमांक बीआर 25 जीए 4085 ने उनकी बाइक को जोरदार टक्कर मार दी। टक्कर इतनी भीषण थी कि मां-बेटे सड़क पर गिर पड़े। हादसे में आशीष तिर्की के सिर में गंभीर चोट आई, जिससे उसकी मौके पर ही मौत हो गई। वहीं उसकी मां गंभीर रूप से घायल हो गई। घटना की सूचना मिलते ही सीतापुर पुलिस मौके पर पहुंची और दोनों को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र सीतापुर ले जाया गया। वहां चिकित्सकों ने जांच के बाद आशीष को मृत घोषित कर दिया, जबकि उसकी मां की गंभीर स्थिति को देखते हुए प्राथमिक उपचार के बाद मेडिकल कॉलेज अस्पताल अंबिकापुर रेफर कर दिया गया। पुलिस ने दुर्घटनाकारी हाइवा को जब्त कर चालक के खिलाफ भारतीय न्याय संहिता की धारा 281, 125(ए) एवं 106(1) के तहत मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

कार्यालय अनुविभागीय अधिकारी (रा0) धौरपुर,जिला सरगुजा (छ0ग0)

ईश्तहार

धौरपुर,दिनांक 26/05/2026

क्रमांक/100/खाद्य/अ0वि0अ0/2024 एतद् द्वारा सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि शासकीय उचित मूल्य दुकान कुन्दीकलां का संचालन आदिम जाति सेवा सहकारी समिति कुन्दीकलां के द्वारा किया जा रहा है। समिति प्रबंधक द्वारा उचित मूल्य दुकान सेमरडीह का संचालन अन्य माध्यम से कराये जाने का निवेदन किया गया है।

अतएव ग्राम पंचायत सेमरडीह, विकासखण्ड लुण्ड्रा के शासकीय उचित मूल्य दुकान के संचालन हेतु इच्छुक एजेंसी जो छ0ग0 सार्वजनिक वितरण प्रणाली (नियंत्रण) आदेश 2016 के अंतर्गत संचालन हेतु पात्र हैं, वे अपना आवेदन पत्र विहित प्रारूप में सम्पूर्ण विवरण एवं दस्तावेज यथा पंजीयन प्रमाण पत्र प्रस्ताव, कार्यवाही पंजी, बैक पास की सत्यापित छायाप्रति के साथ आवेदन पत्र दिनांक 12/06/2026 तक कार्यालय अनुविभागीय अधिकारी (रा0) धौरपुर में जमा कर सकते हैं। समय-सीमा के बाद प्राप्त आवेदन-पत्रों पर विचार नहीं किया जावेगा । आज दिनांक 26/05/2026 को मेरे हस्ताक्षर व पदमुद्रा से जारी।

(विनय कुमार सोनी)
अनुविभागीय अधिकारी (रा.)
धौरपुर,सरगुजा,छ0ग0

जी.नं.-262701065/7

न्यायालय तहसीलदार रामानुजगंज जिला बलरामपुर-रामानुजगंज,छ0ग0

क्र./926/वा0/तह0/2026
रामानुजगंज,दिनांक -21/05/2026

ईश्तहार

एतद् द्वारा आम जनता ग्राम-नगर रामानुजगंज को सूचित किया जाता है कि विषयांन्तर्गत लेख है कि आवेदक संतोष कुमार पान्डेय पिता राजमनी पान्डेय जाति ब्राहम्ण वर्ग (सामान्य) निवासी रामानुजगंज थाना व तहसील रामानुजगंज जिला बलरामपुर-रामानुजगंज (छ0ग0) के द्वारा के अपने पुत्री दिव्या पान्डेय के आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के लिए आय संपत्ति प्रमाण-पत्र प्राप्त करने हेतु आवेदन प्रस्तुत किया गया है।
अतः उक्त संबंध में जिस किसी भी व्यक्ति/संस्था को कोई आपत्ति हो तो वह स्वयं या अपने किसी वैध प्रतिनिधि के माध्यम से पेशी दिनांक-11/6/2026 तक इस न्यायालय में दावा आपत्ति प्रस्तुत कर सकता है। निर्धारित अवधि के पश्चात् प्राप्त आपत्तियों पर कोई विचार नही किया जायेगा।

आज दिनांक 21/05/2026 को मेरे हस्ताक्षर एवं न्यायालय की मुहर से जारी किया गया।

तहसीलदार
रामानुजगंज
(सील) जिला-बलरामपुर-रामानुजगंज

न्यायालय तहसीलदार लखनपुर जिला - सरगुजा,छ0ग0

ईश्तहार

लखनपुर दिनांक 19.05.2026

एतद् द्वारा आम जनता ग्राम पलगड़ी को सूचित किया जाता है कि आवेदक धनसाय आ.स्व.चमरा निवासी पलगड़ी की माता स्व.गेंदी की मृत्यु दिनांक 12.06.2011 को होना बताते हुए मृत्यु प्रमाण पत्र हेतू आवेदन प्रस्तुत किया है।
की मृत्यु होना बताते हुए जन्म / मृत्यु रजिस्टीकरण अधिनियम 1969 की धारा 13 (3) एवं छ.ग. जन्म मृत्यु रजि. नियम 2001 के नियम 9 नियत (3) के तहत मृत्यु प्रमाण पत्र हेतू आवेदक इस न्यायालय मे प्रस्तुत किया है जिस पर दिनांक 05.06.2026 को सुनवाई की जानी है।

आवेदक के द्वारा प्रस्तुत आवेदन पत्र मे किसी को कोई आपत्ति हो तो वो न्यायालय की पेशी 05.06.2026 तक अपना दावा / आपत्ति पेश कर सकता है । नियत तिथि के पश्चात प्राप्त दावा आपत्ति पर कोई विचार नहीं किया जावेगा ।

(सील) नायब तहसीलदार
लखनपुर,सरगुजा

न्यायालय नजूल अधिकारी सूरजपुर,जिला-सूरजपुर,छ0ग0

रा.प्र.क्र./अ-20(1)/2025-26

ईश्तहार

आगामी तिथि 19/06/2026-
इस सार्वजनिक ईश्तहार के जरिये सर्व साधारण आम जनता / संस्था / विभाग को एतद् द्वारा सूचित किया जाता है आवेदक प्रदीप कुमार साहू आ0 कन्हैयालाल साहू, उम्र लगभग 20 वर्ष निवासी वार्ड क्र 06 सेन्ट्रल बैंक गली सूरजपुर थाना व तहसील सूरजपुर जिला- सूरजपुर (छ0ग0) द्वारा आवेदन पत्र प्रस्तुत कर अपने स्वामित्व व अधिपत्य की नजूल भूमि प्लाट नम्बर 1878/2893/2 रकबा क्रमशः 4356 वर्गफीट भूमि का लीज दिनांक 31/03/2026 को समाप्त होने से आगामी 30 वर्ष के लिए लीज नवीनीकरण कराये जाने हेतु अनुरोध मा. न्यायालय अपर कलेक्टर सूरजपुर के समक्ष किया गया है। जो अग्रिम कार्यवाही हेतु एतद् न्यायालय को प्राप्त हुआ है। जिसके संबंध में प्रकरण इस न्यायालय में विचाराधीन लंबित है।
अतः इस संबंध में जिस किसी व्यक्ति/संस्था/विभाग को कोई दावा /आपत्ति हो तो वे स्वयं अथवा अपने अभिभाषक/ लीगल एजेंट के माध्यम से अपना दावा/आपत्ति दिनांक 19/06/2026 को न्यायालयीन अवधि में उपस्थित होकर प्रस्तुत कर सकतें है। नियत तिथि के बाद प्राप्त दावा/आपत्ति के संबंध में कोई विचार नहीं किया जायेगा ।

आज दिनांक 15/05/2026 को मेरे हस्ताक्षर एवं न्यायालय की पदमुद्रा से जारी किया गया।

(सील) नजूल अधिकारी
सूरजपुर

सड़क कम, समझौते ज्यादा! रामगढ़ कटवार-कोटाडोल निर्माण में भारी अनियमितता के आरोप...

पहले नक्सलियों ने रोकी सड़क, अब घटिया निर्माण ने बढ़ाई चिंता

रामगढ़ कटवार-कोटाडोल सड़क निर्माण में गुणवत्ता पर उठे सवाल,ग्रामीण बोले... सड़क कम, समझौते ज्यादा बिछ रहे हैं...

पीडब्ल्यूडी की सड़क या ठेकेदार का प्रयोगशाला प्रोजेक्ट? निर्माण गुणवत्ता पर ग्रामीणों का हमला

45 करोड़ की सड़क निर्माण में रोलर चला रहा, बिल बढ़ा रहा लेकिन सड़क की नींव

क्यों पड़ी कमजोर?

45 करोड़ की सड़क में 'कटिंग' का खेल! किनारों से मिट्टी काटकर भराव का आरोप

वारंटी के भरोसे सड़क या टूटने की पहले से तैयारी? रामगढ़ कटवार मार्ग पर सवाल

सड़क निर्माण में बचत का बुलडोजर! ग्रामीण बोले... पहली बारिश में खुल जाएगी पोल...

घाट कटिंग में खानापूर्ति,बेस में लापरवाही सड़क निर्माण पर उठे गंभीर सवाल

कागजों में मजबूत, जमीन पर कमजोर? 45 करोड़ की सड़क पर ग्रामीणों का आरोप

सड़क निर्माण या कमीशन का कम्पेक्शन? भरतपुर-सोनहत में 45 करोड़ का प्रोजेक्ट कटघरे में

-राजन पाण्डेय-

सोनहत/कोरिया,31 मई 2026 (घटती-घटना)। कभी इस इलाके में नक्सलियों के डर से सड़क नहीं बन पाई थी,तब सरकारें कहती थीं कि बंदूक विकास रोक रही है, अब हालात बदल गए हैं, नक्सली प्रभाव कम हुआ, सड़क निर्माण का रास्ता साफ हुआ,करोड़ों की स्वीकृति मिली,मशीनें पहुंचीं, डंपर गरजे, रोलर दौड़े और जनता ने सोचा कि अब शायद वर्षों की धूल,कीचड़ और उपेक्षा खत्म होगी,लेकिन सड़क निर्माण के शुरुआती दौर में ही जो तस्वीरें और आरोप सामने आने लगे हैं, उन्होंने ग्रामीणों को यह सोचने पर मजबूर कर दिया है कि कहीं विकास के नाम पर फिर से कोई नया खेल तो नहीं खेला जा रहा।

भरतपुर-सोनहत विधानसभा क्षेत्र में लगभग 45

करोड़ रुपये की लागत से रामगढ़ कटवार से कोटाडोल तक करीब 27 किलोमीटर लंबी सड़क का निर्माण कार्य शुरू हुआ है,यह सड़क सिर्फ डामर और मिट्टी का ढांचा नहीं है,बल्कि उन गांवों की उम्मीद है जो वर्षों तक अलगाव, खराब संपर्क और प्रशासनिक उपेक्षा का दंश झेलते रहे,लेकिन अब वही सड़क सवालों के गड्ढों में उतरती दिख रही है, ग्रामीणों का आरोप है कि सड़क निर्माण में गुणवत्ता को शुरुआती स्तर पर ही समायोजित किया जा रहा है,यानी जहां मजबूत बेस बनना चाहिए था, वहां बचत का बेस तैयार किया जा रहा है,जहां तकनीकी मानकों का पालन होना चाहिए था,वहां चलता है वाला रोलर चल रहा है,और जहां सड़क के लिए मिट्टी आनी चाहिए थी,वहां सड़क किनारे की जमीन ही काटकर सड़क में डाल दी गई,गांव के एक बुजुर्ग ने तंज कसते हुए कहा पहले सड़क नक्सली नहीं बनने देते थे,अब सड़क को टिकाऊ बनने नहीं दिया जा रहा।

घाट कटिंग में भी समझौता मॉडल

सिद्ध बाबा स्थल सहित कई हिस्सों में घाट कटिंग और चौड़ीकरण को लेकर भी शिकायतें सामने आई हैं, पहाड़ी इलाकों में सड़क निर्माण बेहद संवेदनशील होता है, वहां कटिंग का सही कोण, जल निकासी और ढलान प्रबंधन जरूरी होता है, लेकिन ग्रामीणों का कहना है कि जहां पर्याप्त कटिंग होनी चाहिए थी, वहां खानापूर्ति कर दी गई, बरसात में यही लापरवाही सड़क बहने, मिट्टी धंसने और दुर्घटनाओं का कारण बन सकती है, एक बुजुर्ग ग्रामीण ने कहा लगता है सड़क इंजीनियर नहीं, बचत सलाहकार बना रहे हैं।

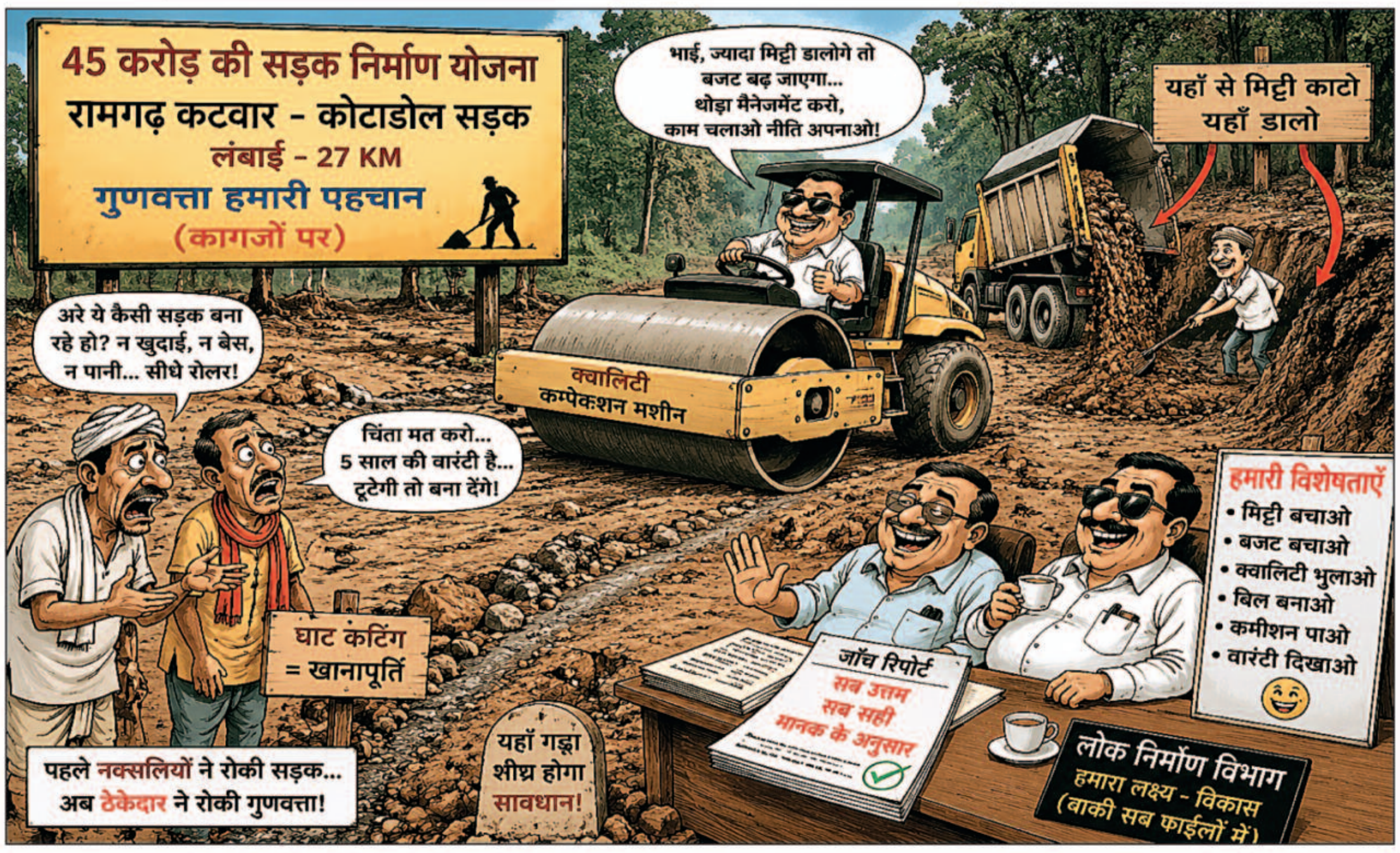

नेटवर्क नहीं,इसलिए निगरानी भी नहीं?

यह पूरा क्षेत्र दूरस्थ और कई जगह नेटवर्क विहीन माना जाता है,मोबाइल सिग्नल कमजोर है, इंटरनेट मुश्किल से चलता है और प्रशासनिक निगरानी भी सीमित रहती है,ग्रामीणों का आरोप है कि इसी स्थिति का फायदा उठाकर निर्माण कार्य में मनमानी की जा रही है,क्योंकि शहरों में सड़क टूटे तो अगले दिन वीडियो वायरल हो जाता है, मीडिया पहुंच जाती है,अधिकारी दौड़ पड़ते हैं,लेकिन जंगल और पहाड़ के बीच बसे गांवों की आवाज अक्सर फाइलों में दब जाती है,ग्रामीणों का कहना है कि यदि यही सड़क किसी बड़े शहर के पास बन रही होती तो अब तक कई जांच टीमें पहुंच चुकी होतीं,लेकिन यहां लोग शिकायत करते रह जाते हैं और काम अपनी रफ्तार से चलता रहता है।

पीडब्ल्यूडी की भूमिका पर सवाल

लोक निर्माण विभाग यानी पीडब्ल्यूडी को तकनीकी गुणवत्ता का प्रहरी माना जाता है,सड़क निर्माण में हर लेयर का परीक्षण,सामग्री की जांच और नियमित निरीक्षण विभागीय जिम्मेदारी होती है, ऐसे में सबसे बड़ा सवाल यही उठ रहा है कि क्या संबंधित अधिकारी निर्माण की निगरानी कर रहे हैं? यदि कर रहे हैं तो फिर इतने आरोप क्यों? और यदि नहीं कर रहे तो फिर करोड़ों की परियोजना आखिर किस भरोसे चल रही है? ग्रामीणों का आरोप है कि निर्माण स्थल पर तकनीकी परीक्षण की पारदर्शिता नहीं दिख रही,न तो कहीं गुणवत्ता रिपोर्ट सार्वजनिक है और न ही लोगों को यह जानकारी है कि किस स्तर पर कौन-सा परीक्षण किया गया,अब लोगों के बीच यह धारणा बनती जा रही है कि सड़क निर्माण में गुणवत्ता फाइलों में ज्यादा और जमीन पर कम दिखाई देती है।

विकास की सड़क या अगला मरम्मत प्रोजेक्ट?

रामगढ़ कटवार-कोटाडोल सड़क क्षेत्र के लिए जीवनरेखा साबित हो सकती है, इससे गांवों का संपर्क सुधरेगा, मरीजों को अस्पताल पहुंचने में सुविधा होगी,छात्रों को राहत मिलेगी,व्यापार बढ़ेगा और प्रशासनिक पहुंच मजबूत होगी,लेकिन यदि सड़क निर्माण के शुरुआती चरण में ही गुणवत्ता पर इतने गंभीर आरोप लग रहे हैं तो लोगों की चिंता भी जायज है,क्योंकि ग्रामीण इलाकों में सड़क सिर्फ रास्ता नहीं होती,वह जीवन की दिशा तय करती है, लोगों को डर है कि कहीं यह सड़क भी उन सड़कों की तरह ना बन जाए जो उद्घाटन के समय चमकती हैं और पहली बारिश के बाद अपनी असली कहानी सुनाने लगती हैं।

ग्रामीणों की मांग...जांच हो,सिर्फ भाषण नहीं...

क्षेत्रवासियों ने सड़क निर्माण की उच्चस्तरीय जांच कराने की मांग की है,लोगों का कहना है कि स्वतंत्र तकनीकी टीम से मिट्टी,बेस,कम्पेक्शन और निर्माण सामग्री की जांच कराई जाए,साथ ही सड़क निर्माण की प्रत्येक प्रक्रिया की निगरानी की जाए ताकि करोड़ों की राशि का सही उपयोग हो सके,ग्रामीण चाहते हैं कि सड़क ऐसी बने जो वर्षों तक टिके, ना कि ऐसी जिसे हर बारिश के बाद फिर से मरम्मत योजना में शामिल करना पड़े,क्योंकि जनता अब समझ चुकी है कि सड़क का असली उद्घाटन रिबन कटने से नहीं होता,बल्कि पहली बारिश के बाद होता है,और फिलहाल रामगढ़ कटवार-कोटाडोल सड़क को देखकर लोग यही कह रहे हैं डामर अभी बाकी है, लेकिन सवालों की परत अभी से मोटी बिछ चुकी है।

सड़क निर्माण का विज्ञान बनाम जुगाड़ तकनीक

सड़क निर्माण कोई बच्चों का मिट्टी का खेल नहीं होता, इसकी एक वैज्ञानिक प्रक्रिया होती है,पहले निर्धारित गहराई तक खुदाई होती है,फिर मिट्टी का सही कम्पेक्शन, उसके ऊपर जीएसबी यानी ग्रेन्युलर सब-बेस,फिर डब्लूएम्एम यानी वेट मिक्स मैकडम और अंत में डामर की परत बिछाई जाती है,हर लेयर का घनत्व,नमी और मजबूती तकनीकी परीक्षण से जांची जाती है,लेकिन ग्रामीणों का आरोप है कि यहां सड़क इंजीनियरिंग कम और जुगाड़ इंजीनियरिंग ज्यादा चल रही है,कई स्थानों पर बिना समुचित खुदाई किए मिट्टी डाल दी गई,कहीं मिट्टी भी पूरी नहीं डाली गई और सीधे रोलर चलाकर कम्पेक्शन दिखा दिया गया,तकनीकी नियम कहते हैं कि रोलर चलाने से पहले मिट्टी में पर्याप्त पानी डालना चाहिए ताकि वह सही तरीके से बैठ सके,लेकिन ग्रामीणों का कहना है कि यहां सूखी मिट्टी पर ही रोलर दौड़ाया जा रहा है,यानी सड़क का बेस ऐसा तैयार हो रहा है जैसे किसी गरीब की जिंदगी ऊपर से ठीक दिखती है, लेकिन अंदर से खोखली।

मिट्टी बचाओ,बिल बढ़ाओ योजना?

देवसिल के आगे और मसर्रा से पहले कई जगहों पर सड़क किनारे की मिट्टी काटकर सड़क में भराव करने की बात सामने आई है,इससे सड़क के दोनों ओर गहरे गड्ढे बन गए हैं,ग्रामीणों का कहना है कि यह तरीका न केवल गुणवत्ता पर सवाल खड़ा करता है बल्कि आने वाले समय में दुर्घटनाओं का कारण भी बन सकता है, अब सवाल यह है कि यदि सड़क निर्माण के लिए पर्याप्त मिट्टी का प्रावधान है तो फिर किनारे की मिट्टी काटने की जरूरत क्यों पड़ी? क्या यह लागत बचाने का तरीका है? या फिर फ्रऊपर से सब मैनेज हैफ्र वाली मानसिकता इतनी मजबूत हो चुकी है कि सड़क किनारे की जमीन भी अब सरकारी बिलों का हिस्सा बन गई है? ग्रामीणों का कहना है कि सड़क के दोनों ओर जो गड्ढे बने हैं,वे बरसात में और गहरे हो जाएंगे, कई जगह पेड़ों की जड़ों के आसपास की मिट्टी काट दी गई है, जिससे आगामी बारिश में पेड़ों के गिरने का खतरा बढ़ गया है,एक ग्रामीण ने कटाक्ष करते हुए कहा सड़क बने या ना बने,गड्ढे तो अभी से तैयार हो गए हैं।

रोलर चलाओ,गुणवत्ता दिखाओ...

कोटाडोल से मसर्रा मार्ग के बीच लोगों ने आरोप लगाया कि कई हिस्सों में बिना पर्याप्त मिट्टी डाले ही रोलर चला दिया गया,केवल किनारों पर हल्की मिट्टी डालकर औपचारिकता निभा दी गई,अब यह दृश्य ग्रामीणों के लिए किसी सरकारी नाटक से कम नहीं, मशीनें चल रही हैं, धूल उड़ रही है, मजदूर काम कर रहे हैं,अधिकारी कभी-कभी निरीक्षण कर रहे हैं,लेकिन असली सवाल यह है कि क्या सड़क वास्तव में मजबूत बन रही है? क्योंकि सड़क की मजबूती मशीनों के शोर से नहीं, उसकी नींव से तय होती है, तकनीकी विशेषज्ञ बताते हैं कि यदि बेस लेयर सही न हो तो ऊपर का डामर कुछ महीनों में ही टूटने लगता है,फिर सड़क में दरारें आती हैं, पानी भरता है और धीरे-धीरे पूरी सड़क गड्ढों में बदल जाती है, लेकिन यहां लगता है कि भविष्य की मरम्मत का रास्ता अभी से तैयार किया जा रहा है।

वारंटी...सुरक्षा कवच या भ्रष्टाचार का लाइसेंस?

निर्माण एजेंसियों का एक प्रिय वाक्य होता है सड़क पांच साल की वारंटी में है,यानी अगर सड़क टूटेगी तो ठेकेदार मरम्मत करेगा, सुनने में यह व्यवस्था जनता के हित की लगती है,लेकिन अब ग्रामीण इसी वारंटी पर सवाल उठा रहे हैं, लोग पूछ रहे हैं क्या वारंटी का मतलब यह है कि सड़क टूटना तय है? यदि सड़क सही गुणवत्ता से बनेगी तो पांच साल तक मरम्मत की जरूरत ही क्यों पड़े? क्या वारंटी अब एक ऐसा लाइसेंस बन चुकी है जिसके भरोसे निर्माण के समय गुणवत्ता में कटौती कर दी जाती है और बाद में मरम्मत के नाम पर फिर कमाई का रास्ता खुल जाता है? एक स्थानीय युवक ने व्यंग्य करते हुए कहा सड़क बनाओ ऐसे कि टूटे जरूर, तभी तो वारंटी का असली उपयोग होगा, यह सवाल इसलिए भी बड़ा हो जाता है क्योंकि सरकार ने पिछले वर्षों में एसओआर यानी शेड्यूल ऑफ रेट बढ़ाया है ताकि महंगाई के बीच ठेकेदारों को नुकसान न हो और वे बेहतर गुणवत्ता से काम कर सकें। लेकिन यदि बढ़े हुए रेट के बाद भी गुणवत्ता पर सवाल उठ रहे हैं,तो फिर जनता पूछ रही है कि आखिर पैसा जा कहां रहा है?

कोरिया खाद्य विभाग की कार्यवाही में मिलावटी पनीर बच गया, सड़ा केला फंस गया!

कोरिया खाद्य विभाग की कार्यवाही में सड़े फल पर शौर्य पदक, होटलों पर मौन व्रत क्यों?

फल कुचले,मिलावट छोड़ी ...वाह रे खाद्य विभाग की कार्रवाई!

ढाबों में दावत,ठेलों पर रहमतज्और कार्रवाई सिर्फ सड़े फलों पर!

लिफाफा भारी तो किचन प्यारा,वरना सड़ा फल ही सहारा!

सघन जांच अभियान या फोटो खिंचाओ अभियान?

खाद्य विभाग का कमाल, होटल साफ घोषित,सड़ा फल बदनाम!

जहां फ्री का खाना मिले, वहां जांच नहीं होती!

सड़े फल नष्ट कर विभाग गदगद,मिलावटखोर अब भी बेफिक्र!

कार्रवाई का कैमरा ऑन, असली जांच ऑफ!

सड़े फल पकड़कर खुद को शेर समझ रहा विभाग, मिलावटी पनीर और गंदे किचन पर क्यों बैठ जाती है जांच की बिल्ली?

-रवि सिंह-

कोरिया,31 मई 2026 (घटती-घटना)। बैकुंठपुर में खाद्य एवं औषधि विभाग ने हाल ही में एक सघन जांच अभियान चलाया,प्रेस विज्ञप्ति जारी हुई,फोटो खिंचे, सड़े-गले फल नष्ट किए गए और फिर विभाग ने अपनी पीठ इतनी जोर से थपथपाई मानो जिले से मिलावट का रावण खत्म कर दिया गया हो,लेकिन सवाल यह है कि क्या जिले में मिलावट का पूरा साम्राज्य सिर्फ कुछ सूखे और सड़े फलों तक सीमित है? क्या होटल, ढाबे, डेयरियां,मिठाई दुकानें,चौपाटियां और सड़क किनारे की रेहड़ियां अचानक संत महात्मा बन गई हैं जहां सब कुछ शुद्ध और सात्विक परोसा जा रहा है? जिले की जनता तो वर्षों से जानती है कि कई होटलों के किचन में ऐसा तेल इस्तेमाल होता है जिसे देखकर कोलेस्ट्रॉल भी आत्महत्या कर ले, चौपाटियों में ऐसी चटनियां बनती हैं जिनका रंग देखकर विज्ञान भी भ्रमित हो जाए और कई डेयरियों में ऐसा पनीर बिकता है जो दूध से कम और केमिकल से ज्यादा पैदा हुआ लगता है, लेकिन खाद्य विभाग का अभियान वहां तक नहीं पहुंचता, क्यों? यही सबसे बड़ा सवाल है।

सड़े फल पर कार्रवाई,लेकिन असली सड़ांध पर मौन...

खाद्य एवं औषधि विभाग ने जिस उपलब्धि को प्रेस नोट में प्रमुखता से बताया, वह था गैर बिक्री योग्य फलों को नष्ट कराना,अब व्यंग्य देखिए जिन फलों को दुकानदार खुद बेचने योग्य नहीं मानते, जिन्हें वे शाम तक कचरे में फेंकने वाले होते हैं,उन्हें नष्ट कर विभाग ने मानो खाद्य सुरक्षा का भारत रत्न जीत लिया हो,शहर में चर्चा है कि यदि इसी गति से अभियान चलता रहा तो अगले साल विभाग सूखी मिर्ची, बासी धनिया और मुरझाए नींबू पकड़कर प्रेस कांफ्रेंस करेगा,लेकिन उसी समय शहर और गांवों में शादी-विवाह का सीजन चल रहा था,बड़ी मात्रा में पनीर,खोवा,मिठाई और दूध की सप्लाई हो रही थी, हर साल की तरह इस बार भी लोगों के बीच चर्चा थी कि कई जगहों पर केमिकलयुक्त पनीर और अमानक खोवा धड़ल्ले से बिक रहा है। मगर विभाग की टीम वहां नहीं पहुंची,लगता है पनीर की जांच के लिए विभाग की मशीनें नहीं,मूड चाहिए।

जनता पूछ रही,आखिर अभियान किसके लिए?

कोरिया जिले की जनता अब यह समझने लगी है कि सरकारी अभियान और वास्तविक कार्रवाई में फर्क होता है,जनता चाहती है कि खाद्य एवं औषधि विभाग सिर्फ औपचारिकता न निभाए, बल्कि उन जगहों पर भी पहुंचे जहां से रोज हजारों लोगों की सेहत जुड़ी है,होटलों के किचन, चौपाटियों की सामग्री, डेयरियों का दूध, मिठाई दुकानों का खोवा और शादी समारोहों में सप्लाई होने वाला पनीर...यही असली जांच का विषय होना चाहिए,क्योंकि जनता की सेहत प्रेस नोट से नहीं, ईमानदार कार्रवाई से सुरक्षित होती है,फिलहाल हालात ऐसे हैं कि विभाग सड़े फल पकड़कर खुद को शेर साबित कर रहा हैज्जबकि मिलावट का असली जंगल अब भी खुला घूम रहा है।

ढाबों के किचन तक क्यों नहीं जाती जांच?

कोरिया जिले के बड़े ढाबों और होटलों में कभी अचानक निरीक्षण हुआ हो, वहां के किचन की वास्तविक तस्वीर सामने आई हो, ऐसा शायद ही कभी सुनने में आता है, लोग बताते हैं कि कई जगहों पर वही तेल बार-बार इस्तेमाल होता है,खुले में खाद्य सामग्री रखी जाती है, गंदे पानी से बर्तन धोए जाते हैं और फ्रिज में रखी चीजों की हालत देखकर डॉक्टर भी बीमार पड़ जाए,लेकिन विभाग की टीम वहां पहुंचती भी है तो कार्रवाई कम और आवभगत ज्यादा होती है,स्थानीय लोग व्यंग्य में कहते हैं जहां खाना फ्री और पैकेट भारी हो, वहां निरीक्षण भी नरम हो जाता है,यानी जनता को जिस जगह सबसे ज्यादा सुरक्षा की जरूरत है, वहीं विभाग सबसे ज्यादा संवेदनशील हो जाता है।

चौपाटी की चटनी में मिलावट नहीं,सिर्फ स्वाद?

शहर की चौपाटियों और फास्ट फूड स्टॉलों पर रोज हजारों लोग खाना खाते हैं, बच्चों से लेकर बुजुर्ग तक वहां पहुंचते हैं, लेकिन वहां की स्वच्छता की हालत किसी से छिपी नहीं, कटे फल खुले में,बासी सॉस,सड़े तेल में तली चीजें और बर्फ का ऐसा पानी जिसकी शुद्धता भगवान भरोसे यह सब आम दृश्य हैं, लेकिन खाद्य विभाग की कार्रवाई वहां नहीं दिखती, क्योंकि शायद चौपाटियों में जांच से ज्यादा चाट पर ध्यान रहता है।

डेयरियों का दूध या केमिकल प्रयोगशाला?

गर्मी के मौसम में दूध और उससे बने उत्पादों की गुणवत्ता सबसे ज्यादा प्रभावित होती है, लेकिन जिले की कई डेयरियों में दूध की शुद्धता को लेकर लगातार सवाल उठते रहे हैं, लोग आरोप लगाते हैं कि कुछ स्थानों पर दूध से ज्यादा पानी और पाउडर का कारोबार चलता है, मिठाई दुकानों में ऐसा खोवा इस्तेमाल होता है जो असली कम और एडजस्टमेंट ज्यादा होता है, फिर भी अभियान की पूरी ताकत फलों पर टूटती है,शायद इसलिए क्योंकि फल विरोध नहीं करते।

कार्रवाई की जगह 'समझौता मॉडल'?

शहर में यह चर्चा नई नहीं है कि कई शिकायतें कार्रवाई तक पहुंचने से पहले ही समझौते में बदल जाती हैं, कई बार लोगों ने खराब खाद्य सामग्री की शिकायत की, लेकिन मामला वहीं शांत हो गया, न सैंपल की रिपोर्ट सामने आई, न जुर्माना, न लाइसेंस निरस्तीकरण, ऐसे में सवाल उठना स्वाभाविक है कि आखिर विभाग का अभियान जनता की सुरक्षा के लिए चल रहा है या सिर्फ औपचारिकता निभाने के लिए?

खाद्य सुरक्षा या सरकारी अभिनय?

आज हालत यह है कि विभागीय कार्रवाई देखकर जनता हंस भी रही है और चिंतित भी है, क्योंकि जिस विभाग को लोगों के स्वास्थ्य की रक्षा करनी चाहिए,वह कई बार फोटो आधारित प्रशासन में बदल जाता है,जहां असली लड़ाई मिलावट से नहीं, प्रेस विज्ञप्ति की भाषा से लड़ी जाती है, एक तरफ अधिकारी कहते हैं कि वे सघन जांच कर रहे हैं, दूसरी तरफ जनता पूछ रही है अगर जांच इतनी सघन है तो फिर मिलावट इतनी सामान्य क्यों है?

कागजों में सख्ती,जमीन पर नरमी

यदि विभाग वास्तव में गंभीर हो तो जिले के किसी भी बड़े होटल, ढाबे, डेयरी या मिठाई दुकान में अचानक जांच कर वास्तविकता सामने ला सकता है, लेकिन इसके लिए हिम्मत चाहिए,और शायद यही चीज सबसे कम दिखाई देती है, सड़े फलों पर कार्रवाई आसान है, वे न फोन लगाते हैं,न पहुंच रखते हैं, न पैरवी करवाते हैं, लेकिन बड़े प्रतिष्ठानों पर हाथ डालना मतलब विवाद, दबाव और जवाबदेही...और शायद यही वजह है कि वहां विभाग की गाड़ी धीरे चलती है।

मटन मार्केट, चौपाटी निर्माण और नगर पालिका में पदस्थापना सहित कई मांगों को लेकर मंत्री अरुण साव को सौंपा ज्ञापन

सूरजपुर के विकास को गति देने विधायक भूलन सिंह मरावी की बड़ी पहल

हाट बाजार और चौपाटी निर्माण के लिए 261.92 लाख की मांग...

विधायक भूलन सिंह मरावी ने वार्ड क्रमांक-16 स्थित हाट बाजार के जीर्णोद्धार एवं चौपाटी निर्माण के लिए 261.92 लाख रुपये की स्वीकृति की मांग भी की है, प्रस्तावित कार्यों में हाट बाजार निर्माण, हाट बाजार निर्माण पार्ट-02 तथा चौपाटी निर्माण शामिल हैं, उन्होंने बताया कि प्रत्येक बुधवार और रविवार को यहां आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों से बड़ी संख्या में लोग खरीदारी और व्यापार के लिए पहुंचते हैं,लेकिन पर्याप्त शेड, बैठने की व्यवस्था और अन्य आधारभूत सुविधाओं के अभाव में लोगों को कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, विधायक ने कहा कि यदि प्रस्ताव स्वीकृत होते हैं तो बाजार क्षेत्र में पक्के शेड, चबूतरे, गुमटियां तथा अन्य सुविधाओं का विकास होगा, जिससे व्यापारियों और आम नागरिकों को बेहतर सुविधा मिलेगी।

नगर के समग्र विकास को मिलेगी नई दिशा

विधायक भूलन सिंह मरावी ने कहा कि इन सभी प्रस्तावों के स्वीकृत होने से सूरजपुर नगर की प्रशासनिक व्यवस्था मजबूत होगी, नागरिक सुविधाओं का विस्तार होगा तथा व्यापारिक गतिविधियों को नई गति मिलेगी, उन्होंने जनहित को ध्यान में रखते हुए शासन से मांगों पर शीघ्र सकारात्मक निर्णय लेने का आग्रह किया है।

-संवाददाता-

सूरजपुर,31 मई 2026 (घटती-घटना)। प्रेमनगर विधानसभा क्षेत्र के विधायक भूलन सिंह मरावी ने सूरजपुर नगर के विकास, प्रशासनिक व्यवस्था को मजबूत करने और नागरिक सुविधाओं के विस्तार को लेकर उप मुख्यमंत्री एवं नगरीय प्रशासन एवं विकास मंत्री अरुण साव को विस्तृत ज्ञापन सौंपा है,ज्ञापन में नगर पालिका परिषद सूरजपुर से जुड़े कई महत्वपूर्ण कार्यों के लिए स्वीकृति और अधिकारियों की पदस्थापना की मांग की गई है।

विधायक भूलन सिंह मरावी ने नगर पालिका परिषद सूरजपुर में अकाउंटेंट, सब इंजीनियर और एसडीओ जैसे महत्वपूर्ण पदों पर शीघ्र नियुक्ति करने की मांग करते हुए कहा कि नगर की बढ़ती आबादी और विकास कार्यों के चलते प्रशासनिक एवं तकनीकी कार्यों का दबाव लगातार बढ़ रहा है, अधिकारियों की कमी के कारण विकास योजनाओं के संचालन और कार्यों के क्रियान्वयन में कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है।

मटन मार्केट के व्यवस्थित निर्माण की मांग

विधायक ने नगर क्षेत्र में संचालित मटन मार्केट के व्यवस्थित निर्माण एवं व्यवस्थापन के लिए 60.54 लाख रुपये की राशि स्वीकृत करने की मांग की है, प्रस्तावित योजना में शेड निर्माण, सीमेंटेड प्लेटफॉर्म,ड्रेनेज व्यवस्था,पेयजल, शौचालय, विद्युत सुविधा तथा कचरा प्रबंधन जैसी मूलभूत सुविधाएं विकसित किए जाने का प्रस्ताव शामिल है,उन्होंने कहा कि वर्तमान में बाजार में पर्याप्त सुविधाओं के अभाव में व्यापारियों और नागरिकों को परेशानियों का सामना करना पड़ता है,व्यवस्थित निर्माण होने से स्वच्छता व्यवस्था बेहतर होगी और व्यापारिक गतिविधियों को भी बढ़ावा मिलेगा।

पानी के लिए टैंकर और ट्रैफिक के लिए पार्किंग, पार्षद प्रमोद तायल ने उठाई दो बड़ी मांगें

उप मुख्यमंत्री अरुण साव को पत्र भेजकर पेयजल संकट और अव्यवस्थित पार्किंग व्यवस्था पर जताई चिंता

-संवाददाता-

सूरजपुर,31 मई 2026 (घटती-घटना)। नगरपालिका परिषद सूरजपुर के वार्ड क्रमांक-16 के पार्षद प्रमोद तायल बिसन ने शहर की दो प्रमुख समस्याओं पेयजल संकट और पार्किंग अव्यवस्था को लेकर प्रदेश के उप मुख्यमंत्री एवं नगरीय प्रशासन एवं विकास मंत्री अरुण साव को पत्र एवं ज्ञापन सौंपकर आवश्यक पहल की मांग की है।

पार्षद प्रमोद तायल ने पार्षद निधि से नए पानी टैंकर खरीदने का प्रावधान किए जाने की मांग करते हुए कहा है कि नगर क्षेत्र में पेयजल संकट लगातार गंभीर होता जा रहा है, वर्तमान में नगर पालिका के अधिकांश पानी टैंकर पुराने और जर्जर हो चुके हैं,जबकि कई टैंकर पूरी तरह खराब होकर उपयोग के योग्य नहीं बचे हैं, इसके कारण विभिन्न वार्डों में समय पर पेयजल आपूर्ति प्रभावित हो रही है और नागरिकों को भारी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है,उन्होंने कहा कि गर्मी के मौसम में जल संकट और अधिक बढ़ जाता है तथा ऐसे समय में पानी टैंकर ही लोगों को राहत पहुंचाने का प्रमुख माध्यम बनते हैं, लेकिन पर्याप्त और सुचारु टैंकर व्यवस्था नहीं होने से नगर पालिका प्रभावी ढंग से पानी उपलब्ध नहीं करा पा रही है, पार्षद ने मांग की कि पार्षद निधि से पानी टैंकर खरीदने की अनुमति दी जाए, ताकि जनप्रतिनिधि अपने वार्डों की आवश्यकता के अनुसार त्वरित व्यवस्था कर सकें और लोगों को राहत मिल सके।

शहर में पार्किंग संकट पर भी जताई चिंता

पार्षद प्रमोद तायल ने शहर में बढ़ती पार्किंग समस्या को लेकर भी नगरीय प्रशासन मंत्री को ज्ञापन सौंपा है, उन्होंने कहा कि लगातार बढ़ती आबादी और वाहनों की संख्या के कारण सूरजपुर में पार्किंग व्यवस्था गंभीर चुनौती बनती जा रही है, उन्होंने बताया कि मुख्य बाजारों, व्यावसायिक क्षेत्रों और सार्वजनिक स्थलों पर अव्यवस्थित पार्किंग के कारण आम नागरिकों, व्यापारियों और राहगीरों को प्रतिदिन कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है,सड़क किनारे अनियंत्रित पार्किंग से यातायात प्रभावित होता है और दुर्घटनाओं की आशंका बनी रहती है, कई बार एम्बुलेंस और आपातकालीन सेवाओं के आवागमन में भी बाधा उत्पन्न होती है, पार्षद ने मांग की कि नगर के प्रमुख क्षेत्रों में व्यवस्थित पार्किंग स्थल विकसित किए जाएं तथा आवश्यकता अनुसार मल्टीलेवल या स्मार्ट पार्किंग व्यवस्था प्रारंभ की जाए,इसके साथ ही पार्किंग स्थलों पर सीसीटीवी, सुरक्षा व्यवस्था और पर्याप्त प्रकाश की सुविधा उपलब्ध कराने की भी मांग की गई है, उन्होंने विश्वास जताया कि प्रदेश सरकार नगरवासियों की समस्याओं को गंभीरता से लेते हुए शीघ्र सकारात्मक निर्णय लेगी,जिससे एक ओर पेयजल संकट से राहत मिलेगी और दूसरी ओर शहर की यातायात व्यवस्था भी सुगम हो सकेगी।

जब वी मेट से निकाले जाने पर बॉबी देओल का छलका दर्द,बोले...जिन तकलीफों और गुस्से से गुजरा

बॉलीवुड अभिनेता बॉबी देओल ने खुलासा किया कि पहले वह जब वी मेट करने वाले थे,लेकिन फिर यह फिल्म शाहिद कपूर को दे दी गई।
इम्तियाज अली की फिल्म जब वी मेट सुपरहिट होने के साथ-साथ कल्ट क्लासिक फिल्मों में गिनी जाती है। इस फिल्म में शाहिद कपूर और करीना कपूर खान ने मुख्य भूमिकाएं निभाई थीं। फिल्म में उनकी ऑन-स्क्रीन जोड़ी छा गई थी। मगर क्या आपको पता है कि फिल्म में शाहिद कपूर की जगह पहले बॉबी देओल आदित्य की भूमिका निभाने वाले थे और इस फिल्म को पहले इम्तियाज अली डायरेक्ट नहीं करने वाले थे। इस फिल्म से रिप्लेस होने के बाद एक्टर का दिल टूट गया था क्योंकि उस वक्त उनके करियर का बुरा फेज चल रहा था और उन्हें एक बढ़िया फिल्म की जरूरत थी।

रिप्लेस होने से टूट गए थे एक्टर

बॉबी देओल ने हाल ही में एक टीवी शो पर जब वी मेट से रिप्लेस होने पर अपना दर्द बयां किया है। उन्होंने कहा, अब वह बात पुरानी हो चुकी है। अब हम दोस्त हैं। मेरा दिल इसलिए टूटा था, क्योंकि मेरे करियर के उस दौर में मुझे इस तरह की एक फिल्म की बहुत जरूरत थी।
पहले जब वी मेट को इम्तियाज डायरेक्ट करने वाले नहीं थे। बॉबी देओल ने ही उन्हें टीम में शामिल करने का आइडिया प्रोड्यूसर को दिया था। वह उनकी फिल्म सोचा ना था से इंप्रेस हो गए थे, जिसमें उनके चचेरे भाई लीड रोल में थे। इस बारे में एक्टर ने कहा, तभी हमने पहली बार तय किया था कि हम साथ मिलकर एक फिल्म बनाएंगे। लेकिन जब आपकी मार्केट में पोजिशन अच्छी नहीं होती, तो कोई भी आपका साथ नहीं देता।

इम्तियाज को लाए थे बॉबी

बॉबी ने आगे कहा, फिल्म शुरू करवाने की कोशिश में ही बहुत सारा समय निकल गया। जिस प्रोडक्शन हाउस को मैंने यह आइडिया दिया था, उन्होंने कहा कि इम्तियाज बहुत महंगे डायरेक्टर हैं। लेकिन उसी प्रोडक्शन हाउस ने बाद में इम्तियाज के साथ ही वह फिल्म बनाई और उसी हीरोइन के साथ जिसे मैंने फिल्म के लिए राजी किया था।

तकलीफों को बनाई ताकत

जब मैंने खुद पर काम करना शुरू किया, तो मैंने तय किया कि जिन तकलीफों और गुस्से से मैं गुजरा हूं, वे मेरी ताकत बननी चाहिए। क्योंकि आप बस उनके बारे में रोते नहीं रह सकते। इन चीजों ने मुझे एक बेहतर इंसान और एक बेहतर एक्टर बनाया। मैंने इनसे सिर्फ सीखा है। मुझे किसी से कोई शिकायत नहीं है।

एक्ट्रेस जूली का गंभीर आरोप,टीव्हीके समर्थकों की ट्रोलिंग से मिसकैरेज का दावा

तमिलनाडु से जुड़ी एक गंभीर मामला सामने आया है, जिसमें एक्ट्रेस और पूर्व नर्स रह चुकी जूली ने चौंकाने वाले आरोप लगाए हैं। उन्होंने दावा किया है कि तमिलनाडु के मुख्यमंत्री और एक्टर विजय के समर्थकों और उनकी पार्टी तमिलगा वेट्री कझगम के सोशल मीडिया ट्रोलिंग अभियान के कारण उनका मिसकैरेज हो गया। इस आरोप के बाद मामला राजनीतिक और सामाजिक स्तर पर चर्चा का विषय बन गया है। जूली ने इस संबंध में चेन्नई पुलिस में शिकायत दर्ज कराई है और सोशल मीडिया पर हो रही कथित ट्रोलिंग और ऑनलाइन हैरेसमेंट पर गंभीर आपत्ति जताई है। उन्होंने आरोप लगाया कि लगातार मानसिक दबाव और ऑनलाइन उत्पीड़न के कारण उनकी स्वास्थ्य स्थिति पर गंभीर प्रभाव पड़ा, जिसके चलते उन्हें गर्भपात का सामना करना पड़ा। मीडिया से बातचीत में उन्होंने बताया कि उन्होंने पहली बार मार्च में कथित ऑनलाइन उत्पीड़न के मामले में पुलिस से संपर्क किया था और आठ लोगों के खिलाफ औपचारिक शिकायत दर्ज कराई थी। उनके अनुसार, शिकायत दर्ज कराने के बाद भी उन्हें अपेक्षित कार्रवाई नहीं मिली और मामले को अलग दिशा में देखा गया। जूली ने यह भी दावा किया कि बाद में उन्हें एक नोटिस मिला, जिसमें कहा गया कि उनका मामला सिविल मानहानी के तहत आता है, न कि क्रिमिनल डिवीजन में। उन्होंने कहा कि इस प्रक्रिया को लेकर उन्हें स्पष्ट जानकारी नहीं दी गई और उन्हें प्रशासनिक स्तर पर भ्रम की स्थिति का सामना करना पड़ा। इसके अलावा उन्होंने यह भी आरोप लगाया कि राजनीतिक बदलाव के बाद, जब राज्य में छ्रस्ब्ध की जगह ञ्च्क्क्च्य से जुड़े राजनीतिक माहौल बना, तो उनके मामले में नए नोटिस जारी किए गए। हालांकि, उन्होंने इस पर विस्तृत जानकारी न होने की बात कही। एक्ट्रेस ने यह भी दावा किया कि इन घटनाओं के बाद उनके खिलाफ 15 लाख रुपये के कथित किडनी स्कैम से जुड़े आरोप भी सामने आए, जिससे उनकी स्थिति और अधिक जटिल हो गई है। उनका कहना है कि यह सभी घटनाएं एक सुनियोजित तरीके से उन्हें मानसिक रूप से परेशान करने के लिए की जा रही हैं। इस पूरे मामले में तमिलगा वेत्री कझगम की ओर से अभी तक कोई आधिकारिक प्रतिक्रिया सामने नहीं आई है। वहीं पुलिस सूत्रों के अनुसार, शिकायत की जांच की जा रही है और सभी पहलुओं पर ध्यान दिया जा रहा है। यह मामला सोशल मीडिया पर ट्रोलिंग, ऑनलाइन उत्पीड़न और उसके प्रभावों को लेकर एक बार फिर बहस का विषय बन गया है। विशेषज्ञों का मानना है कि डिजिटल प्लेटफॉर्म पर बढ़ती नफरत और ट्रोलिंग को रोकने के लिए सख्त निगरानी और प्रभावी कानूनी कार्रवाई की आवश्यकता है।

27 साल पुराना केके का दिल तोड़ने वाला गाना

सुबह 4 बजे रिकॉर्ड हुआ था,सैड सांग सुनकर आज भी तड़प जाता है दिल...

27 साल पहले सिंगर केके ने एक ऐसा गाना गाया था जो आज भी मोस्ट हार्टब्रेकिंग सॉन्ग्स में से एक है। इस गाने ने लोगों को रुला दिया था। कृष्णकुमार कुन्नथ उर्फ केके म्यूजिक इंडस्ट्री के वर्सेटाइल सिंगर थे जिन्होंने करोड़ों फैंस को हार्टब्रेक और प्यार भरे गाने दिए हैं। उनकी आवाज में वो जादू था जिसने 90ह्य में हर किसी को दीवाना बना दिया था। 2000 के दशक में भी उन्होंने कई कल्ट गाने दिए।केके के नाम कई चार्टबस्टर रोमांटिक सॉन्ग्स हैं लेकिन उनका एक 27 साल बाद भी इतना पॉपुलर है कि अगर कोई सुन ले तो उसकी आंखों में आंसू आ जाए। इसी गाने के जरिए केके को वह पहचान मिली जो सालों मेहनत के बाद भी उनके हाथ नहीं आ रही थी। एक बार केके ने बताया था कि वह यह हार्टब्रेक सॉन्ग (नहीं गाने वाले थे, लेकिन म्यूजिक डायरेक्टर के भरोसे ने उनके अंदर कॉन्फिडेंस भरा और फिर जो उन्होंने गाया, ढाई दशक के बाद भी कल्ट बना हुआ है। केके की जिंदगी बदलने वाला ये गाना है तड़प तड़प के। 1999 में आई फिल्म हम दिल दे चुके सनम में ऐश्वर्या राय और सलमान खान जुदा होते हैं। तब यह गाना बजता है। यह बॉलीवुड के बेस्ट हार्टब्रेक और सैड सॉन्ग्स में से एक है।

माधुरी दीक्षित ने करियर के पीक पर क्यों छोड़ा काम,एक्ट्रेस बोलीं...पुरुष बना सकते हैं तो महिला क्यों...

माधुरी दीक्षित ने अपने करियर, शादी और मां के समर्थन पर बात की। उन्होंने बताया कि कैसे उनकी मां की सलाह ने उन्हें आगे बढ़ने में मदद की और महिलाओं को करियर-उन्मुख होने की वकालत की। जब मां का साथ हो, तो कितनी भी कठिनाई क्यों ना आ जाएं, रास्ते आसान लगते हैं। अभिनेत्री माधुरी दीक्षित के साथ भी ऐसा ही रहा है। चार जून को नेटफ्लिक्स पर रिलीज होने वाली फिल्म मां बहन में माधुरी दो बेटियों की सिंगल मां के रोल में हैं। हालांकि फिल्म के ट्रेलर को देखकर लगता है कि वह अपनी बेटियों के लिए मुसीबत खड़ी कर देती है, लेकिन वास्तविक जीवन में जब वह अभिनय के पेशे में आई थीं, तो उनकी मां उनका सबसे बड़ा सपोर्ट बनी थीं।

मां की दी सलाह आई काम

उनकी दी हुई सलाह माधुरी के बेहद काम आई थी। माधुरी कहती हैं कि मेरी मां बहुत ही स्ट्रान्ग महिला थीं। वह मेरी बैकबोन थी। मैं इस पेशे में जब आई थी, तब बहुत छोटी थी। लोग कुछ कह देते थे, तो मैं घबरा जाती थी कि मम्मी वो तो ऐसा बोल रहे हैं। वह कहती थीं कि तू चिंता मत कर, तुझे काम करना, डांस करना, एक्टिंग करना अच्छा लगता है ना? मैं हां कहती, तो वह कहती थी कि फिर तू कर। अपना काम और मेहनत बस करते रहो, खुद को बेहतर बनाओ। एक बार सफलता मिल गई ना, तो हर कोई बदल जाएगा।

महिलाओं को करियर माइंडेड होना चाहिए : माधुरी

मैं आज जैसी हूं,जो हूं, वह उनके व्यक्तित्व का बड़ा हिस्सा हैं। फिल्म में माधुरी का पात्र बिजनेसवुमन है, जो कई सारे बिजनेस करने के बाद आखिरकार अपना वाइन शाप चलाती है। इस फिल्म के ट्रेलर लांच में माधुरी ने कहा था कि महिलाओं को करियर माइंडेड होना चाहिए। उनके लिए करियर माइंडेड होना कितना जरूरी रहा है? इस पर वह कहती हैं कि यह शब्द सुनने में बहुत निगेटिव लगता है, खासकर अगर कोई महिला कहे। मुझे लगता है क्यों नहीं करियर माइंडेड होना चाहिए।

जब पुरुष अपना करियर बनाने की बात करते हैं, तो उन्हें करियर माइंडेड नहीं, बल्कि महत्वाकांक्षी कहा जाता है। महिलाएं भी तो महत्वाकांक्षी हो सकती हैं। फिर उन्हें करियर माइडेंड क्यों कहना, उनका भी करियर होना चाहिए। महिलाएं आज इतनी पढ़ी-लिखी हैं, अगर करियर न बना पाएं, तो इतना पढ़-लिखकर क्या फायदा। मैं जब पिछली सदी के नौवें दशक में काम कर रही थी, तो सेट पर महिलाओं में केवल अभिनेत्री और हेयरड्रेसर्स होती थीं। आज सेट पर जब जाती हूं, तो लेखन, निर्देशन, असिस्टेंट डायरेक्शन से लेकर लाइटिंग डिपार्टमेंट तक में महिलाएं दिखती हैं।

शादी करने के बाद लोगों ने सुनाए ताने

मुझे तो यह बात बहुत कमाल लगती है। ऐसा नहीं हो पाता अगर वह अपने करियर में दिलचस्पी नहीं लेती। मुझे लगता है कि महिलाओं का करियर होना चाहिए। उन्हें वह करने की आजादी होनी चाहिए, जिसे करने में उन्हें मजा आता है। अगर उन्हें लगता है कि मुझे घर पर रहना है, बच्चों की देखभाल करनी है, करियर नहीं चाहिए, बाहर काम नहीं करना है, तो वह भी ठीक है। घर पर ही इतना काम होता है। घर की महिलाएं भी बड़ी जिम्मेदरी निभा रही हैं। जब मेरी शादी हुई थी, तब भी लोग कहते थे अरे आप तो शिखर पर थीं, आप शादी करके चली गईं, अपने करियर का नहीं सोचा।

माधुरी को अपने पर था आत्मविश्वास

मैंने किसी से कुछ नहीं कहा, क्योंकि मैं जानती हूं कि मुझे अपनी जिंदगी में सही इंसान (माधुरी के पति व डाक्टर श्रीराम नेने) मिल गया है और वही सही समय है, मुझे उसी व्यक्ति से शादी करनी है। जब मैं अमेरिका गई शादीशुदा जीवन को जीया, तो मैं अपने सपने को जी रही थी। जो भी उस दौरान हो रहा था, वह मेरे सपने का हिस्सा था कि मुझे घर, बच्चा, पति सब चाहिए। मैंने अपने उस सपने को खुलकर जीया। मुझे कभी नहीं लगा कि अब मेरे करियर का क्या होगा। करियर तो हमेशा होता है। मैं जानती थी कि लौटकर काम कर सकती हूं। वह आत्मविश्वास खुद होना चाहिए।

ज्यादातर शिखर पर रहने वाली माधुरी, असुरक्षा वाली भावनाओं के दौर से भी गुजरी हैं?

वह कहती हैं कि एक्टर की जिंदगी में उतार-चढ़ाव तो आते ही हैं। कभी आप सफल होंगे, कभी नहीं। कभी फिल्म चलेगी, कभी नहीं। आज तो इंटरनेट मीडिया पर कई तरह के कमेंट्स होते हैं, जो परेशान कर सकते हैं। मैं तो हमेशा से यही मानती आई हूं कि आप जो भी करते हैं, खुद के लिए करिए। आपको खुशी उसी में मिलेगी, जो करना आपको पसंद है,आपका जुनून है। लोग तो बोलते ही रहेंगे कि आप कुछ करो ना करो। अपनी जिंदगी जीएं।इंटरनेट मीडिया के दौर में जहां स्टारडम पाना और उसका खो जाना आसान है। वहां इतनें वर्षों से स्टारडम को मेंटेन रख पाना कैसे संभव हो पाता है? इस पर माधुरी कहती हैं कि मैंने जो भी किया है, वह पूरे दिल से दृढ़ता के साथ किया है। मैंने कभी कोई भी चीज आधे मन से नहीं की है, फिर चाहे वो इस इंडस्ट्री में काम करना हो या मेरे जीवन से जुड़ा कोई निर्णय हो। शादी की, बच्चे हुए, इस देश से दूर चली गई, फिर वापस आई, हर चीज मैंने दृढ़ता के साथ की है। टिके रहने के लिए मेरे ख्याल से अपने निर्णयों पर दृढ़ रहना बहुत जरूरी है।

खेल समाचार

फ्रेंच ओपन में हुआ बड़ा उलटफेर

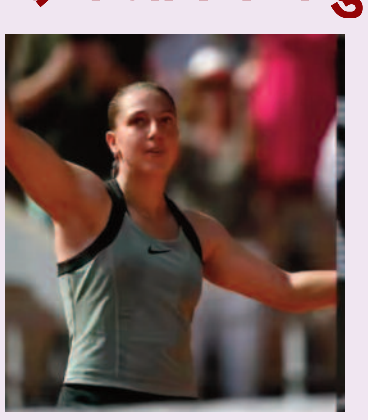

डायने पैरी ने अमांडा अनिसिमोवा को हरा दिया

युगांडा,31 मई 2026। फ्रेंच ओपन 2026 में बड़ा उलटफेर देखने को मिला। फ्रांस की डायने पैरी को शनिवार को अमांडा अनिसिमोवा को हरा दिया है और चौथे राउंड में अपनी जगह पक्की कर ली है। पेरिस- फ्रेंच ओपन 2026 में उलटफेर का दौर जारी है। फ्रांस की डायने पैरी ने शनिवार को छठी वरीयता प्राप्त खिलाड़ी अमांडा अनिसिमोवा को तीन सेट तक चले मुकाबले में हराकर पहली बार किसी ग्रैंड स्लैम के चौथे राउंड में जगह बनाई। इस साल के फ्रेंच ओपन से पहले पैरी पांच बार ग्रैंड स्लैम के तीसरे राउंड में पहुंची थीं, लेकिन कभी भी अंतिम-16 में जगह नहीं बना पाई थीं। कोर्ट फिलिप-शैट्रिए पर पेरिस की शोरगुल भरी भीड़ के सामने खेलते हुए पैरी ने अमांडा अनिसिमोवा को 2 घंटे 44 मिनट तक चले तीन सेट के मुकाबले में 6-3, 4-6, 7-6 से हराया।
तीसरे सेट में दोनों खिलाड़ियों ने कई बार अपने सर्विस गेम बचाए। इसके बाद पैरी ने अनिसिमोवा की सर्विस तोड़कर 4-3 की बढ़त बना ली, लेकिन अनिसिमोवा ने तुरंत वापसी करते हुए ब्रेक हासिल कर लिया। इसके बाद भी मुकाबला बराबरी पर चलता रहा और आखिरकार नतीजा टाईब्रेक से तय हुआ। टाईब्रेक में पैरी ने शानदार खेल दिखाया और 10-3 से जीत दर्ज कर मैच अपने नाम कर लिया।

मैच के बाद पैरी ने क्या कहा?

पैरी ने अपनी जीत के बाद पत्रकारों से कहा, मुझे लगता है कि मैं हर मैच जीत सकती हूं और तीन सेट तक मुकाबला कर सकती हूं। मैं शारीरिक तौर पर अच्छा महसूस कर रही थी। मुझे लगा कि मेरा खेल उन्हें कुछ हद तक परेशान कर रहा है, इसलिए मैं इसे अपने दिमाग में बनाए रखने की कोशिश कर रही थी ताकि आखिर में मैच जीत सकूं।यह जीत पैरी के करियर में टॉप-10 रैंकिंग वाली खिलाड़ियों के खिलाफ महज दूसरी जीत थी। इसके साथ ही टॉप-10 खिलाड़ियों के खिलाफ लगातार सात मुकाबलों से चली आ रही उनकी हार का सिलसिला भी खत्म हो गया। फ्रेंच ओपन के मेन ड्रॉ में यह उनकी आठवीं जीत थी, जो किसी भी ग्रैंड स्लैम टूर्नामेंट में उनका अब तक का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन है। पैरी, जो महिला एकल ड्रॉ में बची हुई फ्रांस की आखिरी खिलाड़ी हैं, ने हाल ही में अपने खेल में टू-हैंडेड बैकहैंड शॉट शामिल किया है। उनका कहना है कि वह अभी भी इस नए शॉट के साथ पूरी तरह सहज होने और इसकी आदत डालने की कोशिश कर रही हैं। उन्होंने आगे कहा, मैंने सीजन शुरू होने से पहले डबल-हैंडेड बैकहैंड का इस्तेमाल फिर से शुरू किया था। इसका उपयोग मेरे प्रतिद्वंद्वी खिलाड़ी की सर्विस, कोर्ट की परिस्थितियों और खिलाड़ी की शैली पर निर्भर करता है। यहां यह थोड़ा मुश्किल है क्योंकि गेंद काफी ऊंची उछाल लेती है, इसलिए सही दूरी तय करना कठिन होता है। यह इस बात पर भी निर्भर करता है कि मैं उस दिन कैसा महसूस कर रही हूं। हर दिन एक जैसा नहीं होता, क्योंकि यह अभी मेरे लिए पूरी तरह स्थापित शॉट नहीं है। मुझे खिलाड़ी और परिस्थितियों के हिसाब से खुद को ढालना पड़ता है।

झारखंड टी20 लीग के ऑक्शन में मुंबई इंडियंस का खिलाड़ी सबसे महंगा

10 जून से शुरू हो रहे झारखंड प्रीमियर लीग के लिए खिलाड़ियों की बोली लगी... इसमें रॉबिन मिंज सबसे महंगे खिलाड़ी रहे...उन्हें ईशान किशन से भी ज्यादा पैसे मिले...

नई दिल्ली,31 मई 2026। झारखंड टी20 लीग की शुरुआत 10 जून से हो रही है। इस लीग में 6 टीमें हिस्सा लेंगी। इसके लिए खिलाड़ियों का ऑक्शन आयोजित किया गया। इसमें मुंबई इंडियंस के लिए आईपीएल में खेलने वाले रॉबिन मिंज सबसे महंगे खिलाड़ी रहे। बाएं हाथ के मिंज को झारखंड का क्रिस गेल कहा जाता है। आईपीएल में मिंज कुछ खास कमाल नहीं कर पाए। कोयलांचल सुपर किंग्स ने मिंज पर 15 लाख 25 हजार की बोली लगाई। टी20 विश्व कप विजेता टीम का हिस्सा रहे ईशान किशन का नाम भी ऑक्शन में था। संथल स्ट्राइकर्स ने उन्हें खरीदा। ईशान को 14 लाख 70 हजार रुपये मिले। ईशान किशन के टूर्नामेंट में खेलने पर स्थिति साफ नहीं है। उन्हें अफगानिस्तान के खिलाफ वनडे सीरीज के लिए टीम इंडिया में चुना गया है। 13 जून से 20 जून के बीच तीन वनडे मैच खेल जाएंगे।

इस प्रकार हैं सभी टीमें

छोटा नागपुर रॉयल्स : विराट सिंह, मोहम्मद नाजिम सिद्दीकी,विकाश सिंह, कुमार कुशाग्र,सुप्रियो चक्रवर्ती, पंकज यादव,मोहित कुमार,दीपांशु रावत,सोनू कुमार सिंह,वरुण कुमार सिंह,ऋ त्विक पाठक,दुर्गेश कुमार, चंदन मुखी,आर्यमान लाला,श्रेष्ठ सागर, ह्रुल रजक,अविनाश कुमार, हिमांशु द्विवेदी।

धनबाद डायमंड्स : सुशांत मिश्रा, पंकज कुमार,बाल कृष्ण,अतुल सिंह सुरवार, ाम रोशन सरन,बिसेश दत्ता, विकाश कुमार विशाल,मो. शमशाद, विवेकानंद तिवारी,आर्यमन सेन, आदित्य सिंह,तनिष चौबे,प्रभात कुमार यादव,मीत जैन,हिमांशु रंजन कुमार, अभिषेक यादव,गौरव सिंह,सिद्धार्थ सिन्हा।

जमशेदपुर स्टीलर्स : मोहम्मद कौनैन कुरैशी, साहिल राज,कुमार देवब्रत,अनुकूल रॉय,प्रतीक रंजन, नितिन कुमार पांडे,रवि शर्मा,हर्ष राणा, आदर्श गिरी,कुमार करण,समीर शर्मा, सिद्धांत रघुवंशी,अमन कुमार,रितिक अनंत,मणिकांत मिश्रा,अनुराग सिंह सेंगर,प्रांजल कुमार,जसराज सिंह।

कोयलांचल सुपर किंग्स : रॉबिन मिंज,शुभ शर्मा,उत्कर्ष सिंह,अमित कुमार,हर्ष राज,शरणदीप सिंह,योगेश भास्कर,सत्यम सिंह,राहुल प्रसाद,सेंटू कुमार यादव,आदित्य झा,गुंजन यादव, लक्ष्य,अभिनव शरण,जुनैद शरफ, सनी सचिन तिवारी,संजीव चतुर्वेदी।

रांची टाइटंस : शिखर मोहन,राजनदीप सिंह, श्रेष्ठ, जतिन पांडे, सौरभ शेखर,आयुष भारद्वाज, प्रिंस मुर्मू,आर्यन हुडा,यश भगत, ईशान ओम,कुमार अंकित,सचिन यादव,ओम सिंह,सत्या सेतु,प्रेम कुमार चौरसिया,मुकेश कुमार, युवराज सिंह, युवराज कुमार।

संथाल स्ट्राइकर : ईशान किशन, अरविंद कुमार,सुमित कुमार, अनमोल राज,मनीषी, विवेक कुमार, रेयान सपकोटा, रवि यादव,प्रत्यूष कुमार,विकास कुमार,कुमार सूरज, रौनक कुमार,ओजस वर्धन, रितेश पटेल, विभोर पांडे,सादाब हुसैन, संजीत शर्मा,आशीष कुमार।

शुभमन गिल ने रचा इतिहास,यह कारनामा करने वाले बने पहले कप्तान

न्यू चंडीगढ़ ,31 मई 2026। आईपीएल 2026 के दूसरे क्वालीफायर मुकाबले में गुजरात टाइटंस (जीटी) ने राजस्थान रॉयल्स (आरआर) को 7 विकेट से हराया। जीटी की इस जीत के नायक कप्तान शुभमन गिल रहे। गिल ने शानदार बल्लेबाजी करते हुए शतकीय पारी खेली। अपनी इस पारी के दौरान गिल ने वह कारनामा किया, जो आईपीएल के इतिहास में आजतक कोई भी कप्तान नहीं कर सका है।शुभमन गिल ने 53 गेंदों की अपनी पारी में 104 रन बनाए। उन्होंने अपनी इस पारी में 15 चौके और 3 छक्के लगाए। गिल आईपीएल के प्लेऑफ मुकाबले में शतक लगाने वाले पहले कप्तान बन गए हैं। आरआर से मिले 215 रनों के लक्ष्य का पीछा करने उतरी जीटी को गिल ने साई सुदर्शन के साथ मिलकर जबरदस्त शुरुआत दी और पहले विकेट के लिए 12.5 ओवर में 167 रन जोड़े। सुदर्शन ने 32 गेंदों का सामना करते हुए 8 चौके और एक छक्के की मदद से 58 रनों की दमदार पारी खेली। वॉशिंगटन सुंदर ने 16 रनों का योगदान दिया, जबकि राहुल तेवतिया 9 गेंदों में 17 रन बनाकर नाबाद रहे। जीटी ने लक्ष्य को 18.4 ओवर में 3 विकेट खोकर हासिल किया।

छत्तीसगढ़ खाद्य विभाग में 'गेट वन गेट फ्री' योजना?

चपरासी से अधिकारी तक प्रमोशन का हाई वोल्टेज खेल!

तीन बार पदोन्नति में लगभग 15 को फायदा,17 और लाइन में,जून के पहले सप्ताह में सूची आने की संभावना

जहां फूट सेफ्टी ऑफिसर का पद होना था बेसिक भर्ती,वहां अब चपरासी से बन रहे अधिकारी! नियम केंद्र के,सिस्टम छत्तीसगढ़ वाला

छत्तीसगढ़ खाद्य विभाग का नया मॉडल,चपरासी से कंट्रोलर तक...बस प्रमोशन लेते जाइए!

फूट सेफ्टी ऑफिसर का बेसिक पद खत्म? विभाग में चल रहा 'गेट वन गेट फ्री' प्रमोशन ऑफर!

खाद्य विभाग का नया ऑफर,चपरासी भर्ती होइए, अधिकारी बन जाइए!

तकनीकी डिग्री वाले लाइन में, प्रमोशन वाले कुर्सी पर!

मिलावटी तेल पकड़ने वाला विभाग खुद 'मिलावटी पात्रता' में फंसा

खाद्य विभाग में अब 'गेट वन गेट फ्री' प्रमोशन योजना सुपरहिट!

राजपत्र पढ़िए मत...यहां नियम फाइलों में बदल जाते हैं!

खाद्य विभाग में प्रमोशन का चमत्कार, 12वीं पास से तकनीकी अधिकारी तक का सफर

आज चपरासी, कल कंट्रोलर...बस व्यवस्था मजबूत होनी चाहिए!

तकनीकी पद पर गैर-तकनीकी प्रमोशन? खाद्य विभाग की व्यवस्था सवालों में

-न्यूज डेस्क-

रायपुर,31 मई 2026 (घटती-घटना)। छत्तीसगढ़ का खाद्य एवं औषधि प्रशासन विभाग इन दिनों ऐसी वजहों से चर्चा में है,जिन्हें सुनकर सरकारी नियम भी शायद शर्म से फाइलों में छिप जाना चाहें, यह विभाग अब खाद्य सुरक्षा से ज्यादा पदोन्नति सुरक्षा के लिए जाना जाने लगा है, जिस विभाग को जनता के खाने की गुणवत्ता जांचनी थी, वहां अब खुद नियुक्तियों और योग्यताओं की गुणवत्ता सवालों में घिर गई है। सूत्र बताते हैं कि विभाग में जो कुछ चल रहा है,वैसा शायद ही देश के किसी दूसरे राज्य में देखने को मिले, क्योंकि यहां नियम किताबों में कुछ और हैं, लेकिन विभागीय व्यवस्था में कुछ और, हालत यह हो गई है कि अब विभाग के गलियारों में व्यंग्य में कहा जा रहा है छत्तीसगढ़ खाद्य विभाग में नौकरी नहीं, मल्टीलेयर प्रमोशन स्कीम चल रही है, और यह व्यंग्य यूं ही पैदा नहीं हुआ।

12 वीं पास 1900 ग्रेड पे के कर्मचारी नमूना सहायक एवं चपरासी को एग्जीक्यूटिव अधिकारी बना सकती है?

धारा 91 केंद्र सरकार को प्रशासनिक मामलों एवं अन्य मं नियम रूल बनाने की शक्ति देती है जिसके तहत् केंद्र सरकार द्वारा फूड सेफ्टी ऑफिसर,एवं अभिहित अधिकारी के क्वालिफिकेशन योग्यता निर्धारित की गई है, तथा अभिहित अधिकारी पद के प्रमोशन संबंधित पात्रता के नियम भी निर्धारित किए गए तथा राज्य सरकार केवल इस प्रमोशन के प्रतिशत को तय कर सकता है परंतु पात्रता को नहीं, उल्लेखनीय ये है कि फूड सेफ्टी ऑफिसर पोस्ट को प्रमोशन से भरे जाने संबंधित कोई नियम नहीं बनाया हैं, तो क्या राज्य सरकार केंद्र सरकार के रूल नियम बनाने की शक्ति को ओवरराइड कर तथा केंद्र सरकार के बिना अनुमोदन के एफएसओ पद को प्रमोशन से भरे जाने एवं पात्रता के नियम बना सकती है? जबकि केंद्र सरकार ने एफएसओ की भर्ती एवं योग्यता का स्पष्ट नियम बनाए है, परंतु गैजेट नोटिफिकेशन भारत सरकार 2022 के अनुसार जिला अधिकारी या अभिहित अधिकारी के प्रमोशन रूल के तर्ज पर एफएसओ को प्रमोशन से भरे जाने का केंद्र सरकार का न ही कोई नियम है ना ही कोई निर्देश न ही कोई सर्कुलर, तो क्या राज्य सरकार केंद्रीय अधिनियम को ओवरराइड कर एफएसओ पोस्ट को अधिनियम से बाहर के किसी भी 12 वीं पास 1900 ग्रेड पे के कर्मचारी नमूना सहायक एवं चपरासी को एग्जीक्यूटिव अधिकारी बना सकती है?

छत्तीसगढ़ मॉडल में 'गेट वन गेट फ्री' प्रमोशन योजना-खाद्य विभाग में प्रमोशन का जो नया मॉडल चर्चा में है, उसे कर्मचारी अब 'गेट वन गेट फ्री योजना' कहने लगे हैं, क्यों? क्योंकि यहां प्रमोशन भी मिल रहा है, पद भी बढ़ रहा है और पदस्थापना भी वहीं बनी रहती है, यानी एक लाभ के साथ दूसरा लाभ मुफ्त, एक कर्मचारी ने हंसते हुए कहा यह सरकारी विभाग कम, सुपरमार्केट ऑफर ज्यादा लग रहा है।

तीन बार पदोन्नति में लगभग 15 को फायदा,17 और लाइन में, जून के पहले सप्ताह में सूची आने की संभावना-सूत्रों के अनुसार नमूना सहायक पद से अब तक तीन चरणों में लगभग 15 लोगों को पदोन्नति दी जा चुकी है, और अब हालात ऐसे हैं कि विभाग में प्रमोशन की नई सूची आने की चर्चा तेज हो गई है, बताया जा रहा है कि हाल ही में भर्ती और प्रमोशन प्रतिशत 10% से बढ़ाकर 25% कर दिया गया, अब 17 और लोगों को पदोन्नति देने की तैयारी की चर्चा है और जून के पहले सप्ताह में सूची आने की संभावना बताई जा रही है,अब सवाल उठ रहा है क्या फूड सेफ्टी ऑफिसर का मूल तकनीकी पद धीरे-धीरे प्रमोशनल पद में बदलता जा रहा है?

क्या पैसे लेकर तय हो रही पात्रता?-विभागीय हलकों में सबसे गंभीर चर्चा कथित लेनदेन को लेकर है। सूत्रों का दावा है कि कई मामलों में मोटी रकम के आधार पर फाइलों को आगे बढ़ाया गया, हालांकि इसकी आधिकारिक पुष्टि नहीं हुई है, लेकिन विभागीय कर्मचारी खुले में भले न बोलें, बंद कमरों में चर्चा खूब हो रही है, एक कर्मचारी ने तंज कसते हुए कहा जहां नियम अटकते हैं, वहां नोटशीट और नोट दोनों काम आते हैं।

क्या छत्तीसगढ़ में केंद्र सरकार के नियम खत्म हो जाते हैं?- खाद्य सुरक्षा और मानक अधिनियम, 2006 की धारा 94 राज्य सरकार को भर्ती नियम बनाने का अधिकार देती है,लेकिन कानूनी मानदंडों का कहना है कि राज्य सरकार केंद्र द्वारा तय तकनीकी पात्रता खत्म नहीं कर सकती, यानी प्रमोशन प्रतिशत बदल सकता है, भर्ती प्रक्रिया बदल सकती है, लेकिन एफएसओ की मूल तकनीकी प्रकृति नहीं, बिलकुल सबसे बड़ा विवाद खड़ा हो रहा है, क्योंकि यदि केंद्र सरकार कहती है कि खाद्य सुरक्षा अधिकारी तकनीकी पद है, तो फिर वह प्रमोशन की मानदंडों से सामान्य प्रशासनिक पद जैसा कैसे बन गया?

अब विभाग में चल रहा सबसे बड़ा व्यंग्य- विभागीय गलियारों में इन दिनों कई चर्चाएं वायरल हैं, कोई कहता है यहां फूड सेफ्टी नहीं, प्रमोशन सेफ्टी चल रही है, दूसरा बता रहा है एफएसओ बनने के लिए अब फूड टेक्नोलॉजी नहीं, फाइल टेक्नोलॉजी चाहिए, तीसरा सबसे तीखा व्यंग्य करता है आज चपरासी है, कल कंट्रोलर भी बन सकता है... बस व्यवस्था मजबूत होनी चाहिए।

जहां डायरेक्ट भर्ती होनी थी,वहां प्रमोशन की सीढ़ियां लग गई

फूड सेफ्टी ऑफिसर यानी एफएसओ का पद केंद्र सरकार के अनुसार टेक्निकल और सलाहकार वाला मूल पद माना जाता है, फूड सेफ्टी एंड स्टैंडर्ड्स एक्ट, 2006 तथा एफएसएसएआई रूल्स के अनुसार इस पद के लिए फूड टेक्नोलॉजी, बायोटेक्नोलॉजी, केमिस्ट्री, माइक्रोबायोलॉजी, एग्रीकल्चर साइंस जैसे सब्जेक्ट्स में टेक्निकल डिग्री जरूरी है, यानी यह पद ऐसा माना गया जहां सीधे योग्य तकनीकी अभ्यर्थियों की भर्ती होनी चाहिए, लेकिन छत्तीसगढ़ में कथित रूप से इसकी पूरी आत्मा ही बदल दी गई, यहां अब व्यवस्था कुछ ऐसी बताई जा रही है की चपरासी से नमूना सहायक से खाद्य सुरक्षा अधिकारी यानी जिस पद तक पहुंचने के लिए देशभर में छात्र सालों तक तकनीकी पढ़ाई करते हैं, वही पद यहां कथित रूप से प्रमोशन की सीढ़ियों से हासिल किया जा रहा है।

12वीं पास से टेक्निकल अफसर विभाग में सबसे बड़ा सवाल

सूत्रों के अनुसार मॉडल सहायक जैसे पदों पर 12वीं पास कर्मचारी भर्ती हुए, फिर समय के साथ वे प्रमोशन करने वाले फूड सेफ्टी ऑफिसर बनने लगे, अब विभाग के भीतर सबसे बड़ा सवाल यही गूंज रहा है, 12वीं पास व्यक्ति अचानक बायोटेक्नोलॉजी और फूड टेक्नोलॉजी का विशेषज्ञ कैसे बन गया? यदि कोई कर्मचारी नौकरी करते हुए टेक्निकल डिग्री ले भी आता है, तो सवाल यह है कि वह रेगुलर ड्यूटी के बीच रेगुलर टेक्निकल पढ़ाई कब और कैसे कर रहा था? विभागीय कर्मचारी अब व्यंग्य में कहते हैं यहाँ डिग्री नहीं, व्यवस्था रेगुलर है।

मध्यप्रदेश ने खत्म किया, छत्तीसगढ़ ने चमका दिया

सबसे मजेदार और चौंकाने वाली बात यह है कि जिस नमूना सहायक पद को मध्यप्रदेश जैसे राज्यों में समाप्त कर दिया गया, वही पद छत्तीसगढ़ में अब अधिकारी बनने का एक्सप्रेस रास्ता बन गया है, दूसरे राज्यों ने तकनीकी गुणवत्ता मजबूत करने के लिए ढांचा बदला, लेकिन छत्तीसगढ़ में कथित रूप से ऐसा सिस्टम तैयार हो गया जिसमें निचले पदों से लोग तकनीकी अधिकारियों की कुर्सियों तक पहुंच रहे हैं, अब विभाग में मजाक चलता है यहां मेहनत नहीं, सीढ़ी सही पकड़ो।

स्थापना शाखा बनी सबसे बड़ी चर्चा का केंद्र

इस पूरे खेल में सबसे ज्यादा सवाल स्थापना शाखा पर उठ रहे हैं, क्योंकि वही शाखा पात्रता जांचती है, फाइल तैयार करती है, प्रमोशन सूची बनाती है, आदेश जारी करती है, ऐसे में यदि अपात्र या विवादित पात्रता वाले लोग अधिकारी बन रहे हैं, तो सवाल सीधे स्थापना शाखा पर खड़ा होता है, विभाग के अंदर अब यह लाइन खूब सुनाई दे रही है राजपत्र दिल्ली में बनता है, असली नियम स्थापना शाखा में।

राजपत्र बनाम व्यवस्था की लड़ाई

केंद्र सरकार के नियम 2.1.3 में फ़ूड सेफ्टी ऑफिसर की योग्यता साफ़ लिखी गई है, लेकिन विभागीय सूत्रों का दावा है कि यहां नियमों की अलग व्याख्या कर व्यवस्था चलाई जा रही है, कहीं जनरल बीएससी को टेक्निकल डिग्री मान लिया गया, कहीं डिस्टेंस एजुकेशन की विवादित डिग्रियां स्वीकार हो गईं, तो कहीं ऐसे सब्जेक्ट्स को भी योग्यता दे दी गई, जिनसे फ़ूड सेफ्टी से सीधा संबंध ही नहीं था, अब कर्मचारी विशेषज्ञों में कहते हैं यहां योग्यता नहीं,योग्यता की व्याख्या बताती है।

जनता के स्वास्थ्य पर कितना बड़ा खतरा?

विडंबना देखिए जिस विभाग को जनता को मिलावटी खाद्य पदार्थों से बचाना था, वही विभाग अब 'मिलावटी पात्रता' के आरोपों में घिर गया है, यदि तकनीकी योग्यता की जगह प्रमोशन और नेटवर्क हावी होगा, तो फिर जनता कैसे भरोसा करेगी कि उसके खाने की जांच सही विशेषज्ञ कर रहे हैं? फूड सेफ्टी ऑफिसर कोई टेबल-कुर्सी वाला साधारण पद नहीं होता, यही अधिकारी खाद्य सैंपल लेते हैं, जांच करते हैं, लाइसेंस निरीक्षण करते हैं, खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करते हैं, ऐसे पदों पर यदि विवादित पात्रता वाले लोग बैठेंगे, तो पूरी व्यवस्था की विश्वसनीयता पर सवाल उठना स्वाभाविक है।

सबसे बड़ा सवाल : जिम्मेदार सो रहे हैं या सब जानते हैं?

अब सवाल यह नहीं कि विभाग में क्या चल रहा है, सवाल यह है कि क्या जिम्मेदार अधिकारियों को इसकी जानकारी नहीं? क्या उन्होंने नियम पढ़े नहीं? या फिर सब कुछ जानते हुए भी आंखें बंद रखी गईं? क्योंकि इतने वर्षों तक यदि यही प्रक्रिया चलती रही और किसी ने सवाल नहीं उठाया, तो संदेह स्वाभाविक है।

अंत में सबसे बड़ा व्यंग्य

छत्तीसगढ़ खाद्य विभाग में इन दिनों एक लाइन सबसे ज्यादा गूंज रही है यहां नियम नहीं, व्यवस्था काम करती है, और दूसरी लाइन उससे भी ज्यादा तीखी है खाद्य सुरक्षा अधिकारी का बेसिक पद खत्म हो चुका है... अब असली बेसिक पद चपरासी है।

छत्तीसगढ़ के 4 लोगों की हिमाचल हादसे में मौत,500 मीटर गहरी खाई में गिरी कार

दुर्ग-भिलाई,31मई 2026। हिमाचल प्रदेश के चंबा जिले में घूमने गए बेंगलुरु के 2 परिवारों की खुशियां सड़क हादसे में मातम में बदल गईं। बैरागढ़-साच पास-किलाड़ मार्ग पर एक अर्टिगा कार करीब 500 मीटर गहरी खाई में गिर गई। हादसे में 2 बच्चों समेत 8 लोगों की मौत हो गई। मृतकों में छत्तीसगढ़ के भिलाई के एक परिवार के 4 लोग शामिल है। भिलाई में मृतकों के परिवार से बातचीत करने की कोशिश की गई, लेकिन उन्होंने बात करने से इनकार कर दिया। दंपती अपने बच्चों के साथ बेंगलुरु में रहते थे, वहीं जॉब कर रहे थे। यह सभी पर्यटक बेंगलुरु से हिमाचल प्रदेश घूमने आए थे और बर्फबारी का आनंद लेने साच पास जा रहे थे। जानकारी के मुताबिक, हादसा चंबा जिले के चुराह उपमंडल के कालावन क्षेत्र के पास हुआ है। दोनों परिवारों ने डलहौजी से एक टैक्सी बुक की थी और साच पास इलाके में बर्फ और प्राकृतिक सौंदर्य देखने के लिए रवाना हुए थे। देर रात कार अनियंत्रित होकर सड़क से नीचे गहरी खाई में जा गिरी। खाई की गहराई ज्यादा होने के कारण कार पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई और उसमें सवार किसी भी व्यक्ति को बचने का मौका नहीं मिला। पुलिस के अनुसार लोगों की पहचान ड्राइवर विश्वास सल्होता निवासी बस्ती ज्वाला, बनीखेत (चंबा), अरविंद चंद्राकर निवासी कडुगोड़ी, बेंगलुरु, उनकी पत्नी प्राची, बेटे दर्श और अक्षद, पी.जी. कार्तिघायन निवासी व्हाइट फील्ड, कर्नाटक, उनकी पत्नी मनीमाला और बेटे नंदन के रूप में हुई है।

मन की बात में गूंजा छत्तीसगढ़ का गौरव...मुख्यमंत्री साय ने कहा... यह प्रदेश की प्रतिभा और विरासत को राष्ट्रीय सम्मान मिलने का क्षण

रायपुर,31 मई 2026। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने आज राजधानी रायपुर स्थित अपने निवास कार्यालय में जनप्रतिनिधियों, गणमान्य नागरिकों और आमजनों के साथ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के लोकप्रिय रेडियो कार्यक्रम 'मन की बात' की 134वीं कड़ी का श्रवण किया। कार्यक्रम के उपरांत मुख्यमंत्री साय ने कहा कि आज का 'मन की बात' छत्तीसगढ़ के लिए अत्यंत गर्व, प्रेरणा और आत्मविश्वास का क्षण बन गया, क्योंकि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने राष्ट्रीय मंच से प्रदेश की प्रतिभा और सांस्कृतिक धरोहर दोनों का उल्लेख कर पूरे छत्तीसगढ़ का सम्मान बढ़ाया है। मुख्यमंत्री साय ने कहा कि जब देश का सर्वोच्च नेतृत्व किसी राज्य की उपलब्धियों और प्रतिभाओं का उल्लेख करता है, तो वह केवल व्यक्तियों का सम्मान नहीं होता, बल्कि करोड़ों प्रदेशवासियों की आकांक्षाओं, परिश्रम और पहचान को राष्ट्रीय प्रतिष्ठा मिलती है। मुख्यमंत्री साय ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि 'मन की बात' आज देश के सकारात्मक प्रयासों, नवाचारों, प्रतिभाओं और प्रेरक जीवन यात्राओं को राष्ट्रीय पहचान देने वाला एक सशक्त मंच बन चुका है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आज जशपुर जिले के छोटे से गांव घुइटांगर से निकलकर राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान बनाने वाले युवा धावक अनिमेष कुजूर की उपलब्धि का उल्लेख कर प्रदेश के युवाओं को यह संदेश दिया है कि सीमित संसाधन किसी प्रतिभा की उड़ान को रोक नहीं सकते, यदि उसके भीतर लक्ष्य के प्रति समर्पण और मेहनत का जुनून हो। मुख्यमंत्री साय ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 'मन की बात' में अनिमेष कुजूर और गुरिंदरवीर सिंह की उपलब्धि को जिस आत्मीयता और प्रेरक शैली में प्रस्तुत किया, वह देश के युवाओं में नई ऊर्जा भरने वाला है। प्रधानमंत्री ने कार्यक्रम के दौरान दोनों खिलाड़ियों से फोन पर संवाद करते हुए उल्लेख किया कि पुरुषों की 100 मीटर दौड़ में महज दो दिनों के भीतर राष्ट्रीय रिकॉर्ड तीन बार टूटा और इसे उन्होंने खेलों में सकारात्मक प्रतिस्पर्धा का अद्भुत उदाहरण बताया। मुख्यमंत्री साय ने कहा कि यह केवल रिकॉर्ड टूटने की कहानी नहीं, बल्कि भारतीय युवाओं के आत्मविश्वास, अनुशासन और विश्वस्तरीय सोच की कहानी है। मुख्यमंत्री साय ने कहा कि छत्तीसगढ़ के युवा धावक अनिमेष कुजूर ने 100 मीटर दौड़ मात्र 10.15 सेकंड में पूरी कर नया रिकॉर्ड स्थापित किया है।

काम नहीं तो वेतन नहीं...हाई कोर्ट ने इन कर्मचारियों के लिए सुनाया अहम फैसला

रायपुर,31 मई 2026। छत्तीसगढ़ हाईकोर्ट ने सरकारी कर्मचारियों की रुकी हुई सैलरी को लेकर एक ऐसा फैसला सुनाया है। चीफ जस्टिस रमेश सिन्हा और जस्टिस रवीन्द्र कुमार अग्रवाल की डबल बेंच ने साफ कह दिया है कि अगर किसी कर्मचारी को क्रिमिनल केस की वजह से नौकरी से निकाला गया था, और बाद में वह कोर्ट से बरी भी हो जाता है, तो भी वह घर बैठे समय का पूरा पैसा नहीं मांग सकता। यह पूरा मामला विद्युत मंडल के एक पूर्व सुपरवाइजर से जुड़ा है। वह सहायक श्रेणी-1 के पद पर भर्ती हुए थे और तरक्की पाकर सुपरवाइजर बने। इसी बीच उनके खिलाफ भ्रष्टाचार का केस दर्ज हो गया। स्पेशल कोर्ट ने उन्हें दोषी मान लिया, जिसके तुरंत बाद विभाग ने उन्हें नौकरी से बर्खास्त कर दिया था। इसके बाद कहानी में नया मोड़ आया। कर्मचारी ने खुद को बेकसूर साबित करने के लिए हाईकोर्ट में अपील की। यह कानूनी लड़ाई इतनी लंबी खिंची कि इस दौरान उनकी रिटायरमेंट की उम्र भी पार हो गई। आखिरकार हाईकोर्ट ने उन्हें आरोपों से बरी तो कर दिया, लेकिन तब तक वह रिटायर हो चुके थे। बरी होने के बाद बिजली विभाग ने उनका बर्खास्तगी का आदेश तो वापस ले लिया, लेकिन नौकरी से बाहर रहने के दौरान का पूरा पिछला वेतन और एरियर देने से साफ मना कर दिया।

प्रकाशक,मुद्रक,स्वामी अविनाश कुमार सिंह के द्वारा सांई ऑफ्सेट प्रिंटर्स,नमनाकला,संत हरकेवल विद्यापीठ के पास,अम्बिकापुर से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक-अविनाश कुमार सिंह* (पी.आर.बी.कानून के अनुसार संपूर्ण संपादकीय दायित्व के लिए जिम्मेदार)
RNI Reg.No.CHHHIN/2004/15050,डॉक रजिस्टर्ड क्र.:-13/सरगुजा/डीएन/2026-2028-मो. 94062-23001,98265-32611,Email:ghatatighatana11@ gmail.com,Website:www.ghatatighatana.com, (सभी विवादों का न्याय क्षेत्र अम्बिकापुर न्यायालय मान्य होगा)